THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

मध्यप्रान्त, मध्यभारत और राजपूताना के प्राचीन जैन स्मारक।

संग्रहकर्ता—
श्री० जैनधर्मभूषण धर्मदिवाकर ब्र० शीतलप्रसादजी,
अनेक ग्रन्थोंके रचयिता, टीकाकार व जैनमित्र तथा
वीरके ऑ० सम्पादक, सूरत।

प्रकाशक—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया—सूरत।

"जैनजगत" के प्रथमवर्षके ग्राहकोंको—
श्रीमान् साहू सलेखचन्दजी जगमन्दरदासजी
(रायबहादुर) रईस—नजीबाबादकी ओरसे भेंट।

सन् १९२६ { प्रथमावृत्ति। प्रति १०००

मूल्य—दस आने मात्र।

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया ।

मालिक, दिगम्बर जैन पुस्तकालय.

चन्दावाड़ी-सूरत ।

मुद्रक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,

'जैनविजय' प्रि० प्रेस, खपाटिया चकला,-सूरत ।

उपोद्घात।

इस पुस्तकके लिखनेका उद्यम सेठ वैजनाथ सरावगी मालिक फर्म सेठ जोखीराम मूंगराज नं० १७३ हरिशनरोड कलकत्ताकी प्रेरणासे हुआ है। इसके पहले बंगाल, विहार, उड़ीसा, संयुक्तप्रांत व बम्बई प्रांतके तीन स्मारक प्रगट हो चुके हैं। इस पुस्तकमें मध्यप्रदेश, मध्यभारत और राजपूतानाके जैन स्मारक जो कुछ सर्कारी रिपोर्टसे मालूम हुए हैं उनका संग्रह कियागया है। मध्य-प्रदेशके हरएक जिलेका वर्णन जाननेके लिये पुस्तकोंकी सहायता नागपुर म्यूनियमके नायब क्यूरेटर मि० इ० ए० डिरोबू एफ० झेड० एस० तथा मि० एम० ए० सुबूर एम० एन० एस० क्वा-इन एक्सपर्टने दी जिनके हम अतिशय आभारी हैं। मध्यभारत और राजपूतानाके सम्बन्धमें अनेक पुस्तकोंके देखनेकी सहायता रायबहादुर पंडित गौरीशंकर ओझा क्यूरेटर म्यूजियम अजमेरने दी जिनके भी हम अति आभारी हैं। Imperial Gazetteer इम्पीरियल गजेटियर आदि पुस्तकोंकी सहायता व एपिग्रेफिका आदि पुस्तकोंके देखनेमें मदद इम्पीरियल लाइब्रेरी कलकत्ता तथा बम्बई रायल एसियाटिक सोसायटी लाइब्रेरी बम्बईसे प्राप्त हुई है जिनके भी हम अति कृतज्ञ हैं।

इस पुस्तकके पढ़नेसे ज्ञात होगा कि जैनियोंके मंदिर व उनमें स्थापित बड़ी २ मूर्तियें उन स्थानोंमें जैनियोंके न रहनेसे अब किस अविनयकी दशामें हैं।

हमें विदित होता है कि इन तीनों जिलोंमें सर्कारद्वारा बहुत कम खोज हुई है। यदि विशेष खोज की जावे तो जैनियोंके और भी स्मारक मिल सक्ते हैं। जो कुछ मिले हैं उनसे यह तो स्पष्ट है कि जैनियोंका प्रभुत्व बहुत अधिक व्यापक था व अनेक राजाओंने जैनधर्मकी भक्तिसे अपने आत्माको पवित्र किया था। जैनियोंका कर्तव्य है कि अपने स्मारकोंको जानकर उनकी रक्षाका उपाय करें। इस पुस्तकके प्रकाश होनेमें द्रव्यकी खास सहायता रायबहादुर साहू जगमंधरदासजी रईस नजीबाबादने दी है इसके लिये हम उनके आभारी हैं।

सजोत
१०—६—२६ } जैनधर्मका प्रेमी—ब्र० सीतलप्रसाद।

भूमिका।

इस पुस्तकमें ब्रह्मचारीजीने मध्यप्रदेश, मध्यभारत और राजपूताना इन तीन प्रान्तोंके जैन स्मारकोंका परिचय दिया है।

मध्यप्रदेश।

मध्यप्रदेश दो भागोंमें बटा हुआ है:—(१) मध्यप्रान्त खास जिसमें १८ जिले हैं और (२) बरार जिसमें चार जिले हैं। मध्यप्रांत खासको गोंडवाना भी कहते हैं कारणकि एक तो यहां गोंडोंकी संख्या बहुत है, दूसरे मुसल्मानी समयके लगभग यहां अनेक गोंड घरानोंका राज्य रहा है। यह प्रान्त संस्कृतिमें बहुत पिछड़ा हुआ गिना जाता है, और लोगोंका ख्याल है कि इस प्रान्तका प्राचीन इतिहास कुछ महत्वपूर्ण नहीं रहा, पर यह लोगोंकी भारी भूल है। यथार्थमें भारतके प्राचीन इतिहासमें इस प्रान्तका बहुत ऊंचा स्थान है। प्राचीन ग्रंथों और शिलालेखोंसे सिद्ध होता है कि यह प्रान्त कोशल देशका दक्षिणी भाग था। इसीसे यह दक्षिणकोशल कहा गया है। इसके ऊपर उत्तरकोशल था। दक्षिणकोशलका विस्तार उत्तरकोशलसे अधिक होनेके कारण उसे महाकोशल भी कहते थे। कलचुरि नरेशोंके शिलालेखोंमें इसका यही नाम पाया जाता है। इस प्रान्तका पौराणिक नाम दण्डकारण्य है जो विन्ध्य और सतपुड़ाके रमणीक वनस्थलोंसे व्याप्त है। रामायण—कथा—पुरुष रामचन्द्रने अपने प्रवासके चौदह वर्ष व्यतीत करनेके लिये इसी भूभागको चुना था। उस समय यहां अनेक ऋषि मुनियोंके आश्रम थे और वानरवंशी राजाओंका राज्य था। वाल्मीकि

रामायणमें इन राजाओंको पुछल्लेबन्दर ही कहा है, पर जैन पुराणानुसार ये राजा बन्दर नहीं थे, किन्तु उनकी ध्वजाओंपर बानरका चिन्ह होनेसे वे बानरवंशी कहलाते थे। उनकी सभ्यता बढ़ी चढ़ी थी और वे राजनीति, युद्धनीति आदिमें कुशल थे। वे जैन धर्मका पालन करते थे। इन्ही राजाओंकी सहायतासे रामचन्द्र रावणको परास्त करनेमें सफलीभूत होसके थे।

कुछ खोजों और अनुमानोंपरसे आजकल कुछ विद्वानोंका यह भी मत है कि रावणका राज्य इसी प्रान्तके अन्तर्गत था। इसका समर्थन इस प्रान्तसे सम्बन्ध रखनेवाली एक पौराणिक कथासे भी होता है। महाभारत और विष्णुपुराणमें यहांके एक बड़े योगी नरेशका उल्लेख है। इनका नाम था कार्तवीर्य व सहस्रार्जुन। इन्होंने अनेक जप, तप और यज्ञ करके अनेक ऋद्धियां सिद्धियां प्राप्त की थीं। इनकी राजधानी नर्मदा नदीके तटपर माहिष्मती (मंडला) थी। एकबार यह राजा अपनी स्त्रियोंके साथ नदीमें जलक्रीड़ा कर रहा था। कल्लोलमें उसने अपनी भुजाओंसे नर्मदा नदीका प्रवाह रोक दिया जिससे नदीकी धारा ठिलकर अन्यत्रसे बह निकली। प्रवाहसे नीचेकी ओर एक स्थानपर रावण शिवपूजन कर रहा था। नदीकी धारा उच्छृंखल होकर बह निकलनेसे रावणकी सब पूजापत्री बह ग । इसपर रावण बहुत क्रोधित हुआ और उसने कार्तवीर्यपर चढ़ाई करदी, पर कार्तवीर्यने उसे परास्तकर कैद कर लिया और बहुत समयतक अपने बंदीगृहमें रक्खा। इसका उल्लेख कालिदास कविने अपने रघुवंश काव्यमें इस प्रकार किया है:—

ज्याबंधनिष्पन्दभुजेन यस्य विनिश्वसद्वक्रपरम्परेण ।
कारागृहे निर्जितवासवेन लंकेश्वरेणोषितमाप्रसादात् ॥

अर्थात् जिस लंकेश्वरने इन्द्रको भी पराजित किया था वही कार्तवीर्यके कारागारमे मौर्वीसे भुजाओंमें बंधा हुआ और अपने अनेक मुखोंसे बड़ी२ सांसें लेता हुआ कार्तवीर्यकी प्रसन्नता होनेके समयतक रहा ।

ऐतिहासिक कालमें इस प्रांतका सबसे प्राचीन संबन्ध मौर्य साम्राज्यसे था । जबलपूरके पास रूपनाथमें जो अशोक सम्राट्का लेख पाया गया है उससे सिद्ध होता है कि आजसे लगभग अढाई हजार वर्ष पूर्व यह प्रांत मौर्यसाम्राज्यके अंतर्गत था। चंद्रगुप्त मौर्य और भद्रबाहुस्वामी उज्जैनसे निकलकर इसी प्रांतमेंसे होते हुए दक्षिणको गये होंगे । उस समय यहां जैनधर्मका खूब प्रचार हुआ होगा । विक्रमकी चौथी शताब्दिसे लगाकर आगेके अनेक राजवंशोंके यहां शिलालेख, ताम्रपत्र आदि मिले हैं । डॉ० विन्सेन्ट स्मिथका अनुमान है कि समुद्रगुप्त अपनी दिग्विजयके समय सागर, जबलपूर और छत्तीसगढ़मेंसे होकर दक्षिणकी ओर बढ़े थे । उस समय चांदा जिलेमें बौद्ध राजाओंका राज्य था । पांचवी छटवीं शताब्दिके दो राजवंश उल्लेखनीय हैं क्योंकि ये दोनों ही राजवंश भारतके इतिहासमें अपने ढंगके विलक्षण ही थे । इनमेंसे एक परिव्राजक महाराजा कहलाते थे । जिनका राज्य जबलपूरके आसपास था । दूसरे राजर्षि राज्यकुल नरेश थे जिनका राज्य छत्तीसगढ़में था । इसी समय जबलपूरके पास उच्छकल्पके महाराजा भी राज्य करते थे । इसकी राजधानी आधुनिक उच्छ-

हरा थी। मध्यप्रांतका सबसे बड़ा राजवंश कलचूरि वंश था जिसका प्राबल्य आठवीं नौवीं शताब्दिमें बहुत बढ़ा। शिलालेखोंमें इस वंशकी उत्पत्ति उपर्युक्त सहस्रार्जुन व कार्तवीर्यसे बतलाई गई है। एक समय कलचूरि साम्राज्य बंगालसे गुजरात और बनारससे कर्नाटक तक फैल गया था, पर यह साम्राज्य बहुत समयतक स्थायी नहीं रह सका। क्रमशः इस वंशकी दो शाखायें होगईं। एक शाखाकी राजधानी जबलपूरके पास त्रिपुरी थी जिसे चेदि भी कहते हैं और दूसरीकी विलासपुर जिलेके रतनपुरमें। यद्यपि कलचूरि नरेशोंका राज्य बहुत समय तक बना रहा, पर तीन चार शताब्दियोंके पश्चात् उसका जोर बहुत घट गया।

कलचूरी नरेश प्रारम्भमें जैनधर्मके पोषक थे। पांचवीं छटवीं शताब्दिके अनेक पाण्ड्य और पल्लव शिलालेखोंमें उल्लेख है कि 'कलभ्र' लोगोंने तामिल देशपर चढ़ाई की और चोल, चेर, और पांड्य राजाओंको परास्तकर अपना राज्य जमाया। प्रोफेसर रामस्वामी अय्यन्गारने वेल्विकुडिके ताम्रपत्र तथा तामिल भाषाके 'पेरियपुराणम्' परसे सिद्ध किया है कि ये कलभ्रवंशी प्रतापी राजा जैनधर्मके पक्के अनुयायी थे (Studies in South Indian Jainizm P. 53-56) इनके तामिल देशमें पहुंचनेसे जैनधर्मकी वहां बड़ी उन्नति हुई। इनके एक राजाका नाम या उपनाम 'कल्वरकल्वम्' था। इन नरेशोंके वंशज अब भी विद्यमान हैं और वे कलार कहलाते हैं। श्रीयुक्त अय्यन्गारजीका अनुमान है कि ये 'कलभ्र' आर्य नहीं द्राविण जातिके होंगे, पर अधिक सम्भव यह प्रतीत होता है कि ये

'कलभ्र' कलचुरिवंशकी ही शाखा होंगे। कलचुरि संवत् सन् २४८ ईस्वीसे प्रारम्भ होता है। अतएव पांचवीं शताब्दिमें इनका दक्षिण पर चढाई करना असम्भव नहीं हैं। अय्यन्गारजीका अनुमान है कि सम्भवतः दक्षिणके जैनियोंने ही शैवराजाओंसे त्रासित होकर कलभ्रराजाको दक्षिणपर चढाई करनेके लिये आमन्त्रित किया था। इस विषयपर अभी वहुत थोडा प्रकाश पड़ा है। इसकी खोज होनेकी अत्यन्त आवश्यक्ता है। ईस्वी पूर्व दूसरी शताब्दिका जो उदयगिरिसे कलिंगके जैन राजा खारवेलका लेख मिला है उसमें खारवेलके साथ 'चेतराजवसवधन' विशेषण पाया जाता है। इसकी संस्कृत छाया 'चैत्रराजवंशवर्धन' की जाती है। पर वह 'चेदिराजवंशवर्धन' भी हो सक्ता है जिससे खारवेलका कलचुरिवंशीय होना सिद्ध होता है। अन्य कितने ही कलचुरि नरेशोंने अपनेको 'त्रिकलिङ्गाधिपति' कहा है। आश्चर्य नहीं जो खारवेलका कलचुरिवंशसे सम्बंध हो। प्रॉफेसर शेषगिरिरावका भी ऐसा ही अनुमान है।

(South Indian Jainizm P. 24)

मध्यप्रान्तके कलचुरि नरेश जैनधर्मके पोषक थे 'इसका एक प्रमाण यह भी है कि उनका राष्ट्रकूट नरेशोंसे घनिष्ट सम्बन्ध था और राष्ट्रकूटनरेश जैनधर्मके वड़े उपासक थे। इन दोनों राजवंशोंमें अनेक विवाह सम्बन्ध भी हुए थे। उदाहरणार्थ कृष्णराज (द्वि०) ने कोकल्लदेव (चेदिनरेश) की राजकुमारीसे विवाह किया था। कोकल्लके पुत्र शंकरगणकी दो राजकुमारियोंको कृष्णराजके पुत्र जगत्तुंगने विवाहा था। इसी प्रकार इन्द्रराज और अमोघवर्षने

पाये जाते हैं वे इन्हीं कलचुरियोंकी सन्तान हैं। अनेक भारी मंदिर जो आजतक विद्यमान हैं वे प्रायः इसी गिरती के समयमें निर्माण हुए हैं। जैनियोंके मुख्य तीर्थ इस प्रांतमें बैतूल जिलेमें मुक्तागिरि, निमाड़ जिलेमें सिद्धवरकूट और दमोह जिलेमें कुंडलपुर हैं। मुक्तागिरि, अपरनाम मेढागिरि और सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र हैं जहांसे प्राचीन कालमें करोड़ों मुनियोंने मोक्षपद प्राप्त किया है। मुक्तागिरिमें कुल अड़तालीस मंदिर हैं जिनमें मूर्तियोंपर विक्रमकी चौदहवीं शताब्दिसे लगाकर सत्तरहवीं शताब्दि तकके उल्लेख हैं। इन मंदिरोंमें पांच बहुत प्राचीन प्रतीत होते हैं और सम्भवतः बारहवीं तेरहवीं शताब्दिके हैं। सिद्धवरकूटके प्राचीन मंदिर ध्वंस अवस्थामें हैं। कुछ मूर्तियोंपर पन्द्रहवीं शताब्दिके तिथि–उल्लेख हैं। कुण्डलपुरके मंदिरोंकी संख्या ९२ है। मुख्य मंदिरमें महावीरस्वामीकी वृहत् मूर्ति है और १७हवीं शताब्दिका शिलालेख है। मंदिरोंसे अलंकृत पर्वत कुंडलाकार है इसीसे इसका नाम कुण्डलपुर पड़ा है, पर कई भाइयोंको इससे महावीरस्वामीकी जन्मनगरी कुन्दनपुरका भ्रम होता है। इन तीनों क्षेत्रोंका प्राकृतिक सौन्दर्य बड़ा ही चित्तग्राही और प्रभावोत्पादक है।

बरार।

इसका प्राचीन नाम 'विदर्भ' पाया जाता है। पं० तारानाथ तर्कवाचस्पतिने इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार की है:–विगताः दर्भाः कुशाः यतः' अर्थात् जहां दर्भ न ऊगे, पर यह निरी व्याकरणकी खींचातानी ही प्रतीत होती है। यह भी दन्तकथा है कि यहां विदर्भ नामका एक राजा होगया है इसीसे इसका

नाम विदर्भ देश पड़ा, इसका समर्थन 'भागवतपुराण' से भी होता है। भागवतपुराणके पांचवे स्कन्धमें ऋषभदेव महाराजका वर्णन है। वहां कहा गया है कि ऋषभदेवने अपने कुल राज्यके नव हिस्सेकर उन्हें अपने नव पुत्रोंमें वितरण कर दिये। कुश नामके पुत्रको जो भाग मिला वह कुशावर्त कहलाया। ब्रह्मको जो देश मिला उसका नाम ब्रह्मावर्त पड़ा, इसी प्रकार विदर्भ नामक कुमारको जो प्रदेश मिला वह विदर्भ देश कहलाया। जैन पुराणोंमें ऐसा कथन नहीं है। आजकल इस देशको वह्राड कहते हैं जो विदर्भवा ही अपभ्रंश है, पर वह्राडकी व्युत्पत्तिके विषयमें भी अनेक दन्तकथायें, अनुमान और तर्क लगाये जाते हैं। कोई कहता है वरयात्रा व 'वरहाट' व 'वरात' से वह्राड बना है। इसका सम्बंध कृष्ण और रुक्मणीके विवाहकी वरातसे बतलाया जाता है। कोई वर्धाहार व वर्धातट—अर्थात् वर्धाके पासका—देशसे वह्राडरूप सिद्ध करता है। कोई विराट व वैराट राजासे वह्राडका सम्बन्ध स्थापित करता है इत्यादि, पर ये सब निरी कल्पनायें ही प्रतीत होती हैं।

विदर्भ देशका उल्लेख रामायण और महाभारतमें अनेक जगह पाया जाता है। अगस्त्य ऋषिकी पत्नी लोपामुद्रा, इक्ष्वाकुवंशके राजा सगरकी रानी केशिनी, अजकी रानी इन्दुमती, नलराजाकी रानी दमयन्ती, कृष्णकी रानी रुक्मिणी, प्रद्युम्नकी रानी शुभांगी, अनिरुद्धकी रानी रुक्मावती ये सब विदर्भ देशकी ही राजकुमारियां थीं। रुक्मिणी भीष्मक राजाकी कन्या व रुक्मीकी बहिन थीं। भीष्मककी राजधानी कौण्डिन्यपुर थी जिसका आधुनिक नाम

कुंडिनपुर है। यह अमरावतीसे लगभग वीस मील है। कहा जाता है कि आधुनिक अमरावती उस समयमें कौण्डिन्यपुरके ही अंतर्गत थी। अमरावतीमें जो अम्बकादेवीकी स्थापना है वह कौण्डिन्यपुरकी अधिष्ठात्रीदेवी कही जाती है। यहींपर रुक्मिणी अम्बिकादेवीकी पूजा करने आई थीं और यहींसे कृष्णने उसका अपहरण किया था। रुक्मिणीका भाई रुक्मी जव कृष्णसे पराजित हो गया और रुक्मिणीको वापिस नहीं लेसका तव वह वहुत लज्जित हुआ। लज्जाके मारे उसने कौण्डिन्यपुरको जाना ही उचित नहीं समझा। उसने एक दूसरे ही स्थानपर अपनी राजधानी बनाई। इसका नाम उसने भोजकट (भोजकटक) रक्खा। इस स्थानका नाम आजकल भातकुली है जो अमरावतीसे लगभग दस मील है। यहां जैनियोंका बड़ा प्राचीन मंदिर है और वार्षिक मेला लगता है।

विक्रमकी ८ वीं ९ वींतथा १० वीं शताब्दिमें विदर्भ क्रमशः चालुक्य और राष्ट्रकूट राजाओंके राज्यमें सम्मिलित था। ये दोनों ही राजवंश जैन धर्मके पोषक थे और इसलिये उक्त शताब्दियोंमें यहां जैन धर्मका खूब प्रचार रहा। कहा जाता है कि मुसलमानोंके आगमनसे प्रथम दशवीं शताब्दिके लगभग वह्राडान्तर्गत एलिचपूरमें 'ईल' नामका एक जैनधर्मी राजा राज्य करता था। उसने वि० सं० १०००में अपने नामसे ईलिचपुर (ईलेशपुर) शहर वसाया। एक वार ईल राजाने एक मुसलमान फकीरके साथ बुरा वर्ताव किया इसका समाचार गजनीके तत्कालीन राजा शाह रहमानके पास पहुंचा। उस समय शाह रहमानका विवाह हो रहा था। उनको फकीरके अपमानसे इतना बुरा लगा कि उन्होंने अपना

विवाह छोड़ ईलराजापर चढाई कर दी। इसीसे उनका नाम दूल्हारहमान पड़ा। दूल्हारहमान और ईलके बीच घोर युद्ध हुआ जिसमें दोनों ही राजा काम आये। मुसलमानोंके ग्यारह हजार योद्धा इस युद्धमें मारे गये, पर अन्तमें मुसलमानोंकी ही जीत हुई। युद्धमें मारे गये योद्धा सब एक ही स्थानपर दफन किये गये और उस स्थानपर एक इमारत बनवाई गई। यह इमारत अब भी विद्यमान है और 'गंजीशहीदा' नामसे प्रसिद्ध है। पास ही शाह दूल्हारहमानकी कब्र भी बनी हुई है।

उक्त कथाका उल्लेख तवारीख—इ—अमजदीमें पाया जाता है, पर अन्य कोई पुष्ट प्रमाण इस वृत्तान्तके अभीतक नहीं पाये गये। सम्भव है कि दशवीं शताब्दिके लगभग यहां ईल नामका कोई जैनी राजा राज्य करता रहा हो, पर एलिचपुर उसका बसाया हुवा है यह बात कदापि नहीं मानी जासक्ती। अनेक ग्रंथों और शिलालेखोंमें इस नगरका प्राचीन नाम अचलपुर (अच्चलपुर) पाया जाता है। इस नगरके पास ही जो मुक्तागिरि नामका सिद्धक्षेत्र है वहांकी कई मूर्तियोंपर यह नाम खुदा हुआ पाया जाता है। यही नाम ' निर्वाणकाण्ड ' ग्रंथमें भी आया है; यथा 'अच्चलपुर वरणयरे इत्यादि। अच्चलपुरका ही अपभ्रंश अचलपुर (एलिचपुर)... है और यह नाम विक्रमकी १२ हवीं शताब्दिमें सुप्रचलित हो गया था। उस समयके एक बड़े भारी वैयाकरण हेमचन्द्राचार्यने अपनी व्याकरण 'सिद्ध हैमचन्द्र' में इस नामकी व्युत्पत्ति करनेके लिये एक स्वतंत्र सूत्रकी ही रचना की है। वह सूत्र है 'अचलपुरे चलोः'। ८, ११८, इसकी वृत्ति करते हुए कहा गया है

'अचलपुरशब्दे चकारलकारयोः व्यत्ययो भवति अचलपुरं' ॥
इससे स्पष्ट है कि उस समयके एक प्रसिद्ध विद्वान्, इतिहासज्ञ और वैयाकरण ईलराजासे ईलिचपुर नामकी उत्पत्तिको स्वीकार नहीं करते थे।

विदर्भ प्रान्तमें संस्कृतके अनेक बड़े२ कवि हो गये हैं। भारवि, दण्डी, भवभूति, गुणाढ्य, हेमाद्रि, भास्कराचार्य, त्रिविक्रमभट्ट, भास्करभट्ट, लक्ष्मीधर आदि संस्कृतके अमर कवियोंका विदर्भसे सम्बन्ध बतलाया जाता है। यहांके कवियोंने प्राचीनकालमें इतनी ख्याति प्राप्त की थी कि संस्कृत साहित्यमें एक रचनाशैली ही इस देशके नामसे प्रख्यात हुई। काव्यरचनामें 'वैदर्भी रीति' सर्वोच्च और सर्वप्रिय मानी गई है क्योंकि इस रीतिमें प्रसाद, माधुर्य, सुकुमारता, अर्थव्यक्ति, उदारत्व आदि गुण विशेषरूपसे पाये जाते हैं। इस देशमें अनेक जैन कवि भी हो गये हैं। ये कवि विशेषतः कारंजाके बलात्कारगण और सेनगणके भट्टारकोंमेंसे हुए हैं। इन्होंने धार्मिक ग्रन्थोंकी रचना की है; पर ये ग्रन्थ अभीतक प्रकाशित नहीं हुए। वे वहांके शास्त्रभंडारोंमें ही रक्षित हैं। अपभ्रंश भाषाके प्रसिद्ध कवि धनपाल जिनकी 'भविष्यदत्त कथा' जर्मनी और बड़ौदासे प्रकाशित हो चुकी है, सम्भवतः इसी प्रांतमें हुए हैं। क्योंकि ये कवि धाकड़वंशी थे और यह जाति इसी प्रांतमें पाई जाती है। भविष्यदत्त कथाकी दो अति प्राचीन प्रतियां भी इस प्रान्तके ही अन्तर्गत कारंजाके शास्त्रभंडारोंमें पाई गई हैं। बुलडाला जिलेके मेहकर (मेघंकर) नामक ग्रामके बालाजीके मंदिरमें एक खंडित जैन मूर्ति संवत् १२७२ की है जिसे

आशाधरकी स्त्री पद्मावतीने प्रतिष्ठित कराई थी (पृ० ९०)। संवत्के उल्लेखसे अनुमान होता है कि सम्भवतः ये आशाधर उन प्रसिद्ध जैनाचार्य 'कलिकालिदास' आशाधरजीसे अभिन्न हैं, जिनके बनाये हुए ग्रन्थोंका जैन समाजमें भारी आदर है। ये आशाधर बघेरवाल जातिके थे और राजपूतानामें शाकम्भरी (साम्हर) के निवासी थे। मुसलमानोंके त्राससे वे वि० सं० १२४९में धारा-नगरीमें और वि० सं० १२६९में नालछे (नलकच्छपुर) में आ गये थे। उनके वि० सं० १३०० तकके बने हुए ग्रन्थोंमें नल-कच्छपुरका उल्लेख मिलता है, पर मेहकरकी मूर्तिके लेखपरसे अनु-मन होता है कि वि० सं० १२७९के लगभग आशाधरजी विदर्भ प्रान्तमें ही रहे होंगे। वे बघेरवाल जातिके थे और इस जातिकी बरारमें ही विशेष संख्या पाई जाती है। उनकी स्त्रीका नाम अन्यत्र सरस्वती पाया जाता है, पर सरस्वती और पद्मावती पर्यायवाची शब्द हैं अतः उनका तात्पर्य एक ही व्यक्तिसे हो सक्ता है। यह भी अनुमान होता है कि सम्भवतः आशाधरजी जब बरारमें थे तभी उन्होंने अपने 'मूलाराधनादर्पण' नामक टीका ग्रन्थकी रचना की थी। इस ग्रन्थका उल्लेख उनके वि० सं० १२८९से लगाकर १३०० तकके बने हुए ग्रन्थोंकी प्रशस्तियोंमें पाया जाता है और वि० सं० १२७९के पूर्वके ग्रंथोंमें नहीं पाया जाता। इस ग्रंथकी प्रति भी अबतक केवल बरार प्रान्तान्तर्गत कारंजामें ही पाई गई है, अन्यत्र नहीं। इन सब प्रमाणोंसे सिद्ध होता है कि आशाधरजीने वि० सं० १२७९के लगभग कुछ काल बरार प्रान्तमें निवास किया और ग्रन्थ रचना भी की।

बरार प्रान्तमें जैनियोंका मुख्य स्थान अकोला जिलेमें कारंजा है। यहां लगभग चार पांचसौ वर्षसे दिगंवर संप्रदायके भिन्न२ तीन गणोंके पट्टोंकी स्थापना है। बलात्कारगण, सेनगण और काष्टासंघ, इन तीनों ही गणोंके मंदिरोंमें एक२ शास्त्रभंडार है। बलात्कारगण और सेनगणके मंदिरोंके शास्त्रभंडार बड़े ही विशाल और महत्व-पूर्ण हैं। इनमें अनेक अप्रकाशित और अश्रुतपूर्व संस्कृत, प्राकृत व हिन्दीके ग्रन्थ हैं। इनका उद्धार होनेकी बड़ी आवश्यक्ता है*। अकोला जिलेमें दूसरा जैनियोंका पवित्र स्थान सिरपुर है जहां अन्तरीक्ष पार्श्वनाथका मंदिर है।

मध्यभारत।

मध्यभारतके अन्तर्गत अनेक अत्यन्त प्राचीन और इतिहास प्रसिद्ध स्थान हैं। अवंती देशकी गणना भारतके प्राचीनसे प्राचीन राज्योंमें की गई है। जिस दिन अन्तिम तीर्थंकर महावीरस्वामी-का मोक्ष हुआ था उसी दिन अवन्ती देशमें पालक राजाका अभिषेक हुआ था। जैन ग्रंथोंके अनुसार मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त भी अधिकांश अवन्ती (उज्जैनी) नगरीमें ही निवास करते थे। श्रुतकेवली भद्र-बाहुने उज्जैनीमें ही प्रथम द्वादशवर्षीय दुर्भिक्षके चिन्ह देखे और चंद्रगुप्तको तत्सम्बंधी भविष्यवाणी सुनाई। चंद्रगुप्त सम्राट्ने यहां ही उनसे जिनदीक्षा लेली और यहांसे ही मूल जैन संघकी वह

* कारंजा और वहांके गणों व शास्त्र भंडारोंका विशेष परिचय प्राप्त करनेके लिये देखोः-(१) दिगम्बर जैन खास अंक वर्ष १८ वीर सं० २४५१ 'कारंजा' वहांके गण और शास्त्रभंडार' (२) सी० पी० गवर्न्मेन्ट द्वारा प्रकाशित–Catalogue of Sanskrit-Prakrit Mss. in. C. P. & Berar.

दक्षिण यात्रा प्रारम्भ हुई जिसका केवल जैनधर्मके ही नहीं भारत-वर्षके इतिहासपर भी भारी प्रभाव पड़ा। विक्रमादित्य नरेशके सवन्धमें आधुनिक विद्वानोंका मत है कि विक्रम संवत्के प्रारम्भ कालके समय किसी उक्त नामके राजाका ऐतिहासिक अस्तित्व सिद्ध नहीं होता, पर जैन ग्रन्थोंमें महावीरस्वामीके ४७० वर्ष पश्चात् उज्जैनीके राजा विक्रमादित्यका उल्लेख मिलता है व उनके जीवनकी वहुतसी घटनायें भी पाई जाती हैं। 'कालिकाचार्य कथानक' के अनुसार विक्रमादित्यने महावीरस्वामीसे ४७० वर्ष पश्चात् विदेशियों (शकों)से युद्धकर उन्हें परास्त किया और अपना सम्वत् चलाया। इसके १३५ वर्ष पश्चात् शकोंने विक्रमादित्यको हराया और दूसरा संवत् स्थापित किया। स्पष्टतः उक्त दोनों संवतोंका अभिप्राय क्रमशः विक्रम और शक संवत्से है, पर इन संवतोंके बीच १३५ वर्षका अन्तर होनेसे शकोंके विजेता विक्रम और उनसे पराजित होनेवाले विक्रम एक नहीं माने जासक्ते। जो हो पर अनेक जैन ग्रन्थ यह प्रमाणित करते हैं कि उस समय एक बड़ा प्रतापी विक्रमादित्य नामका नरेश हुआ है जो जैनधर्मावलम्बी था। इसका समर्थन इस बातसे भी होता है कि 'वैताल पंचविंशतिका' 'सिंहासन द्वात्रिंशिका' आदि विक्रमादित्यसे सम्बन्ध रखनेवाले कथानक जैनियोंने ही विशेष रूपसे अपने ग्रन्थ भंडारोंमें सुरक्षित रक्खे हैं।

गुप्तवंशी राजाओंके समयमें यद्यपि जैनधर्मको विशेष उत्तेजन नहीं मिला, तथापि राज्यमें शांति होनेसे उसका प्रचार होता रहा। इसी समयमें 'हूण' जातिके विदेशी लुटेरोंके आक्रमणसे देशकी भारी क्षति हुई और मध्यभारतमें जैनधर्मको विशेष हानि हुई।

जैन ग्रंथोंमें इस समयके 'कल्कि' नामक राजाके निर्ग्रन्थ मुनियोंपर भारी अत्याचारोंका उल्लेख है। उत्तरपुराणमें कहा गया है कि उसने परिग्रहरहित मुनियोंपर भी कर लगाया था। कुछ विद्वान् इस कल्किराजको हूणवंशी, महा दुराचारी मिहिरकुल ही अनुमान करते हैं। कल्किका अधर्मराज्य बहुत समयतक नहीं चला-४२ वर्षके अधर्म राज्यसे भूतलको कलंकितकर कल्कि कुगतिको प्राप्त हुआ और उसके उत्तराधिकारियोंने पुनः धर्मराज्य स्थापित किया।

नौवीं दशवीं शताब्दिसे मध्यभारतमें जैनधर्मकी विशेष उन्नति हुई और कीर्ति फैली। 'धारा'के नरेशोंने जैन धर्मको खूब अपनाया, 'महासेनसूरि' ने मुञ्जनरेशसे विशेष सन्मान प्राप्त किया और उनके उत्तराधिकारी सिन्धुराजके एक महासामन्तके अनुरोधसे उन्होंने 'प्रद्युम्नचरित' काव्यकी रचना की। ग्वालियर रियासतके शिवपुर परगनान्तर्गत दूबकुंडसे जो सं० ११४५का शिलालेख मिला है उसमें तत्कालिक राजवंश परिचयके अतिरिक्त 'लाटवागट' गणके आचार्योंकी परम्परा दी है। इस परम्पराके आदिगुरु देवसेन कहेगये हैं (पृ० ७३-७७)। ये देवसेन संभवतः वे ही हैं जिन्होंने संवत् ९९०में दर्शनसार नामक एक जैन ऐतिहासिक ग्रंथकी रचना की थी। इनके बनाये हुए संस्कृत, प्राकृत और भी अनेक ग्रन्थ पाये जाते हैं। भोजदेवके समयमें अनेक प्रसिद्ध२ जैनाचार्य हुए हैं। ब्रह्मदेव टीकाकारके अनुसार द्रव्यसंग्रह ग्रंथके रचयिता नेमिचन्द्राचार्य भोजदेवके दरबारमें थे। नयनंदि आचार्यने अपना अपभ्रंश भाषाका एक काव्य 'सुदर्शनचरित्र' भी इन्हींके राज्यमें सं० ११००में समाप्त किया था जैसा उसकी प्रशस्तिमें है:-

'तिहुवणंनारायणसिरिनिकेउ, तहिं णरवरु पुंगमु भोयदेउ ।
णिव विक्कमकालहो ववगएसु, एयारह संवच्छरसएसु ॥
तहि केवलिचरिउ अमच्छरेण, णयणंदिय विरइउ वच्छरेण ।

तेरहवीं शताब्दीमें आशाधरजी राजपूतानेसे मुसलमानोंके भयसे धारामें आगये थे। धारा और नालछेमें रहकर ही उन्होंने अपने अधिकांश ग्रंथोंकी रचना की। यह समय जैनधर्मकी खूब समृद्धिका था। भेलसाके समीपका 'वीसनगर' जैनियोंका बहुत प्राचीन स्थान है। वह शीतलनाथ तीर्थंकरकी जन्मभूमि होनेसे अतिशयक्षेत्र है। जैन ग्रंथोंमें इसका नाम भद्दलपुर पाया जाता है। भट्टारकोंकी गद्दी यहींसे प्रारम्भ होकर मान्यखेट गई थी। इसी समय मध्यभारतमें विशेषतः बुन्देलखण्डमें अनेक जैन मंदिर निर्मापित हुए जिनके अब अधिकतः खण्डहर मात्र शेष रह गये हैं। खजराहाके प्रसिद्ध जैन मंदिर इसी समयके हैं। आगामी तीन चार शताब्दियोंमें मंदिरनिर्माणका कार्य खूब प्रचुरतासे जारी रहा, बड़े२ सुन्दर कारीगरीके मंदिर बनगये और अनेक मूर्तियोंकी प्रतिष्ठायें हुईं। सोनागिरि (दतिया) बड़वानी, नयनागिरि (पन्ना), द्रोणगिरि (बीजावर) आदि अतिशय क्षेत्र इसी समय अनेक मंदिरोंसे अलंकृत हुए। सत्तरहवीं शताब्दिसे यहां जैनधर्मका ह्रास होना प्रारम्भ हुआ। जहां किसी समय हजारों लाखों जैनी थे वहां अब कोसों तक अपनेको जैनी कहनेवाला ढून्ढ़नेसे नहीं मिलता। वहां अब जैनधर्मका पता उन्हीं मंदिरोंके खण्डहरों और टूटीफूटी हजारों जिनमूर्तियोंसे चलता है।

राजपूताना।

जैनधर्म आदिसे क्षत्रियोंका धर्म रहा है, और इसलिये इसमें

जैन समाजमें अन्यत्र तो क्षत्रियत्व बहुत समयसे लुप्त हो गया पर राजपूतानेमें वह अभी२ तक बना रहा है। राजत्व, मंत्रीत्व और सेनापतित्वका कार्य जैनियोंने जिस चतुराई और कौशलसे चलाया है उससे उन्होंने राजपूतानेके इतिहासमें अमर नाम प्राप्त कर लिया है। आदिनाथ मंदिरके निर्मापक विमलशाहने भीमदेव नरेशके सेनापतिका कार्य बहुत अच्छी तरहसे किया था। सोलहवीं शताब्दिमें अकबरके भीषण षड्यंत्र जालमें फंसे हुए राणा प्रतापसिंहका उद्धार जिन भामाशाहकी अतुल द्रव्य और चतुराईसे हुआ था वे ओसवाल जातिके जैनी ही थे। अपने अनुपम स्वदेश प्रेम और स्वार्थ त्यागके लिये यदि भामाशाह मेवाड़के जीवनदाता कहे जांय तो अत्युक्ति नहीं होगी। सन् १७८७के लगभग मारवाड़के महाराजा विजयसिंहके सेनापति और अजमेरके सूबेदार डूमराजने मरहटोंके प्रति घोर युद्धकर अपनी वीरता और स्वामिभक्तिका अच्छा परिचय दिया था। ये डूमराज भी ओसवाल जैन जातिके सिंघी कुलके नररत्न थे। इसी प्रकार गत शताब्दिके प्रारम्भिक भागमें बीकानेर राज्यके दीवान और सेनापति अमरचंद्रजीने भटनेरके खान जब्ताखांको भारी शिकस्त दी थी तथा अनेक युद्धोंमें अपनी वीरताका अच्छा परिचय दिया था। सन् १८१७ ईस्वीमें पिंडारियोंका पक्ष करनेका झूठा दोष लगाकर उनके शत्रुओंने उनके असाधारण जीवनकी असमय ही-इतिश्री-करा डाली। ये भी ओसवाल जैन जातिके वीर थे। और भी न जाने कितने जैन वीरोंके वीरतापूर्ण जीवनचरित्र आज इतिहासकी अंधेरी कोठरीमें पड़े हुए हैं। इन्हीं शताब्दियोंमें राजपूतानेने ही ढूंढारी हिन्दीके कुछ ऐसे भारी जैन

धार्मिक विद्वानोंको पैदा किया जिन्होंने संस्कृत प्राकृत ग्रन्थोंपर हिन्दीमें टीका और भाष्य लिखकर जनताका भारी उपकार किया है। इनमें जयचंद्र, किसनसिंह, ओघराज, टोडरमल, दौलतराम, सदासुखजी छावड़ा आदिके नाम प्रख्यात हैं जिनका अधिक परिचय देनेकी आवश्यक्ता नहीं। राजपूतानेमें अनेक जगहं जैसे—जैसलमेर, जयपुर आदिमें प्राचीन शास्त्रभंडार हैं जिनका अभीतक पूरा२ शोध नहीं हुआ है। वह दिन जैन संसारके लिये बड़े सौभाग्यका होगा जब प्राचीन मंदिरों, खण्डहरों, मूर्तियों, शिलालेखों और ग्रन्थोंके आधारपर जैन धर्मके उत्थान और पतनका जीता जागता इतिहास तैयार होकर विद्वत्समाजके सन्मुख रक्खा जासकेगा। ब्रह्मचारीजीकी संकलित की हुई इन प्राचीन स्मारकोंकी पुस्तकोंको पढ़कर पाठकोंके हृदयमें यह भाव उठे विना नहीं रहेगा कि:—

"अबतक पुराने खंडहरोंमें, मंदिरोंमें भी कहीं,
बहु मूर्तियां अपनी कलाका पूर्ण परिचय दे रहीं।
प्रकटा रही हैं भग्न भी सौन्दर्यकी परिपुष्टता,
दिखला रही हैं साथ ही दुष्कर्मियोंकी दुष्टता ॥ १ ॥
यद्यपि अतुल, अगणित हमारे ग्रन्थ—रत्न नये नये,
बहु वार अत्याचारियोंसे नष्टभ्रष्ट किये गये।
पर हाय! आज रहींसहीं भी पोथियां यों कह रहीं,
क्या तुम वही हो, आज तो पहचानतक पड़ते नहीं ॥ २ ॥

गांगई। }
२९-९-२६ } हीरालाल जैन।

सूचीपत्र।

प्रथम भाग—मध्यप्रान्त।

(१) जबलपुर विभाग १०

[१] सागर जिला— १०
(१) एरन ग्राम ... ११
(२) खुरई ... ... ,,
(३) बंडा ... ... ,,
(४) बीना ... ... ,,
(५) गढ़ाकोटा ... ,,
(६) सागर १२
(७) मदनपुर ... ... ,,

[२] दमोह जिला ... ,,
(१) कुंडलपुर क्षेत्र ... ,,
(२) नोहटा ... ... ,,
(३) सिंगोरगढ़ ... १३

[३] जबलपुर जिला ... १४
(१) जबलपुर शहर ... १५
(२) बहरीबंद ... ,,
(३) बड़गांव १६
(४) देवापुर ... ... ,,
(५) कवीतलाई ... १७
(६) मझोली ... ... ,,
(७) तिवार ... ... ,,
(८) भूमार १८
(९) पटैनीदेवी ... १९
(१०) बिलहारी ... २०
(११) रूपनाथ ... ,,
(१२) भरहुत ... ... ,,

[४] मांडला जिला—
(१) ककरामठ मंदिर... २१
(२) देवगांव २२
(३) रामनगर ... ,,

[५] सिवनी जिला ... ,,
(१) चावरी ... ... ,,
(२) छपारा २३
(३) घनसोर ... ... ,,
(४) लखनादोन ... ,,
(५) सिवनी शहर ... ,,

(२) नर्बदा विभाग।

[६] नरसिंहपुर जिला २४
(१) बरहटा ... ... ,,
(२) तेंदूखेड़ा ... ... ,,

[७] हुशंगाबाद जिला ... २५
(१) सुहागपुर ... ,,
(२) हिमरणी ... ,,

[८] निमाड़ जिला ... २६
(१) खंडवा ... ... ,,
(२) बरहानपुर ... २७
(३) असीरगढ़ ... ,,
(४) मानधाता ... २८
(५) सिद्धवरकूट ... ,,

[९] बेतूल जिला... ... २९
(१) कमठी कलोजिया ३०
(२) मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र ,,

[१०] छिंदवाड़ा जिला ... ३१
(१) छिंदवाड़ा ... ३२
(२) मोहगांव... ... ,,
(३) नीलकंठी ... ,,
(३) नागपुर विभाग— ३३
[११] वर्धा जिला ... ,,
देवली ... ,,
[१२] नागपुर जिला ... ,,
(१) रामटेक ... ... ,,
(२) पर शिवनी ... ,,
(३) सावरगांव ... ,,
(४) उमरेरनगर ... ३४
(५) नागपुर ... ... ,,
[१३] चांदा जिला ... ३५
(१) भांड़क ... ... ,,
(२) देवलवाड़ा ... ,,
[१४] भंडारा जिला ... ३६
(१) अदयाली या अदयार ,,
[१५] बालाघाट जिला ३७
(१) मीरी ... ... ,,
(२) बाराशिवनी ... ,,
(३) जोगीमढ़ी ... ,,
(४) धनसुआ ... ,,
(५) धीपुर ... ... ,,
(४) छत्तीसगढ़ विभाग—३८
[१६] द्रुग जिला ... ,,
नागपुरा ... ... ,,
[१७] रायपुर जिला ... ३८
(१) आरंग ३९
(२) बड़गांव ४०
(३) कुर्रा या कुंवर... ,,
(४) सिरपुर ... ... ,,
(५) रायपुर ... ... ,,
(६) डूंगरगढ़ ४१
(७) मालकम ... ,,
कलचूरी वंश ... ,,
[१८] विलासपुर जिला ४२
(१) रतनपुर ... ... ,,
(२) अदभार ... ... ,,
(३) धनपुर ४३
(४) खरोद ... ... ,,
(५) मलतर या मलतार ४३
(६) तुमन ४४
[१९] संबलपुर जिला ,,
[२०] सरगुजा राज्य ... ,,
रामगढ़ पहाड़ी ... ,,
(५) बरार विभाग ४६
(२१) अमरावती जिला ...४७
(१) भातकुली ... ... ,,
(२) जारद ... ... ,,
(२२) एलिचपुर जिला ... ,,
(१) एलिचपुर ... ... ,,
(२३) येवतमाल या ऊन जिला ४८
(१) कलम ... ... ,,

(२४) अकोला जिला ... ४८
(१) नरनाल ... ... ,,
(२) पातूर ... ... ,,
(३) सिरपुर ४९
(४) विलहारा... ... ५०
(२५) बुलडाना जिला ... ,,
(१) मेहकर ... ... ,,
(२) सातगांव... ... ५१

दूसरा भाग—मध्य भारत।

(१) बघेलखंड विभाग ५६
(२) बुन्देलखंड ,, ५७
(३) गोंदवाना प्रदेश ५६
(४) मालवा ५६
पश्चिमी छत्रप ... ६०
[१] ग्वालियर रेजिडेन्सी ६१
(१) बाघ ६२
(२) बरो ... ... ,,
(३) भिलसागगर ... ,,
(४) बीशनगर ... ,,
(५) चंदेरी ६३
(६) ग्वालियरका किला ,,
(७) ग्यारसपुर ... ६८
(८) मंदसोर नगर ... ६९
(९) नरोद ... ... ,,
(१०) नरवर नगर ... ,,
(११) शुजालपुर ... ,,
(१२) उदयपुर ... ७०
(१३) उदयगिरि ... ,,
(१४) उज्जैन ... ७१
(१५) अमनचार ... ,,
(१६) अटेर परगना भिंड ,,
(१७) बरई ७२
(१८) भैरोगढ़ ७२
(१९) भौरासा ... ,,
(२०) दूबकुंड-लेख जायस-वाल जाति संस्कृत उल्थासहित ... ७३
(२१) गंढवल ... ८५
(२२) खिलचीपुर ... ,,
(२३) कोटवल या कुटवार ,,
(२४) मऊ ... ८६
(२५) पानविहार ... ८६
(२६) राजापुर या मायापुर ,,
(२७) सुहानिया या सोनिया ... ,,
(२८) सुन्दरसी ... ८७
(२९) सुसनेर ... ,,
(३०) तेरही ... ... ,,
(३१) उनचोद ... ,,
(३२) उन्दास ... ,,
(३३) सारंगपुर ... ,,
[२] इन्दौर एजन्सी ... ८६
(१) धमनेर गुफाएं ... ९०
(२) महेश्वर ९१
(३) ऊन ९१
(४) बिजवार या बिजावड़ ... ९३

(५) चोली ९४
(६) देहरी ... ... ,,
(७) देपाऊपुर ... ,,
(८) ग्वालनघाट ... ,,
(९) झारदा ९५
(१०) कथोली ... ,,
(११) कोहल ... ,,
(१२) कोथड़ी ... ,,
(१३) माचलपुर ... ९६
(१४) मोरी ... ... ,,
(१५) नीमावर ... ,,
(१६) रायपुर ... ... ,,
(१७) संदलपुर ... ९७
(१८) सुन्दरसी ... ,,
(१९) पुरागिलन ... ,,
(२०) चैनपुर ... ... ,,
(२१) संधारा ... ... ,,
(२२) किशुली... ... ९८
(२३) कुकदेश्वर ... ,,
(२४) राजोर ... ... ,,
[३] भोपाल एजन्सी ... ९९
(१) भोजपुर... ... ,,
(२) आशापुरी ... १००
(३) जामगढ़ ... ,,
(४) महलपुर ... ,,
(५) नरवर ... ... ,,
(६) शमसगढ़ ... ,,
(७) मुल्ला ... ... ,,
(८) सांची ... ... ,,
[४] पथारी राज्य ... १०१
[५] टोंक राज्य सिरोजनगर ,,
[६] देवास राज्य ... १०२
(१) सारंगपुर ... ... ,,
(२) मनासा १०३
(३) नागदा ... ... ,,
[७] सीतामऊ राज्य ... ,,
[८] पिरावा ष्टेट... ... ,,
[९] नरसिंहगढ़ ष्टेट ... ,,
(१) बिहार १०४
(२) छपेरा ... ... ,,
(३) पाचोर ... ... ,,
[१०] जावरा राज्य ... ,,
[११] राजगढ़ ,, ... १०५
[१२] सैलाना ,, ... ,,
[१३] भोपावर एजन्सी
धार राज्य ... ,,
(१) धारानगर ... ,,
(२) मान्दोर या मान्दोगढ़ १०७
(३) करोड़ १०८
(४) सादलपुर... ... ,,
(५) तारापुर ... ... ,,
[१४] बड़वानी राज्य ... १०८
,, नगर ... ,,
[१५] झाबुआ राज्य ... १०९
[१६] ओरछा ,, ... ११०
(१) ओरछा नगर ... १११
(२) अहार ... ... ,,

(३) जटारिया ... ... ,,
(४) पपौनी–पम्पापुर... ,,
[१७] दतिया राज्य ... ,,
(१) सोनागिरि ... ११२
[१८] पन्ना राज्य ... ,,
(१) नयनागिरी या
रेशिंदेगिरि ... ११३
(२) सिंगोरा ... ... ,,
(१९) अजयगढ़ राज्य ... ,,
अजयगढ़ गढ़ ... ११४
(२०) छतरपुर राज्य ... ,,
(१) खजराहा ... ११५
(२) छत्रपुर नगर ... ११६
(२१) बीजावर राज्य ... ११८
(२२) रीवां राज्य ... ,,
(१) अमरकंटक ... १२०
(२) बांधोगढ़ ... ... ,,
(३) सुहागपुर... ... १२१
(४) रीवां नगर ... ,,
(५) भल्हाघाट ... ,,
(६) भूमकहर ... ,,
(७) गूर्गी मसौन ... १२२
(८) मुकंदपुर ... ... ,,
(९) मार या मूरी ... ,,
(१०) पाली ... ... ,,
(११) पियावान ... ,,
(२३) नागोद या उछहराराज्य ,,
पटैनी देवी ... १२३
(२४) जसो राज्य ... १२४

तृतीय भाग–
राजपूताना ... १२५
(१) उदयपुर राज्य ... १२८
(१) अहार ... १३१
(२) बिजोलिया ... १३२
(३) चित्तौड़, जैन स्तम्भ १३३
(४) नगरी ... १४१
(५) धेबार झील ... १४२
(६) कंकरोली ... १४२
(७) कुंभलगढ़ ... ,,
(८) नाथद्वारा .. १४३
(९) रिषभदेव ... ,,
(१०) उदयपुरशहर ... १४४
(११) नागदा ... ,,
(१२) पुर १४५
(१३) दिलवाड़ा ... १४५
(१४) मांडलगढ़ ... ,,
(१५) करेड़ा ... ,,
(१६) केलवाड़ा ... १४७
(१७) नादलाई ... ,,
(१८) नाडोल ... १४८
(२) बांसवाड़ा राज्य ... १४९
(१) अर्थूणा ... ,,
(२) कलिंजरा ... १५०
(३) परतापगढ़ राज्य ... ,,
वीरपुर ... ... ,,
(४) जोधपुर राज्य ... १५१
(१) वाली १५३

(२) भीनमाळ ... १५४
(३) मांडोर १५५
(४) नांदोल ... ... ,,
(५) मांगलोद ... ,,
(६) पाकरन नगर ... ,,
(७) रानापुर १५६
(८) सादड़ी नगर ... ,,
(९) कापरदा ... १५७
(१०) पाड़ ... ... ,,
(११) वारलई ... ,,
(१२) डीडवाना नगर... ,,
(१३) जसवंतपुरा ... ,,
(१४) घटियाला ... १५८
(१५) ओसियाँ या उकेसा ,,
(१६) वाड़मेर ... १५९
(१७) मेड़ता नगर ... ,,
(१८) पालीनगर ... ,,
(१९) सांभर १६०
(२०) संचोर ... १६१
(२१) नाना ... ... ,,
(२२) वेलार ... ... ,,
(२३) हथुंडी ... ... ,,
(२४) सेवाड़ी ... १६३
(२५) घाणेराव .. ,,
(२६) वरकाना ... ,,
(२७) सांडेराव ... ,,
(२८) कोरटा १६४
(२९) जालोर ... ,,
(३०) केकिंद ... १६५
(३१) बहुळु ... १६५
(३२) ऊनोतरा ... ,,
(३३) सुरपुरा ... ,,
(३४) नदसर ... १६६
(३५) जसोल ... ,,
(३६) नगर ... ... ,,
(३७) खेड़ १६७
(३८) तिवरी ... ... ,,
(३९) फालोदी ... ,,
(५) जैसलमेर राज्य ... ,,
(१) ,, नगर ... १६८
(२) लोद्रवा ... ... ,,
(६) सिरोही राज्य ... १६८
(१) नांदिया १६९
(२) झारोली ... ... ,,
(३) मीरपुर ... ... ,,
(४) मुंगथला ... ... ,,
(५) पाटनारायण ... १७०
(६) ओर ... ... ,,
(७) नीतोरा ... ... ,,
(८) कोजरा ... ... ,,
(९) [illegible] ... ,,
(१०) [illegible] ... १७१
(११) [illegible] ... ... ,,
(१२) पालडी ... ... ,,
(१३) वागिण ... ,,
(१४) ऊथमन ... ,,
(१५) [illegible] ... १७२
(१६) [illegible] ... ,,

(१७) झालन्द्री ... १७२
(१८) वदाद ... ... ,,
(१९) बीगमल ... ,,
(२०) वरमान ... ,,
(२१) सिरोही का किरपला ,,
(२२) पिण्डवाड़ा ... ,,
(२३) अजारी ... ,,
(२४) वसंतगढ़ ... १७३
(२५) बासा ... ... ,,
(२६) कलागरा ... ,,
(२७) कायद्रा ... ... ,,
(२८) चंद्रावती ... ,,
(२९) तिमर ... ,,
(३०) दत्तानी ... १७४
(३१) हणाद्रा ... ,,
(३२) उन्दपुर ... ,,
(३३) पालडीगांव ... ,,
(३४) वागीन ... ,,
(३५) लोटेरा ... ,,
(३६) आबू पर्वत ... ,,
(३७) अचलगढ़ ... १७८
(३८) ओरिया ... ,,
(७) जैपुर राज्य ... १७६
(१) आम्बेर १८०
(२) बैराट ... ... ,,
(३) चाटसू या चाकसू ,,
(४) झूंझनू ... ... ,,
(५) खंडेला ... ... ,,
(६) नराना ... ... ,,
(७) सांगानेर १८१
(८) जैपुरशहर ... ,,
(९) कलश पहाड़ व ग्राम ,,
(८) किशनगढ़ राज्य ... १८२
(१) रूपनगर ... ,,
(२) अराई ... ... ,,
(९) बून्दी ... ... ,,
केशोराय पाटन ... ,,
(१०) टौंक १८३
सिरोंजनगर ... ...
(११) भरतपुर राज्य ... ,,
(१) बयाना १८४
(२) कामा ... ... ,,
(१२) कोटा १८५
(१) कंसवाग्राम ... ,,
(२) रामगढ़ ... ... ,,
(३) बारां ... ... ,,
(४) मऊ ... ... ,,
(५) मुकंदरा ... ... ,,
(१३) झालावाड़ राज्य १८६
चंद्रावती ... ... ,,
(१४) बीकानेर राज्य ... ,,
(१) बीकानेर १८७
(२) रेणी ... ... ,,
(१५) अलवर राज्य ... ,,
(१) राजगढ़ नगर ... ,,
(२) पारानगर... ... ,,
(१६) अजमेर १८८

नं० १६का अवशेष ।

कटरा १८९
मुंगथला ... ... ,,
सिरोही राज्य ,,
(१) पिंडवारा ... ... ,,
(२) झरोली ... ... ,,
(३) मुंगथला ... ... ,,
(४) कपरदन ... ... ,,
(५) पालरी ... ... ,,
सिरोही राज्य १६१०-११ १६०
(१) दम्मानी १९०
(२) कालागरा ... ,,
सन् १६११-१२
बारली ... ... ,,
भरतपुर राज्य ... ... ,,
टांटोटी ... ... ,,
बघेरा राज्य ... ... ,,
सिहोर राज्य १६१
(१) गटयाली ... ... ,,
(२) नांदिया ... ... ,,
सन् १६१२-१३
झालरापाटन शहर ... ,,
राज्य गंगधार ... ... ,,
सन् १६१४
भरतपुर बयाना ... ,,
मेवाड़-अहार ... ... ,,
सन् १६१५
डुंगरपुर राज्य बरोड़ा १९२
बांसवाड़ा राज्यकलिंजरा १९२
तलवाड़ा ... ... ,,
डुंगरपुर राज्य रोड़ा ,,
बांसवाड़ा अरथूणा ... ,,
डुंगरपुर आंत्री ... ,,
सन् १६१६
डुंगरपुर राज्य ऊपरगांव ,,
सन् १६१७
बांसवाड़ाराज्य नोगमा १९१७,,
सन् १६१८
उदयपुर केलवा ... ,,
बांसवाड़ा अरथूणा ... १९३
बांसवाड़ा राजनगर ... ,,
सन् १६१६
अजमेर अढाई दिन झोंपड़ी १९४
अलवरराज अजयगढ़ ... ,,
अलवर ... ... ,,
अलवर अजबगढ़ ... ,,
सन् १६२०
अजमेर पुष्करसे ... १९५
अलवर राज्यमें ... ... ,,
(१) नौगमा ... ... ,,
(२) सुन्दाना ... ... ,,
(३) खेड़ा ... ... ,,
(४) नौगमा ... ... ,,
(५) मौजपुर ... ... ,,
(६) खेड़ा १९६
(७) नौगमा ... ... ,,

(८) नौगमा १९६
(९) लक्ष्मणगढ़ ... ,,
(१०) अलवर शहर ... ,,
(११) मौजीपुर ... ,,
(१२) लक्ष्मणगढ़ ... ,,
(१३) ,, ... १९७
सिरोहीराज्य सिरोही १९७
सन् १९२१
(१) अजमेर ... ... ,,
(२) धारके बबनोर ... ,,
(३) जैपुर ... ... ,,
सिरोही राज्य ... ,,
सन् १९२२
परतापगढ राज्य ... १९८
परतापगढ़ मंदिर ... ,,
परतापगढ़ देवलिया ... ,,
,, सावदारा मंदिर ,,
,, झांमदी ... ,,
सन् १९२३
(१) चित्तौड़ ... २००
(२) महरौली ... ,,
सन् १९२४
(१) सिरोहीराज्य नांदिया २०१
(२) ,, वसंतगढ़ ,,
(३) उदयपुर दिलवाड़ा ,,
अजमेर मड़वाड़ा गजटियरसे ,,
दि० जैन डायरेक्टरीसे अवशेष।
आहार २०३
कुंडलपुर ... ... ,,
क्षेत्र कुंडलपुर ... ... ,,
प्यावला ... ... ,,
नंदावल २०४
बालनपुर ... ... ,,
बैनेड़ा ... ... ,,
चांदखेड़ी ... ... ,,
चौवलेश्वर ... ... ,,
मक्सी पार्श्वनाथ ... ,,
महोबा ... ... ,,

१६४	७	कोरता	कोरटा
१६५	१८	वारलू	वड़लू
१६६	३	जासोल	जसोल
१६८	१४	लोडवरा	लोद्रुवा
१६९	१७	मुंगथल	मुंगथला
१७०	३	पतनारायण	पाटनारायण
१७१	३	वलदा	वालदा
,,	८	कलार	कोलर
,,	११	पालदी	पालडी
,,	१५	वागिन	बागिण
,,	१९	उथमन	ऊथमन
१७२	३	जावल	जावाल
,,	५	कातन्द्री	कालन्द्री
,,	८	उदरत	उदरट
,,	१३	वरमन	वरमाणा
१७३	१२	कामद्रा	कायद्रा
१७४	१	दत्ताणी	दन्ताणी
,,	३	हणाद्री	हणाद्रा
,,	६	सणापुर	सणपुर
,,	१३	सीवरा	सीवेरा
१७६	२३	असराज	आसराज
१८०	१९	नरैना	नराणा
१८५	१६	मुकंद्वारा	मुकंदरा

मध्यप्रान्त, मध्यभारत और राजपूतानाके-
प्राचीन जैन स्मारक।

प्रथम भाग-मध्य प्रान्त।

Imperial Gazetter of India C. P. (1908).
भारतके बादशाही गजटियर मध्य प्रांत (१९०८) से जो समाचार विदित हुआ है उसको मुख्यतया ध्यानमें लेकर मध्य प्रांतका वर्णन प्रारम्भ किया जाता है। बीच २ में और पुस्तकोंका वर्णन भी आयगा। बहुतसा मसाला हरएक जिलेके गजटियर, मध्य प्रान्तका इतिहास और कौजन साहबकी रिपोर्टसे लिया गया है। जबलपुर जिलेमें रूपनाथपर महाराजा अशोकका शिला स्तंभ है जिससे प्रमाणित है कि महाअशोकका* राज्य मध्यप्रांतके इस भागमें था। सागर जिलेके एरन स्थानपर चौथी या पांचमी शताब्दीके लेखोंसे प्रगट है कि यहां मगधके गुप्तवंशके पीछे श्वेत हून तूरानियोंने राज्य किया। शिवनी और अजन्टाकी गुफाके लेखोंसे जाना जाता है कि वाकातक[1] वंशने शतपुरा और नागपुरके मैदानोंपर तीसरी

---

* यह जैन सम्राट चन्द्रगुप्त (जो श्री भद्रबाहु श्रुतकेवलीके शिष्य मुनि होगए थे) का पोता था। वह अपने राज्यके २९ वर्षतक जैनी रहा फिर बौद्ध होगया था। यह अहिंसाका प्रचारक था।

१ वाकातक जो प्रवरणपुरमें राज्य करते थे उन राजाओंके कुछ नाम "Discriptive list of inscriptions in C. P. & Berar by R. S. Hiralal B. A. 1916." नामकी

शताब्दीसे राज्य किया था। उनकी राज्यधानी चांदाके भांद्रकमें थी जो प्राचीन कालमें एक बड़ा नगर था।

वर्धा जिलेके भीतर नागपुरके कुछ भागपर सन् ई०से दो शताब्दी पहले विदर्भ या वरारके हिन्दुओंका राज्य था। यही राज्य तेलुगूके अंध्र लोगोंकि हाथमें सन् ११३में पहुंचा फिर उस पर दक्षिणके राष्ट्रकूट[१] वंशवालोंने सन् ७५० से १८०७ तक राज्य किया।

उत्तरमें हैहय राजपूतोंके कलचूरी या चेदी वंशजोंने नर्बदा नदीकी ऊपरी घाटीपर राज्य किया। इनकी राज्यधानी त्रिपुरा या करणवेल थी जहां अब जबलपुरमें तेवर ग्राम है। इस वंशवालोंने अपने लेखोंमें अपने खास सम्वत्का व्यवहार किया था। तीसरी शताब्दीमें इनकी शक्ति बहुत जमी हुई थी। जबसे नौमी शताब्दीतक इनका नाम नहीं सुन पड़ा। अंतमें इनका वर्णन सन् ११८१ के लेखमें आया है। *

पुत्रक्रम हैं वे इस तरह हैं-(१) विन्ध्यशक्ति (२) प्रवरसेन प्रथम (३) रुद्रसेन प्रथम गौतम पुत्रका बेटा, यह गौतम प्रवरसेनका पुत्र था (४) पृथ्वीसेन प्रथम (५) रुद्रसेन द्वि० (६) प्रवरसेन द्वि० (७) नरेन्द्रसेन (८) देवसेन (९) पृथ्वीसेन द्वि० (१०) हरिसेन।

१ राष्ट्रकूट वंशके बहुतसे राजा जैनधर्मके माननेवाले थे जिनमें महाराज अमोघवर्ष बहुत प्रसिद्ध हुए हैं।

*बाइबाद बम्बई प्रांतके गजटियर जिल्द २२ वींसे प्रगट होता है कि कलचुरी वंशवाले जैन थे। इनका यह पद प्रसिद्ध था। "कालंजर पराधीश्वर" अर्थात् सर्वोत्तम नगर कालंजरके स्वामी इनकी उत्पत्ति इस नगरसे विदित होती है। यह बुंदेलखण्डमें अब एक गढ़ (क़िला)

नौवींसे १३ वीं शताब्दीतक सागर और दमोह महोवाके चन्देल राजपूतोंके राज्यमें गर्भित थे। उसी समयके अनुमान असीरगढ़का वर्तमान किला चौहान राजपूतोंके हाथमें था। नर्बदा घाटीके पश्चिम शायद मालवाके परमार राज्यने ११वीं और १२वीं शताब्दीके मध्यमें राज्य किया होगा। सन् ११०४-५का एक लेख नागपुरमें है कि कमसेकम एक परमार राजा लक्ष्मणदेवने नागपुरको अपने राज्यमें मिला लिया था। छत्तीसगढ़में हैहयवंश या चेदीवंशने रतनपुरमें स्थान जमाया था और रायपुर तथा विला-

है। कनिंघम साहबकी रिपोर्ट जिल्द ९ से मालूम होता है कि नौवीं, दशवीं तथा ग्यारहवीं शताब्दीमें इस वंशकी एक बलवती शाखा बुंदेलखण्डमें राज्य करती थी जिसको चेदी भी कहते थे। इनका प्रारम्भ सन् २४९ से मालूम होता है। इनकी राज्यधानी त्रिपुरा थी जो जबलपुरसे पश्चिम ६ मील तेवर ग्राम है।

कलचूरी वंशके त्रिपुरा निवासियोंने कई दफे राष्ट्रकूटोंसे और पश्चिम चालुक्योंसे विवाह सम्बन्ध किये थे। इस कलचूरी वंशकी एक शाखा छठी शताब्दीमें कोंकण (बंबईप्रांत) में राज्य करती थी। यहांसे इनको पुलकेशी द्वि० (सन् ६१०-६३४) के चाचा चालुक्य वंशी मंगलीसने भगा दिया था।

कलचूरी लोग अपनेको हैहय वंशी कहते हैं और अपनी उत्पत्ति यदुवंशसे कार्यवीर्य या सहस्रबाहु अर्जुनसे बताते हैं।

नोट संपादकीय-मध्यप्रान्तमें जैन कलवार नामकी जाति प्रसिद्ध है। यही जाति कलचूरी वंशकी सन्तान है ऐसा मध्यप्रांत सेन्सस रिपोर्ट सन् १९११ पृष्ठ २३०में बताया गया है। ये जैन कलवार बहुत संख्यामें है। अब जैनधर्मको भूल गए हैं। आचार भी कुछ २ बिगड़ गया है।

कनिंघम साहबकी रिपोर्ट नं० ९ में कलचूरी राजाओंकी वंशावली दी हैं वह इस प्रकार है—

लपुरके जिलोंपर राज्य फैलाया था। लेख १२वीं शताब्दी तक ले जाता है। यहांसे १५वीं व १६वीं शताब्दी तकका हाल प्रगट नहीं

चेदी संवत	सन् ई०	नाम राजा
०	२४९	चेदी या कलचुरी संवत प्रारम्भ
१	२५०	काकवर्ण शिशुनागकी संतानोंमें
		मध्यके राजाओंके नाम प्रगट नहीं
२७१	५२०	शंकर गण
३०१	५५०	बुद्धराज जिसको मंगलीश चलुक्यने हराया।
		कुछ नाम बीचके नहीं प्रगट
४३१	६८०	हैहय जिसको विनयादित्य चलुक्यने हराया
४८१	७३०	हैहय वंशकी राजकुमारी लोका महादेवी जो विक्रमादित्य द्वि० चलुक्यको विवाही गई
		बीचके राजा प्रगट नहीं
६२६	८७५	कोकल्ल प्रथम कनौजके भोजका समकालीन
६५१	९००	मुग्धतुंग प्रसिद्ध धवल प्रथम
६७६	९२५	युवराज केयूरवर्ष
७०१	९५०	लक्ष्मणराज या लक्ष्मणसागर (जैसा बिल्हारी लेखमें है)
७२६	९७५	युवराज, वाक्पतिका समकालीन
७५१	१०००	कोकल्ल द्वि०
७८१	१०३०	गांगेयदेव विक्रमादित्य
७९१	१०४०	कर्णदेव
८३१	१०८०	यशःकर्ण देव
८६६	१११५	गजकर्ण या गयकर्ण देव
९०२	११५१	नरसिंहदेव
९३०	११७९	जयसिंहदेव
९३२	११८१	विजयसिंहदेव

जबलपुर जिलेमें गजटियर सन् १९०९ में जो कलचुरी राजाओंके

है। जबतक गोंदलोगोंकी शक्ति बढ़ गई थी सबसे पहला गोंद राजा बेतुलके खेरलामें था। इसका नाम १३९८में प्रगट होता है जब

नाम दिये हैं वे भी यही हैं। कुछ अन्तर हैं वह यह है कि मुग्धतुंगके पीछे बालाहर्ष है, फिर केयूरवर्ष युवराजदेव है। लक्ष्मणराजके पीछे शंकरगण (९७०) हैं फिर युवराजदेव द्वि० (९७५) है।

कनिंघम साहबने कुछ शिलालेख भी दिये हैं जिनमें चेदी या कलचूरी वंशके राजाओंके नाम आए हैं।

(१) जबलपुरसे उत्तर ३२ मील बहुरीबन्द ग्राममें एक १२ फुट ऊंची बड़ी नग्न जैन मूर्तिके लेखमें कलचूरी राजा गजकर्ण देव संवत १०XX आता है।

(२) इसके पुत्र नरसिंहदेवका लेख भेड़ाघाट पर है।

(३) बिल्हारीके प्राचीन नगरके एक शिलालेखमें चेदी वंशके हैहय राजाओंके नाम हैं। यह पाषाण नागपुरके म्यूजियममें है। वे नाम हैं—कोकल, मुग्धतुंग, केयूरवर्ष, लक्ष्मण, शंकरगण, युवराज।

कोकल्लके परतेका पोता गयकर्ण था जिसने धारके राजा उदयादित्यकी बड़ी कन्याको विवाहा था। यह भी कहा जाता है कि इस कोकल्लने दक्षिणके कृष्णराजको पराजित किया था। मैं इसे कृष्णराष्ट्रकूट समझता हूं जिसने अनुमान ८६०से ८८० ई० तक राज्य किया था। वह दंतिदुर्गा (शाका ६७५ या सन् ७५३) से पांचवी पीढ़ीमें था तथा वह कृष्ण गोविन्द राष्ट्रकूट (शाका ८५५–सन् ९३३) का परबाबा (Great grand father) भी था। राष्ट्रकूटोंके एक शिलालेखमें लिखा है कि कृष्णराजने कोकल्ल प्रथमकी कन्या महादेवीको विवाहा था। दूसरे राष्ट्रकूट लेखमें (R. A. S. J. III 102) हैं कि कृष्णके पुत्र जगतरुद्रने चेदी राजा शंकरगणकी दो कन्याओंको विवाहा था। यह शंकरगण कोकल्ल प्रथमका पुत्र था। तीसरे राष्ट्रकूट लेख (B. A. S. J. IV P. 97) में है कि इन्द्रराजने कोकल्ल प्रथमकी परपोती द्विजम्बाको विवाहा था। इस इन्द्रराजा और उसकी रानीका समय निश्चयपूर्वक उनके पुत्र गोविन्दराजके लेखसे शाका ८५५ या

खेरलाके राजा नरसिंहरायके पास (जैसा फारसी कवि फरिश्ताने कहा है) बहुत सम्पत्ति व शक्ति थी तथा गोंडवानाकी सर्व पहाड़ियां व

सन् ९३३ सिद्ध होता है। राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष रायं कोकल्ल प्रथमका परपोता अपनी माता गोविन्दम्बाकी तरफसे था तथा लक्ष्मणके ही वंशका था। मेरी सम्मतिमें वन्द्रादेवीका पिता लक्ष्मण था।

चौथे कनिंघमलाईके लेखमें युवराजदेवके पुत्र लक्ष्मण राजाका नाम आया है जिसने अनुमान ९५०से ९७५ तक राज्य किया था।

पांचवें बनारसमें राजघाटके किलेमें हैहय वंश कर्णदेवका लेख संवत ७९३ का मिला है, जिसमें चेदी राज भोंकी नीचे लिखी वंशावली है—

कार्तवीर्यदेव
|
कोकल जिसने चंदेलाकी नंदादेवीको विवाहा था।
|
प्रसिद्ध धवल
|
बालहर्ष
|
युवराजदेव
|
लक्ष्मण
|
शंकरगण
|
युवराजदेव
|
कोकल्लदेव
|
गांगेयदेव
|
कर्णदेव

नोट—कोकल्ल प्रथमने ग्वालियरमें राजा भोजके साथ संवत ९३३ या सन् ई० ८७६में युद्ध किया था। यह राजा भोज कनौजका महाराजा था जिसने सन् ८५० से सन् ८९० तक राज्य किया था तथा कोकल्ल प्रथमका राज्य सन् ८५० से ९०० तक था।

दूसरे देश थे। इस राजाने उन युद्धोंमें भाग लिया था जो मालवा और खानदेशके राजाओंके और बहमनी बादशाहोंके साथ

स० नोट—चेदी व राष्ट्रकूट वंश दोनों जैन धर्मके भक्त थे इसीसे दोनोंमें सम्बन्ध भी होते थे। कलचूरी शब्दके अर्थ होते हैं—कल=देह, देहोंका चूरनेवाला मुक्तिगामी. हैहय शब्द शास्त्रमें अहैय या अहद्दय होगा जिसका भी भाव पापोंको चूरनेवाला है। चेदीका अर्थ आत्माको चेतानेवाला. ये तीनों नाम इस वंशको जैन धर्मी सिद्ध करते हैं। "Descriptive list of inscriptions of C. P. & Berar by Hiralal B. A. 1916." नामकी पुस्तकसे विदित हुआ कि पहले जो कामवर्णसे जयसिंहदेव तक राजाओंकी सूची दी है वह त्रिपुरके कलचूरी राजाओंकी है।

रत्नपुरकी शाखाके कलचूरी राजाओंकी सूची नीचे प्रमाण है, इनको महाकौशलके हैहय वंशी भी कहते थे—

(१) कलिंगराज त्रिपुरके कोकल्ल द्वि० का पुत्र (२) कमल (३) रत्नराज या रत्नदेव (४) पृथ्वीदेव (५) जाजल्लदेव सन् १११४ ई० (६) रत्नदेव द्वि० (७) पृथ्वीदेव द्वि० ११४५ (८) जाजल्लदेव द्वि० ११६८ (९) रत्नदेव तृ० ११८१ (१०) पृथ्वीदेव तृ० ११९० (११) भानुसिंह १२०० (१२) नरसिंहदेव १२२१ (१३) भूसिंहदेव १२५१ (१४) प्रतापसिंहदेव १२७६ (१५) जयसिंहदेव १३१९ (१६) धर्मसिंहदेव १३४७ (१७) जगन्नाथसिंह १३६९ (१८) वीरसिंहदेव १४०७ (१९) कमलदेव १४२६ (२०) शंकरसहाय १४३६ (२१) मोहनसहाय १४५४ (२२) दादूसहाय १४७२ (२३) पुरुषोत्तमसहाय १४८७ (२४) बाहरसहाय या बाहरेन्द्र १५१९ (२५) कल्याणसहाय १५४६ (२६) लक्ष्मणसहाय १५८३ (२७) मुकुन्दसहाय १५९१ (२८) शंकरसहाय १६०६ (२९) त्रिभुवनसहाय १६१७ (३०) जगमोहनसहाय १६३२ (३१) आदितिसहाय १६४५ (३२) रंजीतस० १६५९ (३३) तख्तसिंह १६८५ (३४) रायसिंहदेव १६८८ (३५) सरदारसिंह १७२० (३६) रघुनाथसहाय १७३२।

हुए थे । मालवाके होशंगशाहने इसके देशपर आक्रमण किया तब नरसिंहराय हार गया और मारा गया । १६ वीं शताब्दीमें गढ़ मांडलाके गोंद वंशके ४७ वें राजा संग्रामशाहने अपना राज्य परगनों या जिलोंमें जमा लिया था, जिनमें सागर, दमोह, भोपाल, नरबदाघाटी, मांडला और शिवनी भी गर्भित थे । ऐसा निश्चय होता है कि मांडलाका यह वंश सन् ई० ६६४ के अनुमान प्रारंभ हुआ था तब जादोराय राज्य करता था । यह प्राचीन गोंद राजाका सेवक था । इसने उसकी कन्या विवाही और राज्याधिकारी होगया । सन् १४८० के संग्रामशाहके होने तक यह वंश एक छोटा राजासा बना रहा । इसके २०० वर्ष पीछे गोंदराजा बख्त बुलन्द "जिसकी राज्यधानी छिंदवाड़ामें देवगढ़ र थो" दिहली गया था और उसने वहांका ऐश्वर्य देखकर अपने राज्यको उन्नत करना चाहा । इसने नागपुर नगर बसाया जो उसके पीछे राज्यधानी होगया । देवगढ़ राज्यका विस्तार बेतुल, छिंदवाडा, नागपुर, शिवनीका भाग, भंडारा और बालाघाट तक था । दक्षिणमें कोटसे घिरा नगर चांदा

रायपुर शाखाके चेदी राजा—

(१) लक्ष्मीदेव (२) सिंहाना (३) रामचन्द्र (४) ब्रह्मदेव सन् १४०२ ई० (५) केशवदेव १४२० (६) भुवनेश्वरदेव १४३८ (७) मानसिंहदेव १४६३ (८) सन्तोषसिंहदेव १४७८ (९) सुरतसिंहदेव १५०८ (१०) भरतसिंहदेव १५१८ (११) चामुंडसिंहदेव १५२८ (१२) वंशीसिंहदेव १५६३ (१३) धनसिंहदेव १५८२ (१४) जैतसिंहदेव १६०३ (१५) फत्तेसिंहदेव १६१५ (१६) यदुदेव १६३३ (१७) सोमदत्तदेव १६५० (१८) बल्देवसिंहदेव १६६३ (१९) उमेदसिंहदेव १६८५ (२०) बनवीरसिंहदेव २७१५ (२१) अमरसिंहदेव १७३८ ।

एक दूसरे वंशका स्थान था जो १६ वीं शताब्दीमें प्रसिद्ध था तब एक राना बाबाजी वल्लालशाहने देहलीकी मुलाकात ली थी। इस चांदा राज्यमें बरारका भाग मिला हुआ था।

संग्रामशाहके उत्तराधिकारीके राज्यमें मुसलमान उत्तरसे आए। इसकी विधवा रानी दुर्गावतीको मुगल सेनापतिने सन् १५६४ में हराया और मार डाला।

स० नोट—इसके पीछे मुसलमान राज्यके इतिहासकी जरूरत नहीं है। यहां तकका वर्णन इसलिये किया गया है कि जैन मंदिरोंमें जो प्रतिमाएं विराजमान हैं उनके लेखोंका संग्रह होनेसे इनमेंसे बहुतसे राजाओंके नाम मिल जानेकी संभावना है जिससे इतिहासपर बहुत प्रभाव पड़ेगा।

पुरातत्व—उत्तरके जिलोंमें बहुत स्थानोंमें प्राचीन और नवीन जैन मंदिर हैं जिनमें प्राचीन मंदिर अब लगभग नष्टप्रायः हो गए हैं। परन्तु उनके छितरे हुए खंड यह बताते हैं कि ये बहुत सुन्दर बने थे। वर्तमान जैन मंदिरोंका समूह कुंडलपुर (दमोह) में बहुत उपयोगी है जिनकी संख्या ५०से अधिक होगी।

(१) जबलपुर विभाग।

[१] सागर जिला।

इसकी चौहद्दी यह है—उत्तरमें झांसी, पन्नाराज्य, बिजावर, चरखारी; पूर्वमें पन्ना और दमोह; दक्षिणमें नरसिंहपुर, भोपाल; पश्चिममें भोपाल और ग्वालियर। इस जिलेमें ३९६२ वर्गमील भूमि है।

इतिहास—सागर नगरसे उत्तर ७ मील गढ़ी पाहरी है जिसको गोंड राजाने बसाया था। गोंडोंके पीछे अहीरोंने (जिनको फौलादिया कहते हैं) रेहलीमें किला बनाया। अनुमान १०२३ सन्‌के जालौनके एक राजपूत निहालसाने अहीरोंको हटा दिया तथा सागर व दूसरे स्थान लेलिये। निहालसाके वंशवालोंने करीब ६०० वर्षों तक राज्य किया परन्तु महोवाके चंदेलोंने उनको परास्तकर अपनाकर दाता बना लिया था। चंदेल राजाओंके दो वीर आल्हा और ऊदल बहुत प्रसिद्ध हुए हैं। इनकी प्रशंसामें जो गीत हैं उनमें इनकी प्रसिद्धि ५२ युद्धोंमें बताईगई है।

महोवाके एक किसी डांगी सर्दार उदनशाहने सन् १६६०में सागर बसाया। इसने नगरका परकोटा बनाया। उदनशाहके पोते पृथ्वीजीतको प्रसिद्ध बुन्देलाराजा छतरशाहने हटा दिया परंतु जैपुरके राजाने फिर स्थापित किया, तथापि कुर्वईके मुसलमान सर्दारने फिर हटा दिया। तब वह बिलहरामें चला गया जहां उसके वंशजोंके पास बिलहरा और दूसरे ४ ग्राम विना मालगुजारीके अभीतक पाए जाते हैं। सन् १७२९ में मराठा पेशवा बाजीरावके भतीजेने

यह ध्वंश स्थान है। यहां एक ऊँची मीनार १०० फुट ऊँचाई पर है। भूमि १९ फुट वर्ग हर तरफ है। इसको राजा मर्दानसिंहने अपनी स्त्रीकी इच्छासे सागर और दमोहको देखनेके लिये बनाया था।

(६) सागर—यहां जैनियोंके कई मंदिर हैं। १९०१ में संख्या १०२७ थी। यहांकी बड़ी झीलको जिसको सागर कहते हैं लक्खा बंजाराने बनवाया था।

कोज़िन साहबकी रिपोर्ट सन् १८९७ से नीचेका हाल विदित हुआ।

(७) मदनपुर—सागर और ललितपुरके मध्यमें प्राचीन नगर है। यहां छः प्राचीन ध्वंश मंदिर हैं जिनमें नगरके उत्तरकी ओर सबसे पुराने तीन जैन मंदिर हैं। झीलके उत्तर पश्चिम दो व उत्तर पूर्वमें एक है। यहां संवत् १२१२ से १६९२ तकके कई शिलालेख हैं।

—⊱✲⊰—

[२] दमोह जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है-पश्चिममें सागर; दक्षिणपूर्व नरसिंहपुर, जबलपुर; उत्तरमें पन्ना और छतरपुर राज्य। यहां भूमि २८१६ वर्गमील है। यह जिला १०वीं शताब्दीमें महोबाके चन्देल राजाओंके राज्यमें शामिल था। चंदेलोंके बनवाए पुराने मंदिर हैं। १३८३में यह देहलीके तुगलकोंके हाथमें था। यहांके स्थान जानने योग्य हैं।

(१) कुंडलपुर—पहाड़ी। दमोहसे पूर्व २० मील। यहां ५२

दि० जैन मंदिर हैं। यहां श्री महावीरस्वामीकी बृहत् मूर्ति बहुत ही मनोज्ञ व दर्शनीय है जिसका आसन ४ फुट ऊंचा है व मूर्ति १२ फुट ऊंची है। यहां २४ लाइनका शिलालेख है जो १७०० सन्‌का पन्नाके बुन्देल राजा छत्रसालके समयका है। पहाड़ीके नीचे जो सरोवर है उसको वर्द्धमान सरोवर कहते हैं। यह सं० १७१७ का है। यह जैनियोंका माननीय क्षेत्र है। ग्राममें बड़ा भारी जैन मेला प्रतिवर्ष लगता है। दमोहके परवार जैनी इसके अधिकारी हैं।

(२) नोहटा—दमोहसे दक्षिण पूर्व १३ मील। यह पहले १२ वीं शताब्दीमें चंदेलोंकी राज्यधानी थी। यहां जैन मंदिरोंके बहुत खँडहर हैं। स्तंभ व खँड ग्राममें मिलते हैं। जैन मूर्तियां भी यत्र तत्र पड़ी हैं। इनमें श्री चन्द्रप्रभ भगवानकी मूर्ति भी है। एक जैन मंदिर ग्रामके दक्षिण १ मील दूर सड़कपर है जो बहुत पुराना है।

(३) सिंगोरगढ़—दमोहसे दक्षिण पूर्व २८ मील। यह एक पहाड़ी किला है। जबलपुर-दमोहकी सड़कपर सिंग्रामपुर ग्रामसे ४ मील है। महोबाके चंदेलराजा वेलाने बनाया परन्तु कनिंघम साहब ८ लाइनके चौकोर खंभेके लेखपरसे इसे गजसिंह प्रतिहर या परिहर राजपूत द्वारा बनाया गया है ऐसा कहते हैं। उस लेखमें है कि गजसिंह दुर्गादेव संवत् १३६४ व सन् १३०७ है। यह परिहर राजपूत हैहय राजपूतोंके कलचूरी या चेदी वंशकी सन्तान थे।

[३] जबलपुर जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरपूर्व मैहर, पन्ना, रीवां राज्य; पश्चिम दमोह; दक्षिण नरसिंहपुर, सिवनी, मांडला। यहां ३९१२ वर्गमील भूमि है। इतिहास—जबलपुरसे थोड़ी दूर जो तिवार ग्राम है वही प्राचीन नगर त्रिपुरा या करणवेलका स्थान है जो कलचूरी राज्यकी राज्यधानी था। (देखो शिलालेख जबलपुर, छत्तीसगढ़ और बनारस कनिंघम रिपोर्ट नं० ९) ये हैहय राजपूतसे सम्बन्ध रखते हैं। इस वंशकी एक शाखा रतनपुरमें थी जो छत्तीसगढ़ पर राज्य करती थी। इस वंशके राजाओंका युद्ध कन्नौजके राठौड़ व महोबाके चंदेल तथा मालवाके परमारोंके साथ हुआ है। जबलपुरमें पहले अशोकका राज्य था। फिर तुंग वंशने ११२ वर्ष तक सन् ई०से ७२ वर्ष पहलेतक राज्य किया। फिर अंध्रोंने सन् २३६ तक, फिर गुप्तोंने जो परिव्राजक महाराज कहलाते थे। इनके राजाओंके ६ लेख सन् ४७५ और ५२८ के मध्यके पाए गए हैं।

जबलपुरको पहले दाहल या दमाला भी कहते थे। कलचूरी वंशका सबसे पुराना वर्णन ५८० सन्के बुद्धराजके लेखमें है। अनुमान १९ वीं शदीके यह गोंदराजाओंके अधिकारमें था। यह गढ़ी मांडलाका वंश था। राज्यधानी गढ़ी थी। १७८१ में मरहठोंने कबजा किया।

पुरातत्व—रीढ़ी, छोटा देवरी, सिमरा, पुरेनी, तथा नांदचन्दमें पुराने स्थान हैं। बड़गांवके ध्वंश स्थान जैनियोंके हैं। बहरी बंद, रूपनाथ व तिगवानके ग्रामोंमें भी प्राचीन स्थान हैं।

बहुरीवन्द एक प्राचीन नगर था जिनको कनिंघमने Tolemy टोलेमीका कहा हुआ थोलावन Tholaban नाम बताया है। तिवारमें प्राचीनताका चिह्न एक बड़ी नग्न जैन मूर्ति है जिसपर कलचूरी वंशका लेख है। तिगवान एक छोटा नगर बहरीबंदसे २ मील है। इसमें बहुतसे प्राचीन मंदिरके खण्डहर हैं जिनको रेलवेके ठेकेदारोंने नष्ट कर दिया है। रूपनाथमें अशोकका स्तंभ है। यहांके कुछ स्थानोंका वर्णन यह है—

(१) जबलपुर शहर—यहां कुछ जैन मूर्तियें खुरशैदजी कंपनीके बागमें एक मकानमें लगा दी गई है। इनकी खुदाई बहुत बढ़िया है। शहरको ४ मील गढ़ी है जो गोंद वंशकी राज्यधानी थी। इनका प्राचीन किला मदनमहल है जो कि टीला है। इसके नीचे मदनमहल नामका बड़ा नगर बसता था। इसको मदनसिंहने सन् ११००में बनवाया था। नागपुर म्यूजियममें एक लेखमें जबलपुरका नाम जबलीपाटन भी आया है।

(२) बहरीबंद—तहसील सिहोरा-सलामाबाद रेलवे स्टेशनसे पश्चिम १२ मील। यहां नगरके पास एक पीपल वृक्षके नीचे एक बड़ी जैन मूर्ति है जो १२ फुट २ इंच ऊंची है। आसनपर ७ लाइनका लेख है (कनिंघम रिपोर्ट नं० ९ पत्रे ३९) ३ री चौथी लाइन नष्ट होगई है। वह लेख जो पढ़ा या वह यह है—ल० १—संवत १०XX फाल्गुण वदी ९ सोम श्रीमत् जयकर्णदेव विजय रा—

ल० २—जो राष्ट्रकूट कुलोद्भव महासमंताधिपति श्रीमद् गोल्हान देवस्य प्रवर्द्धमानस्य।

ल० ३—श्रीमद् गोल्हणथी........मय........—

आलोंमें कुछ बढ़िया मूर्तियें विराजित हैं जिनमें एक जैनधर्मकी है। ऊपर तीर्थंकर हैं नीचे एक स्त्री है जिसकी भुजाओंमें एक बालक है जिसके नीचे एक लेख है उसमें लिखा है कि मानदित्यकी स्त्री मोना नित्य प्रणाम करती है—अक्षर १०वीं शताब्दीके हैं।

नं० नोट—ऐसी मूर्तियां मानभूम जिले विहारमें कई स्थानोंमें देखी गई हैं। देखो (प्राचीन जैन स्मारक बंगाल, विहार, उड़ीसा पृष्ठ ९१) तथा एक मूर्ति राजशाही (बंगाल) के वरेन्द्ररिसर्च इंस्टीट्यूटके मकानमें विराजित है (देखो बंगाल वि० उड़ीसा प्राचीन जैन स्मारक पृष्ठ १३१)

कनिंघमसाहबकी रिपोर्ट नं० ९से नीचेका हाल विदित हुआ।

(८) भूमार—उचहरासे पश्चिम ९ मील उंचाईपर बसा है। यहां एक प्रसिद्ध स्तंभ है जो गाढ़े लाल बालू पाषाणका है जिसको ठाढ़ा पत्थर कहते हैं इसके नीचे भागमें गुप्त समयके अक्षरोंका ९ लाइनका लेख है जिनमें भिन्न२ वंशके दो राजाओंके नाम हैं उनमेंसे एक उचहराके ताम्रपत्रके प्रसिद्ध राजा हस्तिन् हैं और दूसरे करीतलाईके ताम्रपत्रके राजा जयनाथके पुत्र सर्व्वनाथ हैं।

ये दोनों राजा समकालीन थे—इन राजाओंके नाम नीचे लिखे ९ शिलालेखोंमें आए हैं।

नं०	नाम राजा	गुप्त संवत	कहां रक्खे हैं
१	राजा हस्तिन्	१५६	बनारस कालेज
२	,,	१७२	अलाहाबाद म्यूजियम
३	राजा जयनाथ	१७४	कनिंघम साहबके पास

४	राजा जयनाथ	१७७	राजा उचहराके पास
५	राजा हस्तिन्	१९१	राजा उचहराके पास
६	,, सर्वनाथ	१९७	,,
७	,, संखभ	२०९	,,
८	,, सर्वनाथ	२१४	कनिंघम साहबके पास
९	राजा हस्तिन् और सर्वनाथ		भूमारके स्तम्भपर

नं० ८के शिलालेखमें पृष्ठपुरी नाम आया है।

(२) पटैनीदेवी—पिथौराकी बड़ी देवी जिसको आजकल पटैनीदेवी कहते हैं। इसकी ४ भुजाएं हैं व साथमें बहुतसी नग्न मूर्तियां हैं जिससे यही समझमें आता है कि यह जैन देवी होनी चाहिये। समुद्रगुप्तके एक शिलालेखमें पृष्टपुरक, महेन्द्रगिरिक, उछारक और स्वामीदत्त नाम हैं। इनमें पहले तीन क्रमसे पिथौरा, महियर और उछहराके लेखोंसे मिलते हैं यह पटेनीदेवी उछहरासे ८ मील है व पिथौरासे पूर्व ४ मील है। इस देवीके चारों तरफ मूर्तियां हैं। ५ ऊपर, ७ दाहनी, ७ वाईं व ४ नीचे सर्व २३ हैं। इस देवीकी चार भुजाएं टूट गई हैं, इनके पास नाम भी १०वीं व ११वीं शताब्दीके अक्षरोंमें लिखे हैं। जो मूर्तियां ५ ऊपर हैं उनपर नाम हैं बहुरूपिणी, चामुराड, पद्मावती, विजया और सरस्वती। जो सात बाईं तरफ हैं उसके नाम हैं अपराजिता, महामूनसी, अनन्तमती, गंधारी, मानसिज्ाला, मालनी, मानुजी तथा जो सात दाहनी तरफ हैं उनके नाम हैं जया, अनन्तमती, वैराता, गौरी, काली, महाकाली और वृंनसकला। (नीचेके ४ नाम इस रिपोर्टमें नहीं लिखे हैं)। द्वारपर बाहर तीन मूर्तियां पद्मासन हैं।

मध्यकी छत्रसहित श्री आदिनाथजीकी है। आसनपर बैलका चिन्ह हैं, दाहनी व बाईं तरफकी मूर्तियोंके आसनपर सर्पके चिन्ह हैं तथा दाहनी मूर्तिपर सात फण व बाईंपर पांच फण हैं। ये तीन मूर्तियां प्रगटरूपसे जैनकी हैं इससे मुझे पक्का विश्वास होता है कि यह पटेनीदेवी जैनियोंकी है। "I feel satisfied that the enshrined goddess must belong to Jains." इस देवीके दोनों तरफ कायोत्सर्ग आसन नग्न जैन मूर्तियोंकी दो लाइनें हैं। ये अवश्य जैनकी हैं, यह मंदिर लेखके समयसे बहुत पुराना है। (कनिंघम रिपोर्ट नं० ९)

सं नोट-मालूम होता है कि मध्यमें देवीकी मूर्ति न होकर किसी तीर्थंकरकी जैन मूर्ति होगी जिसे देवी मान लिया गया है। इसकी जांच अच्छी तरह होनी चाहिये।

(१०) बिलहारी-प्राचीन नगर-कटनीसे पश्चिम १० मील भरहुत और जबलपुरके मध्यमें प्राचीन नाम पुष्पवती है। यहां राजा गोविंदराव संवत ९१९ या सन् ८६२में राज्य करते थे।

(११) रूपनाथ-बहुरीबन्दसे दक्षिणपश्चिम १३ मील तथा सलेमाबाद स्टे०से पश्चिम १४ मील। यहां राजा अशोकका शिला-स्तम्भ है।

(१२) भरहुत-यहां बौद्ध स्तूप है। यह जबलपुर और अलाहाबादके मध्यमें है। सतना और उछहराके मध्य रेलसे २ मील करीब है। अलाहाबादसे १२० व जबलपुरसे १११ मील है।

(४) मांडला जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरपश्चिम जबलपुर, उत्तर पूर्व रीवां, दक्षिण और दक्षिण पश्चिम—बालाघाट व सिवनी, दक्षिणपूर्व विलासपुर और कबर्धा राज्य। यहां ५०५४ वर्गमील स्थान है।

यहां गढ़ी मांडलावंशने रामनगरके महलमें पांचवीं सदीमें राज्यप्रारम्भ किया तब जादोराय राजपूतने जो गोंद राजाका सेवक था उसकी कन्याको विवाहा और उसके पीछे राजा हुआ। इस वंशमें अंतिम राजा संग्रामसिंह सन् १४८०में हुआ। दुर्गावतीकी वीरता—सन् १५६४ में जब असफखांने चढ़ाई की तब उसकी रानी दुर्गावती जो अपने छोटे बच्चेकी प्रतिनिधिरूपसे राज्य करती थी निकली और सिंगोरगढ़के किलेके पास युद्ध किया। पराजित होनेपर वह मांडलामें गढ़के पास आई और उसने अपना दृढ़ बल प्रगट किया। वह हाथीपर चढ़कर युद्ध करने लगी। इसने अपनी सेनाको वीरता दिखानेको प्रेरित किया। स्वयं सेनापतिका काम किया—उसकी आंखमें लाल घाव होगया तब भी उसने पीछा न दिखाया। अन्तमें जब उसने देखा कि उसकी सेना असमर्थ होगई तब उसने अपने हाथीके महावतसे कटार लेकर अपनी छातीमें मारी और वह मर गई। फिर मुसल्मानोंका राज्य हो गया।

इसका प्राचीन नाम महिषमंडल या महिषावती संस्कृत साहित्यमें आता है। यह राजा कार्त्तवीर्यका राज्यस्थान रहा है।

(१) कर्करामठ मंदिर—तहसील डिन्डोरी, डिन्डोरीसे १२ मील। यहां किसी समय पांच मंदिर थे उनमेंसे एक मौजूद हैं।

यह विना गारेके फटे हुए पाषाणोंसे बना है और अन्य ध्वंश स्थानोंकी तरह यह भो शायद जैनियोंका ही कार्य है। यहां बहुत सुन्दर शिल्पकी जैन मूर्तियां हैं। डिन्डोरीसे ९ मीलपर भी दक्षिण और नौमीसे १३ वीं शताब्दीके मध्यके जैन मंदिर हैं।

(२) देवगांव—नर्वदा नदी और बुढ़नेरके संगनपर मांडलासे उत्तर पूर्व २० मील वहां भी प्राचीन मंदिर हैं।

(३) रामनगर—यहां आठ राजाओंका राज्य होरहा है—यहां भी कुछ ध्वंश स्थान हैं।

[५] सिवनी जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तर—नरसिंहपुर, जबलपुर, पूर्व—मांडला, बालाघाट और भंडारा, दक्षिण—नागपुर, पश्चिम—छिंदवाड़ा—यहां ३२०६ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास—सिवनीमें एक ताम्रपत्र मिला है जिससे जाना जाता है कि शतपुरा पहाड़ीके मैदान पर वाकतक वंशके राजाओंकी एक शाखा तीसरी शताब्दीसे राज्य कर रही थी—उसमें वंश संस्थापकका नाम विंध्यशक्ति है—ऐसे ही लेख अजन्ताकी गुफाओंमें हैं।

पुरातत्त्व—तालुका सिवनीके घनसोर स्थानपर बहुतसे जैन मंदिर हैं। सिवनीसे २८ मील आष्टामें वरघाटपर तीन मंदिर पाषाणके हैं। ऐसे ही लखनादोन पर हैं। कुरईके पास बीसापुरमें गोंद राजा भोपतकी विधवा सोना रानीका बनवाया हुआ पुराना मंदिर है। मुख्य स्थान ये हैं।

(१) चावरी—तहसील सिवनी, यहांसे दक्षिण पश्चिम ६

(२) नर्बदा विभाग।

[६] नरसिंहपुर जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है–उत्तर–भूपाल, सागर, दमोह, जबलपुर, दक्षिण–छिंदवाड़ा, पश्चिम–हुशंगाबाद, पूर्व–सिवनी और जबलपुर। यहां १९७६ वर्ग मील स्थान है—

यहांके मुख्य स्थान हैं–

(१) बरहटा–नरसिंहपुरसे दक्षिण पूर्व १४ मील। यहां बहुतसे प्राचीन पाषाण स्तंभ व मूर्तियें मिली थीं इनमें कुछ नरसिंहपुरके टाउनहालके बागमें हैं और कुछ मूर्तियें वहांपर हैं वे जैन तीर्थंकरोंकी हैं। यह बहुत प्राचीन स्थान है–ये दि० जैनकी मूर्तियां कुछ बैठे कुछ खड़े आसन हैं। वर्तमानमें वहां ६ ऐसी मूर्तियें हैं। एक पर चंद्रका चिन्ह है इससे वह चंद्रप्रभु भगवानकी है। वहांके हिन्दू लोग इनको पांच पांडव और कृष्ण मानकर पूजते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि इनके पूजनेसे पशुओंके रोग, शीतला, व दूसरे संक्रामक रोग चले जाते हैं। यहां वैशाख सुदीमें एक सप्ताहतक मेला भरता है। प्रबन्ध जबलपुरके राजा गोकुलदास करते हैं। ये मूर्तियें एक छोटे घेरेमें विराजित हैं। सबसे बढ़िया मूर्तियें यात्री लोग बर्लिन और वरसाको यूरोपमें लेगए।

Best of sculptures said to have been taken to Berlin and Warsa by travellers.

(२) तेंदूखेडा–तालुका गाडरवारा। नरसिंहपुरसे उत्तर पश्चिम २२ मील। यहां एक जैन मंदिर है जिसमें पत्थरकी खुदाई

अच्छी है। प्राचीनकालमें यह लोहेकी कारीगरीके लिये प्रसिद्ध था। पासमें लोहेकी खानें थी। ग्राममें बहुत लुहार काम करते थे अब बहुत कम लोहा निकलता है। यह कारीगरी अब मर गई है।

[७] हुशंगाबाद जिला।

इसकी चौहद्दी है, उत्तरमें भूपाल इन्दौर, पूर्वमें नरसिंहपुर, पश्चिममें नीमाड़ दक्षिणमें छिंदवाड़ा, बेतूल और बरार।

यहां ३६७६ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास—यहां राष्ट्रकूटोंका एक ताम्रपत्र मिला है। जिसमें लिखा है कि राष्ट्रकूट राजा अभिमन्युने पंच मढीसे ४ मील पेठं पंगारकमें स्थित दक्षिण शिवके मंदिरको उन्तिवातक नामका ग्राम भेटमें दिया। सातवीं शताब्दीमें रीवां राज्यके नैनपुरमें राष्ट्रकूट वंश स्थापित हुआ। राठोर राजपुत यही राष्ट्रवंशी राजा हैं।

पुरातत्व—यहां भिन्न २ स्थानोंपर कुछ मूर्तियां मिली हैं। सबसे अधिक उपयोगी एक मूर्ति श्री पार्श्वनाथजीकी फणसहित जैन मूर्ति है जो सन्खेरामें मिली व दूसरी एक बड़ी मूर्ति सुहागपुरमें मिली है।

(१) सुहागपुर—हुशंगाबादसे ३२ मील पूर्व है। इसका प्राचीन नाम शोणितपुर है राजा भोजके भाई मुंजने अपनी राज्यधानी उज्जैनसे बदलकर यहां स्थापित की।

(२) टिमरणी—ष्टे० G. I. P. हुशंगाबादसे ५१ मील है। यहां एक खंडित जैन मूर्ति संवत १२६५ या सन् १२०८ की है।

[८] नीमाड जिला ;

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है । उत्तरमें इंदौर, धार, पश्चिममें इन्दौर, खानदेश, दक्षिणमें खानदेश, अमरावती और अकोला, पूर्वमें हुशंगाबाद और बेतूल । यहां पहाड़ी और मैदान बहुत है ।

इतिहास—सन् ५८१ तक यहां गुप्त और हूनोंने राज्य किया फिर थानेश्वर और कन्नौजके वर्द्धन वंशने सन् ६४८ तक फिर वाकतक राजाओंने राज्य किया, जिनके लेख अजन्टाकी गुफा, अमरावती, सिवनी और छिंदवाड़ामें मिलते हैं । नौमीसे १२ वीं शताब्दी तक धारके परमारोंने राज्य किया । यहां सबसे प्राचीन शिलालेख परमार राजाओंका नानवातामें मिला है इसमें लिखा है कि सन् १०५५ में परमार या पंवार राजा जयसिंहदेवने अमरेश्वरके ब्राह्मणको एक ग्राम भेटमें दिया । दूसरा शिलालेख सन् १२१८का हरसूदमें मिला जिसमें धारके राजा देवपाल देवका नाम है । तीसरा मिद्धवरके मंदिरमें १२२५ का मिला जिसमें देवपालदेवका नाम है । वहीं एक और मिला सन् ११२६ का जिसमें राजा जयवर्मनका नाम है । सातवां परमार राजा भोज बहुत प्रसिद्ध हुआ है जो राजा मुंजका भतीजा था । राजा भोज सन् १०१० ई० में प्रसिद्ध हुए । इसने ४० वर्ष तक राज्य किया ।

यहांके प्राचीन स्थान हैं ।

(१) खंडवा—प्राचीनकालमें जैन समाजका प्रसिद्ध स्थान रहा है । बहुतसे सुन्दर पाषाण जो जैन मंदिरोंसे लाए गए हैं शहरके मकानोंमें दिखाई देते हैं । टोलैमीने इसका नाम कोग्नबन्द

लिखा है। अरबके विद्वान अलबेरुनीने इसे ११ वी १२ वीं शताब्दीमें खंडवाहो लिखा है, तथा बताया है कि यह जैन पूजाका महान स्थान था।

यह १५१६में मालवाकी राज्यधानी थी इसे जसवंतराव होलकरने सन् १८०२ में जला डाला फिर सन् १८५८ में इसे तांतियाटोपीने जलाया। जैन पाषाण चार सरोवरोंमें मिलते हैं–रामेश्वरकुंड, पद्मकुंड, भीमकुंड और सूर्यकुंड। सबसे बढ़िया जैन मूर्त्तियें पुराने खंडवाके किलेमें पद्मकुंड पर मिलती हैं (कनिंघम जिल्द ९ पृ० ११३)

(२) बरहानपुर–यह १६३९ में बहुत बड़ा नगर था Tavernier टेवरनियर यात्री सूरतसे आगरा जाते हुए सन् १६४१ और १६५८में इस नगरमें होकर गया था। वह लिखता है–

" In all the province an enormous quantity of very transparent muslins are made, which are exported to Persia, Turkey, Muscovie, Poland, Arabia, Grand Cairo & other places, some are dyed with various colours and with flowers. "

भावार्थ–सब प्रांतभरमें बहुत महीन मलमलें बहुत अधिक बनती हैं जो यहांसे फारस, टर्की, मस्कौ, पोलेंड, अरब, महानकैरो और दूसरे स्थानोंपर भेजी जाती हैं। कुछमें नाना प्रकारके रङ्ग दिये जाते हैं कुछमें फूल बनाए जाते हैं।

(३) असीरगढ़ किला–तहसील बरहानपुर, खण्डवासे २९ व बरहानपुरसे १४ मील है। चांदनी रेलवे स्टेशनसे ७ मील। यह एक पहाड़ी है जो ८५० फुट ऊँची है। यहां कई राजपूत

वंशोंने राज्य किया है। एक प्राचीन जैन मंदिरका स्तम्भ खोदनेसे मिला है, जिससे प्रगट होता है कि यह शायद उसी जैन वंशके हाथमें था जिनके प्राचीन मकान खण्डवामें बनाए गए थे। इस स्तंभपर पांच राजाओंके नाम हैं। उपाधि वर्मा है, जिनमेंसे दोने गुप्त राजाओंकी कन्याएं १० वीं या ११ वीं शताब्दीके अनुमान विवाही थीं। किलेका नाम आसा या आसापूरणीसे या शायद असी या हैहय राजाओंके वंशकी प्राचीन उपाधिसे निकला हो। ये हैहय राजा इस देशमें महेश्वरसे लेकर नर्बदा तटपर सन् ई० ९००के पहलेसे राज्य करते थे। (Tod's Vol. II. P. 442). इस असीरगढ़की चट्टानों तथा मकानोंपर बहुतसे लेख हैं (C. P. Antiquarian journal No. II)

(४) मानधाता—तालुका खंडवा, यहांसे ३२ मील, मोरटक्का ष्टेशनसे पूर्व ७ मील। पहाड़ीके ऊपर प्राचीन ऐश्वर्ययुक्त वस्तीके चिह्न रूप ध्वंश किले व मंदिर हैं। मुख्य मंदिर सिद्धनाथका है। ओंकारजीका मंदिर हालका बना है परन्तु जो बड़े २ स्तम्भ इसमें लगे हैं कुछ प्राचीन इमारतोंसे लाए गए हैं। नदीके उत्तर तटपर कुछ वैष्णव और जैनके मंदिर हैं। मानधाताके राजा भीलाल हैं जो अपनी उत्पत्ति चौहान राजपूतोंसे बताते हैं। चौहानोंने इसे भील सर्दारसे सन् ११६९ में ले लिया था।

सिद्धवरकूट—पहाड़ीपर प्राचीनकालमें स्थित पुराने जैन मंदिरोंके ध्वंश स्थान हैं। अब जैन जातिने मंदिरोंका नवीन दृश्य प्रगट कराया है। प्राचीन मंदिरमें कुछ मूर्तियोंपर ता० १४८८ हैं। बहुतसी मूर्तियां श्री शांतिनाथ भगवानकी हैं। पर्वतकी चोटीपर

किसी गोहाना' के पास तीन ताम्रपत्र सन् ७०९ के हैं, जिसमें राष्ट्रकूट राजा नंदराज द्वारा-एक ब्राह्मणको ग्राम दानका वर्णन है।

(१) कजली कनोजिया—तहसील मुलताई। छिंदवाड़ा जानेवाली सड़कपर बिदनूरके पूर्व २४ मील वेल नदीपर मंदिरोंके ध्वंश हैं उनमें जैन मूर्तियां अच्छी कारीगरी की हैं। उनमेंसे कुछ नागपुर म्यूजियममें गई हैं।

(२) श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र—वर्तमानमें जैन यात्रीगण एलिचपुर होकर जाते हैं जहां मुर्तजापुर (बरार प्रांत) से रेल गई है। एलिचपुरसे ६ मीलके अनुमान है। यह पर्वत बहुत मनोहर है पानीका झरना वहता है। ऊपर वहुतसे दिगम्बर जैन मंदिर हैं उनमें बहुतसोंमें प्राचीन मूर्तियें हैं। वार्षिक मेला होता है। यहांसे ३॥ करोड़ मुनि भिन्न २ समयमें इस कल्प कालमें मोक्ष पधारे हैं। जिसका आगम प्रमाण यह है।

प्राकृत—अच्चलपुर वर णयरे ईसाणे भाए मेढ़गिरि सिहरे।
आहुट्ठयकोडीओ णिव्वाण गया णमो तेसिं॥ १६॥
(प्राकृत निर्वाणकांड)

अचलापुरकी दिशा ईशान, तहां मेढ़गिरि नाम प्रधान।
साढ़ेतीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूं चित लाय॥१८॥
(भैया भगवतीदास कृत)

इसके प्रबंधकर्ता सेठ लालासा मोतीसा एलिचपुर हैं। हीरालाल बी० ए० कृत सी० पी० लेख पुस्तक १९१६ में सफा ७९ पर दिया है कि यह मुक्तागिरि बदनूरसे ६७ मील है। जैनियोंका पवित्र तीर्थ है। ऊपर ४८ मंदिर हैं जिनमें ८९ मूर्तियां

हैं। नीचे नए बने मंदिरमें २९ मूर्तियां हैं जो सन् १४८८ से १८९३ तककी हैं। कुछ मंदिरोंमें उनके जीर्णोद्धार किये जानेके लेख हैं। एकमें सन् १६३४ है। हालमें एलिचपुरके बापूशाहने २२०००) खर्चकर सन् १८९६ में जीर्णोद्धार कराया।

[१०] छिंदवाडा जिला।

इसकी चौहद्दी यह है—उत्तर हुशंगाबाद, नरसिंहपुर, पश्चिम बेतूल, पूर्व सिवनी, दक्षिण नागपुर—यहां ४६३१ वर्ग मील स्थान है—

इतिहास—इसका शासन दक्षिणके मलखेडमें राज्य करनेवाले राष्ट्रकूट वंशके आधीन था। एक ताम्रपत्र इस वंशका बेतूलके मुलताईमें, दूसरा वर्धाकी देवलीमें मिला है। देवलीका ताम्रपत्र सन् ९४० कृष्ण तृ० महाराजके राज्यका है। इसमें कथन है कि एक कनड़ी ब्राह्मणको तालपूरुनशक नामका ग्राम जो नागपुर नंदिवर्द्धन जिलेमें था भेटमें दिया गया। नागपुर नंदिवर्द्धन जिला छिंदवाडाके दक्षिण भागको कहते थे। छिंदवाड़ामें नीलकंठी पर एक स्तम्भ मिला है, जिसपर लेख है कि यह कृष्ण तृ० राजाके राज्यमें बना। यह नीलकंठी महगांवसे अनुमान ४० मील है इसीके निकट तालपुरनशक ग्राम है। नीलकंठीमें ७वीं व ८वीं शताब्दीके मंदिरोंके ध्वंश है। यह स्तम्भ सड़कके किनारे खड़ा है। छिंदवाड़ाके अशबुर्नर सरोवर पर कुछ प्राचीन पाषाण नीलकंठीसे लाए हुए रक्खे हैं। राष्ट्रकूट वंशी राजा सोमवंश या यदुवंशकी संतान हैं ऐसा दूसरा लेखोंसे प्रगट है।

देवगढ़—जो छिंदवाड़ासे दक्षिण पश्चिम २४ मील है। वहां छिन्दवाड़ा और नागपुरका प्राचीन राज्यवंशी स्थान था। यह इतना प्रभावशाली हुआ कि इसने मांडला और चांदाको अपने आधीन किया था।

(१) छिन्दवाडा—यहां गोलगंजमें जैन मंदिर हैं।

(२) मोहगांव—ता० सौसर—यहांसे ९ मील, छिंदवाड़ासे ३७ मील। १० वीं शताब्दीके राष्ट्रकूट लेखमें इसका नाम मोहनग्राम है। यहां दो प्राचीन मंदिर हैं।

(३) नीलकण्ठी—ता० छिंदवाड़ा—यहांसे दक्षिण पूर्व १४ मील कुछ मंदिरोंके ध्वंश हैं। एक मुख्य मंदिरके द्वारपर एक लेख सहित स्तम्भ है, जिस मंदिरके कोटकी भीत २६४ फुट लंबी और १३२ फुट चौड़ी है।

नोट—इन स्थानोंमें जैन चिन्होंको ढूंढ़ना चाहिये।

(३) नागपुर विभाग।

[११] वर्धा जिला।

इसकी चौहद्दी—उत्तरमें अमरावती, पश्चिममें अमरावती व येवतमाल, दक्षिणमें चांदा, पूर्वमें नागपुर। यहां २४२८ वर्ग मील स्थान है।

यहां तीसरी शताब्दी तक अंध्र राज्यने राज्य किया। सन् ११३ ई०में विलिवायुकुर द्वि० का राज्य बरारमें था।

देवली—वर्धासे ११ मील व देवगांवसे ८॥ मील है। यहां राष्ट्रकूट वंशका एक ताम्रपत्र सन् ९४० का मिला है।

---

[१२] नागपुर जिला।

इसकी चौहद्दी यह है—उत्तर छिंदवाड़ा, शिवनी। पूर्व भंडारा, दक्षिण पश्चिम चंदा और वर्धा। उत्तर पश्चिम अमरावती। यहां ३८४० वर्गमील स्थान है।

इतिहास—तीसरीसे छठी शताब्दी तक यह जिला वाकातक राजपूत राजाओंके अधिकारमें था जिनके राज्यमें शतपुरा मैदान व बरार भी शामिल था।

(१) रामटेक—नागपुरसे उत्तरपूर्व २४ मील पहाड़ीके नीचे प्राचीन मंदिर हैं। उनमें कुछ जैन मंदिर हैं, एकमें श्री शांतिनाथकी कायोत्सर्ग १८ फुट ऊंची मूर्ति दर्शनीय मनोज्ञ है।

(२) पर सिवनी—ता० रामटेक नागपुरसे उत्तर १६ मील। यहां एक किलेके ध्वंश हैं, यहां श्वेत पाषाणका एक जैन मंदिर है मूर्ति भी श्वेत पाषाणकी है। अभी भी जैन लोग पूजते हैं।

(३) सावरगांव—नागपुरसे ३६ मील, काटोलसे उत्तर १० मील। यहां एक सुन्दर महावीरस्वामीका मंदिर है। नोट—यहां जैन शब्द नहीं है, जांचना चाहिये।

(४) उमरेर नगर—नागपुरसे दक्षिणपूर्व २९ मील। यहां १०००० कुष्टी लोग हैं जो हाथसे रेशमकी किनारी सहित रुईके कपड़े बुनते हैं। यहांसे प्रतिवर्ष २ लाख रुपयेका कपड़ा बाहर जाता है। नोट—इनमें कुछ जैन कुष्टी होंगे जैसा सेन्ससे प्रगट है तलाश करना चाहिये।

(४) नागपुर—यहां कई जैन मंदिर हैं। यहांके म्यूजियममें जैन मूर्तियें इस तरहपर कौजन साहबकी रिपोर्टके अनुसार सन् १८९७ में थीं।

दो जैन मूर्तियां हुशंगाबादसे, कुछ जैन मूर्तियोंके भाग खंडवासे, कुछ जैन मूर्तियां बरहानपुरसे व कुछ जैन मूर्तियां नीमार, चिचोटी, वाघनदी और हांजीसे लाई हुई थीं।

नोट—बरहानपुरकी मूर्तियां अखंडित व पूज्य थीं जो वहांसे मिल गई हैं और परवारोंके दि० जैन मंदिरमें विराजमान हैं।

---

[१३] चांदा जिला।

चौहद्दी—उत्तरमें नांदगांव राज्य और भंडारा, नागपुर, वर्धा, पश्चिम और दक्षिणमें येवतमाल और निजाम राज्य, पूर्वमें वस्तर और कंकड़ राज्य व द्रुग। यहां १०१५६ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास—चन्दाके निकट भांदक ग्राम वाकातक वंशकी राज्यधानी थी जिनका शासन बरार, मध्यप्रांत नर्वदाके दक्षिण वाई गंगातक था। शिलालेखोंसे प्रगट है कि इन राजाओंने चौथीसे

बारहवीं शताब्दी तक राज्य किया फिर गोंद वंशका शासन हुआ। चन्दाके राजाओंको बल्लारशाही कहते थे। गोंद वंशके १९ राजाओंने १७५१ तक राज्य किया। १९ वीं शताब्दीके प्रारम्भमें नौमा राजा बल्लालशाह हुआ। ११ वां हीरशाह हुआ, जिसने चन्दाका किला बनवाया था। इसका पोता कर्णशाह था जिसने हिंदू धर्म धारण कर लिया था (सं० नोट—मालूम होता है कि पहले ये राजा लोग जैनधर्मी होंगे क्योंकि भांदकमें जैन धर्मके बहुतसे स्मारक हैं)। आईने अकबरीमें कर्णशाहके पुत्रका वर्णन है। यह स्वतंत्र था, अकबरको कर नहीं देता था।

चन्दाका प्राचीन नाम चंद्रपुर था।

पुरातत्व—यह जिला पुरातत्वकी सामग्रीसे पूर्ण है जिनमें कथनयोग्य जरूरी सामग्री भांदक, चंदानगर और मारकंडी पर हैं। भांदक, विंजवसनी, देवाल तथा घूगुमें गुफाके मंदिर हैं। बल्लालपुरके नीचे वर्धामें पाषाण मंदिर हैं। मारकंडी, नेरी, वहाँ, अरमोरी देवटेक, भटाल, भांदक, वैरगढ़, वघनक, केसलावारी, घोरघे पर प्राचीन मंदिर हैं। नोट—इन सबमें जैन स्मारक होंगे। जांच करनेकी जरूरत है।

(१) भांदक—तहसील वरोरा—यहांसे १२ मील, चन्दासे उत्तरपश्चिम १६ मील। यहां बहुत सुन्दर जैन मूर्तियोंके समूह इधरउधर ग्रामके अंत सरोवरके निकट विराजमान हैं। ग्रामसे दक्षिणपश्चिम १॥ मीलपर वीजासन नामकी बौद्ध गुफा है।

(२) देवलवाड़ा—भांदकसे पश्चिम ६ मील। पहाड़ीके ऊपर प्राचीन मंदिर व चार स्तम्भ हैं। चरणपादुका है, गुफाएं हैं। नोट—इसमें जैन चिन्ह अवश्य होने चाहिये, जांचकी जरूरत है।

[१४] भंडारा जिला।

चौहद्दी यह है। उत्तरमें बालाघाट, सिवनी। पूर्वमें छेरीकदन, खैरागढ़ व नांदगांव राज्य। पश्चिममें नागपुर, दक्षिणमें चांदा।

यहां ३९६९ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास—राघोली (जि० बालाघाट) में जो ताम्रपत्र मिला है उसमें शैल वंशके राजाका नाम है। राज्यधानी—श्री वर्द्धनपुर। रामटेकके पास जो नगरधन है वह नंदिवर्द्धनका प्राचीन नाम है। इसे शायद इस वंशके राजाने बनाया हो। सन् ९४० के वर्षाके देवलीके राष्ट्रकूट ताम्रपत्रके अनुसार नगरधन एक प्रसिद्ध स्थान था। १०वीं सदीके अन्तमें भंडाराका एक भाग मालवाके परमार या पंवारके राज्यमें गर्भित था। सीनादल्दी (नागपुरमें) का पाषाण जो सन ११०४-५ का है बताता है कि उनकी ओरसे नागपुरमें लक्ष्मणदेव अधिकारी थे।

यह बहुत सम्भव है कि नागपुर और भंडारामें जो वर्तमान परवार जाति है वह उन अधिकारियोंकी संतान हो, जिन्हें मालवाके राजाओंने यहां नियत किया हो।

It is possible that the existing Parwar caste of Nagpur and bhandara are a relic of temporary officers in Name of Kings of Malwa.

(See Bhandara Gazetteer (1908).

पुरातत्व—यहां तिह्लोता—खेरामें पाषाणके स्तम्भ हैं। अमगांवके पास पद्मापुरमें प्राचीन इमारतें हैं। प्राचीन मंदिर अधिकतर हेमदपंतके अदूयाल, चक्रनेती, करम्बी, पिंगलई व भंडारा नगरमें हैं।

(१) अदूयाल या अदूयार—भंडारासे दक्षिण १७ मील।

यहां श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर प्राचीन है। यहां एक पुरुष प्रमाण कृष्ण पाषाणकी बहुत ही मनोज्ञ जैन मूर्ति श्री पार्श्वनाथजीकी एक मकानकी नींव खोदते हुए मिली है।

भंडाराका प्राचीन नाम 'भानार' है ऐसा रतनपुरके सन् ११०८ के लेखसे प्रगट है। यह प्राचीन नगर था।

[१५] बालाघाट जिला।

चौहद्दी-उत्तरमें मांडल, पूर्वमें बिलासपुर, द्रुग। दक्षिणमें भंडारा। पश्चिममें सिवनी। यहां ३१३२ वर्ग मील स्थान है-

इतिहास-यहां लौजी स्थानपर हैहय वंशी राजाओंने राज्य किया था, जिनकी उत्पत्ति संवत् ४१५ या सन् ई० ३५८ के जादोरायसे थी। यह गढ़ाका राजा था। सन् ६३४में १०वां राजा गोपालशाह था जब मांडला प्राप्त हुआ था।

पुरातत्त्व-यहां कटंगीके पास बीसापुरमें, संखर, भीमलाट, भीरीके पास सावरझिरीमें प्राचीन स्मारक हैं।

(१) भीरी-यहां कुछ जैन मूर्तियें हैं।

(२) वाराशिवनी-चुनई नदीपर-यहां परवारोंके सुन्दर जैन मंदिर हैं।

(३) जोगीमढी-ग्राम धीपुर-बैहरसे उत्तर पश्चिम १५ व बालाघाटसे ४१ मील। यहां बौद्ध स्मारक हैं व मंदिर हैं। (शायद जैनके भी हों)

(४) धनमुआ-यहां बौद्ध शिल्पके प्राचीन मंदिर हैं।

(५) धीपुर-बैहरसे उत्तर पश्चिम १२ मील यहां प्राचीन मंदिर हैं।

(४) छत्तीसगढ़ विभाग।

[१६] द्रुग जिला।

चौहद्दी इस प्रकार है–उत्तरमें बिलासपुर, पूर्वमें रायपुर, दक्षिण कंकड राज्य व पश्चिममें खेरागढ़ नांदगांव राज्य, चांदा।

यहां स्थान ३८०७ वर्गमील है।

नागपुरा–ता० द्रुग–यहांसे उत्तर पश्चिम ९ मील। यहां प्राचीन जैन मंदिर हैं और यह कथा प्रसिद्ध है कि आरंग, देवबलोदा और नागपुरामें एक ही रातको ये मंदिर बनवाए गए थे।

---

[१७] रायपुर जिला।

चौहद्दी यह है कि दक्षिण तरफ महानदीका तट, उत्तर पश्चिम सतपुरा पहाड़ी, दक्षिण पश्चिम महानदी तक खंडित देश।

यहां ११७२४ वर्गमील स्थान है।

इतिहास–यहां हैहयवंशी, जो कलचूरीके नामसे प्रसिद्ध थे, बहुतकाल राज्य करते रहे। इनका मूल राज्य चेदी देश (चंबल नदी उत्तरपश्चिमसे लेकर चित्रकूटके उत्तरपूर्व कर्वी नदीतक) में था। बुन्देलखंडके दक्षिणपूर्वकी ओर पहाड़ियोंपर इनका आधिपत्य था। रतनपुरमें–इनका शिलालेख सन् १११४ का मिला है। चेदी राजा कोकल्लके अठारह पुत्र थे। पहला त्रिपुराका राजा था। छोटेमेंसे एकने कलिंग राजाका पुत्रत्व पाया। अपना देश छोड़ गया, उस देशको दक्षिण कौशल देश कहा। यहां चेदी वंशने १०वीं सदीसे सन् १७४० तक राज्य किया।

पुरातत्व—यहां वहुत स्मारक हैं। उनमेंसे आरंग, राजिन और सिरपुरके प्रसिद्ध हैं।

बढ़िया मंदिर सिहावा, चिपटी, देवकूट, धंतरी तहसीलमें बलोद जिलेके उत्तर पूर्व खतारी और नरायणपुर, रायपुरनगरके पास देवबलोदा और कुंवार पर हैं।

बौद्धोंके स्मारक द्रुग—राजिना, सिरपुर तथा तुरतुरिया पर हैं।

इस जिलेमें होकर एक बहुत पुरानी व प्रसिद्ध सड़क गंजम और कटकको जाती है। अब उसका पता भांदकके पाससे यहां होकर लगता है। भांदक पहले एक बड़ा नगर था।

(१) आरंग—ता० रायपुर—यहांसे २२ मील। यह जैन मंदिरोंके लिये प्रसिद्ध है। यहांके जैन मंदिरोंके वाहर जैन देवी देवताओंके चित्र हैं। एक मंदिरके भीतर तीन विशाल नग्न मूर्तियां कृष्ण पाषाणकी वहुत स्वच्छ कारीगरीकी हैं। यहां एक बड़ा नगर था व जैनियोंके वहुत मंदिर थे अब यह एक ही रह गया है। यह भी गिरजाता! यदि सर्वे करनेवाले लोहेकी सलाखोंसे रक्षित न करते। यह मंदिर देखने योग्य है। रायपुर गजटियर सन् १९०९के पृष्ठ२९२ पर इस मंदिरका चित्र दिया है। इसको भांददेवल कहते हैं। इस नगरके पश्चिममें एक सरोवरके तटपर एक छोटा मंदिर महामायाका है। यहां वहुतसी खंडित मूर्तियां रक्खी हैं। एक खंडित पाषाण है, जिसमें केवल १८ लाइन लेखकी रह गई हैं। इस मंदिरके वाड़ेके भीतर तीन नग्न जैन मूर्तियां हैं जिनपर चिन्ह हाथी, शंख व गैंडेके हैं जो क्रमसे श्री अजितनाथ, श्री नेमिनाथ व श्री श्रेयांशनाथकी हैं। (सन् १९०९) से पूर्व करीब ६ या ७ वर्ष हुए

यहां एक रत्नकी जैन मूर्ति मिली थी जो ५०००) में दीगई थी। ये सब स्मारक प्रगट करते हैं कि यह आरङ्ग जैनधर्मका बहुत प्राचीन और प्रसिद्ध स्थान था। यहां अग्रवाल बनिये रहते हैं। (आरङ्गके लेखोंके लिये देखो कनिंघम रिपोर्ट १७ सफा २१ यहां आठवीं शदीके दो ताम्रपत्रोंका वर्णन है) तथा देखो (बगलर रिपोर्ट जिल्द ७ सफा १६०)।

(२) बड़गांव–ता० महासमुद्र। यहांसे उत्तर पूर्व १०मील महानदीकी दाहनी तरफ। यहां अब भी रतनपुरके प्राचीन हैहय राजवंशीके वंशज रहते हैं।

(३) कुर्रा या कुंवर–रायपुरके उत्तर १४ मील। मंधर स्टेशनसे ४ मील। दक्षिण तरफ मिचनी सरोवर तटपर अब चार छोटे मंदिर हैं। पहले ग्राममें यहां बहुत बड़े २ मंदिर थे उनमें मुख्य दो जैन मंदिर थे जिनको खूबचन्द जैन वणिकने कुरहान नदीकी घाटी बनानेके लिये रीड कमिशनरको दे दिये थे। कई खुदे हुए पाषाण अब भी पड़े हुए हैं। कुछ जैन मूर्तियां भी रह गई थीं जो ग्रामके इधर उधर विराजित हैं। खूबचंद स्वयं कहते हैं कि उसने स्वयं इस ग्राममें तीन तथा मलकाममें दो जैन मंदिर गिरवा दिये थे।

(४) सिरपुर–(शिलालेखमें श्रीपुर) महानदीके दाहने तटपर। रामपुरसे पूर्व उत्तर ३७ मील। यह कभी एक बड़ा नगर था। यहां नौमी शताब्दीकी बनी हुई सुन्दर ईंटे पाई जाती हैं।

(५) रायपुर–यहां दुधाधारी मठ है, जिस मंदिरके आंगनमें सिरपुरसे लाए हुए पाषाण खंड पड़े हैं। ये बहुत सुन्दर बने हैं

और उत्तरीय कल्चूरी एक ही वंशके हैं। सन् २४९ से लेकर १२वीं शताब्दी तक उन्होंने दाहल या नर्मदा प्रांतमें राज्य किया। उनका चिन्ह सुवर्ण वृषभध्वज था। कर्णदेव राजाकी मोहरपर एक वृषभ है उसके पास चार भुजाकी देवी एक हाथीपर है। हर ओर उसपर अभिषेक होरहा है।

[१८] बिलासपुर ज़िला।

चौहद्दी यह है—दक्षिण रायपुर, पूर्वदक्षिण रायगढ़ व सारनगढ़ राज्य, उत्तरपश्चिम शतपुरा पहाड़ी।

यहां ८३४१ वर्गमील स्थान है।

इतिहास—यहांके शासक रतनपुर और रायपुरके हैहयवंशी राजपूत रहे हैं। जिनका सबसे प्रथम राजा मयूरध्वज हुआ है। इनके पास ३६ किले थे, इसीसे इस प्रांतको छत्तीसगढ़ कहते हैं। बीसवां राजा सन् १०००में सूरदेव व ४६वां राजा कल्याणशाह था जिसने १५३६से १५७३ तक राज्य किया।

पुरातत्व—बिलासपुरसे उत्तर १६ मील रतनपुर—हैहयवंशका प्राचीन राज्यस्थान था। बहुत सुन्दर मंदिर जंजगिर, पाली व पेंडरासे ९ मील धनपुरमें हैं।

(१) रतनपुर—इसको १०वीं शताब्दीमें रत्नदेवने बसाया था। इसके ध्वंश स्थान १५ वर्गमीलमें हैं। ३०० सरोवर हैं व अनेक मंदिर हैं। यहां महामायाका मंदिर है जिसके पास बहुतसी मूर्तियोंका ढेर है, उनमें अनेक जैन मूर्तियां हैं।

(२) अदभार—चन्दनपुर राज्यमें बिलासपुरसे ४० मील

देवीके प्राचीन मंदिरकी भूमिपर एक झोपड़ा है जिसमें एक जैन मूर्ति बैठे आसन है ।

(३) धनपुर—जमींदारी पेंडरा—यहांसे उत्तर १ मील । यह भी प्रसिद्ध व प्राचीन स्थान है । धनपुर और रतनपुर दोनोंको हैहय राजपूतोंने बसाया था । भीतर सरोवरसे उत्तर आध मील जाकर कई छोटे२ टीले हैं जो प्राचीन ध्वंश मकानोंसे ढके हुए हैं । इसके पश्चिम ॥ मीलपर छः मंदिरोंका समूह है । सरोवरके दूसरे तटपर चार बड़े मंदिरोंका समूह है जो देखनेसे जैनके मालूम होते हैं । इससे थोड़ी दूर एक संभवनाथके नामसे सरोवर है, जिसके तटपर बहुतसी जैन मूर्तियोंके खंड हैं । ये सब मंदिर कुछ पाषाणके कुछ ईंट और पाषाण दोनोंके हैं। ईंटें पुरानी रीतिकी बहुत बड़ी हैं जैसी सिरपुरमें मिलती हैं । कुछ प्राचीन वस्तुएं पेन्डरामें लाई गई हैं। यहां ४ वर्गमील तक खंड स्थान हैं। (कनिंघम रि० नं० ७ पत्र २३७)

(४) खरोद—महानदीसे १ मील व अकलतरा सड़कपर सिवरीनारायणसे ६ मील । यहां प्राचीन मंदिर हैं । सबसे बड़ा लक्ष्मेश्वरका है। इसमें चेदी सं० ९३३ या सन् ११८१का पुराना शिलालेख है जिसमें कलिंगराजसे लेकर रत्नदेव तृ०तक हैहय राजाओंके पूर्ण नाम हैं ।

(५) मलतर या मलतार—ता० विलासपुर—यहांसे दक्षिण पूर्व १६ मील । यह लीलागर नदीसे ८६० फुट ऊंचा है प्राचीन कालमें प्रसिद्ध स्थान था । बहुतसे प्राचीन मंदिर हैं जहां बड़ी२ नग्न जैन मूर्तियां हैं । उनमेंसे बहुतसी उठा ली गई हैं बहुत

इधर उधर पड़ी हैं। यहां कई शिलालेख मिले हैं, उनमेंसे एक रतनपुरके कलचूरी राजाओंके सम्बन्धका है जिसमें चेदी सं० ९१९ या ११६७ ई० है, नागपुर म्यूजियममें है।

(९) तुमन–ता० विलासपुर–यहांसे ६० मील। जमींदारी लाका रतनपुरसे ४९ मील। हैहय वंशी "जब छत्तीसगढ़ आए तब पहले यहीं बसे" ऐसा सन् ११९४ के जजल्लदेव प्रथमके शिलालेखमें कहा है। उसके बड़े कलिंगराजने तुमनमें स्थान जमाया। रत्नदेवने जो जजल्लदेव देवका दादा था रतनपुरमें राजधानी स्थापित की थी।

---

(१९) संबलपुर जिला।

यहां पाटना राज्यमें कोन्धनके तोप वर्गनेमें तीतलगढ़ है। ग्रामसे एक मील करीब दूर धवलेश्वरका मंदिर है जिसके बाहर श्री पार्श्वनाथजीकी पाषाणकी मूर्ति है व एक बड़े कमरेके ध्वंश हैं। (देखो सी० पी० कौंजिन रिपोर्ट सन् १८९७ जिल्द १२)।

---

(२०) सरगुजा राज्य।

इस राज्यकी लखनपुर जमींदारीमें रामगढ़ पहाड़ी है। यह लखनपुरसे पश्चिम १२ मील है। "रामगढ़ पहाड़ी" यह २६०० फुट ऊंची है। बंगाल नागपुर रेलवेके खरसिया स्टेशनसे १०० मील है। यहां प्रतिवर्ष यात्री आते हैं। पहाड़के उत्तर भागके पश्चिमी चट्टानकी तरफ गुफाएं हैं। इसकी उत्तरी गुफाको सीता-बेंगा और दक्षिणी गुफाको जोगीमारा कहते हैं।

यहां दो लेख अशोककी लिपिके समान ब्राह्मी लिपिमें देखे गए हैं। जो लेख सीतांबेंगा गुफामें हैं वह सन् ई० से पहले तीसरी शताब्दीके किसी नाटक काव्यकी प्रशंसामें हैं।

जोगीमाराका लेख मागधी भाषाकी चार लाइनमें है इसमें देवदासी और किसी चित्रकारका नाम है।

इस गुफाकी चौखटपर चित्रकारी है जिसका वर्णन इस प्रकार है—

भाग (१)—एक वृक्षके नीचे एक पुरुपका चित्र हैं, बाईं तरफ अपसराएं व गंधर्व हैं। दाहनी तरफ एक जलूस हाथी सहित है।

भाग (२)—कहरमें पुरुष, गज चक्र तथा अनेक प्रकारके आभूषण हैं।

भाग (३)—इसका आधा भाग स्पष्ट नहीं है। उसमें पुष्प, प्रासाद, सवस्त्र मनुष्य हैं। इसके आगे एक वृक्ष है उसपर एक पक्षी है और एक पुरुप, बालक है। इसके चारों ओर बहुतसे मनुष्य हैं जो खड़े है, वस्त्र रहित हैं जैसा बालक वस्त्र रहित है। मस्तककी बाई तरफ केशोंमें गांठ लगी है।

भाग (४)—एक पुरुप पद्मासनसे बैठा है जो स्पष्टपने नग्न है इसके पास तीन मनुष्य सवस्त्र खड़े हैं इसीके बगलमें ऐसे ही पद्मासन नग्न पुरुप हैं और तीन ऐसे ही सेवक हैं। इसके नीचे एक घर है जिसनें चैत्यकी खिड़की है सामने १ हाथी है और तीन पुरुप सवस्त्र खड़े हैं। इस समुदायके पास तीन घोड़ोंसे जुता हुआ एक रथ है, ऊपर छतरी है। दूसरा एक हाथी सेवक सहित है। इसके दूसरे आधेमें भी पहलेके समान पद्मासन पुरुप

चैत्यखिड़की सहित गृह तथा हाथी आदि चित्रित हैं। (देखो इंडिया आर्किलो सर्वे रिपोर्ट १९०३-४ सफा १२३)।

सं० नोट-इसमें किनहीं महापुरुषोंका दीक्षा लेनेका या भक्तिका दृश्य झलकता है। संभव है ये सब जैन धर्मसे सम्बन्ध रखते हों इसकी पूरी२ जांच होनी चाहिये।

(५) बरार विभाग।

इतिहास-इसका प्राचीन नाम विदर्भ है। जहां कृष्णकी पट्टरानी रुक्मिणीका भाई रुक्मी राज्य करता था। विदर्भके राजा भीमकी कन्या दमयन्ती थी।

सन् ई०से तीन शताब्दी पहलेसे अन्ध्र लोगोंका राज्य था। इस अंध्र वंशका २३वां राजा विलिवायुकुर द्वि० (सन् ११३-१२८) था जिसने गुजरात और काठियावाड़के क्षत्रपोंसे युद्ध किया था। सन् २३६में यहां क्षत्रपोंने राज्य किया, फिर वाकातक वंशने फिर अभीरोंने फिर चालुक्योंने सन् ७५० तक राज्य किया। फिर सन् ९७३ तक राष्ट्रकूटोंने। पश्चात् चालुक्योंने फिर देवगिरि यादवोंने फिर मुसल्मानोंका राज्य हुआ।

यहां १७७१० वर्ग मील स्थान है।

चौहद्दी यह है-उत्तरमें सतपुरा पहाड़ी और तापती नदी, पूर्वमें-मध्य प्रांत वर्धा, पश्चिममें बम्बई और हैदराबाद।

(२१) अमरावती जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है-उत्तरमें एलिचपुर ता० वेतुल, पूर्वमें वर्धा नदी, दक्षिणमें येवतमाल, पश्चिममें अकोला।

यहां २७५९ वर्गमील स्थान है।

इतिहास-वाकातक राजाओंने यहां राज्य किया, उनकी राज्यधानी चांदा जिलेमें भांदकमें थी। अजन्टा गुफाओंकी १६वीं गुफामें एक लेख है जिसमें ७ वाकातक राजाओंके नाम आए हैं।

(१) भातकुली-अमरावतीसे १० मील। यहां प्राचीन जैन मंदिर हैं जिनमें दि० जैन मूर्ति श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी है जो गढ़ी ग्राममें भूमि खोदते मिली थी।

(२) जारद-ता० मोरसी-सकी नदीके तटपर एक जैन मंदिर है।

---

(२२) एलिचपुर जिला।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तर तापती नदी, वेतुल जिला, पूर्वमें अमरावती, दक्षिणमें पूर्ण नदी, पश्चिममें निमावर जिला। इसमें २६०५ वर्गमील स्थान है।

(३) एलिचपुर-नगर, यह कहावत प्रसिद्ध है कि इसको राजा एलने बसाया था, जो जैनी था। यह राजा एलिचपुर जिलेके किसी ग्रामसे सं० ११९९ (सन १०९८) में आया था। उस ग्रामको अब संजमनगर कहते हैं।

यह एक बलवान राजा था। उस समय यह जिला सोमेश्वर प्रथम चालुक्य वंशी महाराजका भाग था। यहां १९०१ के

अनुसार २२१ जैनी हैं। जैन मंदिर हैं। यहां होकर श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र (जो बैतुल जिलेमें निकट है) को यात्री जाते हैं।

---

(२३) येवतमाल या ऊन जिला।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें अमरावती पूर्वमें वर्धा, दक्षिणमें पेन गंगा, पश्चिममें पुसड़ व मंगरूल ता० । यहां ३९१० वर्ग मील स्थान है।

(१) कलम—ता० येवतमाल । इस ग्राममें एक भूमिके नीचे श्री चिंतामणि पार्श्वनाथका प्राचीन जैन मंदिर है।

---

(२४) अकोला जिला।

इसकी चौहद्दी है। उत्तरमें मेल्घाट पहाड़ी, पूर्वमें दर्यापुर, मुर्तजापुर, पश्चिममें चिखली, मलकापुर दक्षिणमें मंगरूल वासिम।

यहां २६७८ वर्ग मील स्थान है।

(१) नरनाल—ता० अकोला—एक पहाड़ी ३१६१ फुट ऊँची है। इसपर चार बहुत ही आश्चर्यकारी पाषाणके कुंड हैं। ऐसा समझा जाता है कि इनको मुसल्मानोंके पूर्व जैनियोंने बनवाया था।

(२) पातूर—नगर ता० बालापुर। एक पहाड़ीके उत्तरमें दो गुफाएं हैं, जिनके भीतर एक खण्डित पद्मासन मूर्तिका भाग है और मूर्तियां नहीं हैं। तथा खम्भोंपर लेख हैं जो अभीतक (१९०९) तक पढ़े नहीं गए थे। ये गुफाएं शायद जैनोंकी हों। सं० नोट—जांच होनी चाहिये।

(३) सिरपुर—वासिमसे उत्तरपश्चिम १९ मील। यह जैनियोंका पवित्र स्थान है।

इम्पीरियल गजेटियर वरार सन् १९०९में नीचे प्रकार कथन है “ यहां श्री अन्तरीक्ष पार्श्वनाथका मंदिर है जो दिगम्बर जैन जातिका है (belongs to Digambor Jain Community) इसमें एक लेख सन् १४०६ का है। इसमें अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ नाम लिखा है। यह मंदिर इस लेखसे १०० वर्ष पहले निर्मापित हुआ था। यह कहावत है कि एलिचपुरके येल्लुक राजाने नदी तटपर इस मूर्तिको प्राप्त किया था और वह अपने नगरको ले जारहा था, परन्तु उसे पीछा नहीं देखना चाहिये था। सिरपुरके स्थानपर उसने पीछा फिरकर देख लिया तब मूर्ति नहीं चल सकी। वहीं बहुत वर्षोंतक यह मूर्ति वायुमें अटकी रही।

अकोला जिलेका गजटियर जो सन् १९११ के अनुमान मुद्रित हुआ होगा उसमें सिरपुरके सम्बन्धमें जो विशेष बात है वह यह है। जैन मंदिरके द्वारके मार्गके दोनों तरफ नग्न जैन मूर्तियां हैं तथा चौखटके ऊपर एक छोटी बैठे आसन जैन मूर्ति है। एलराजा जैनी था। इसको कोढ़का रोग था—वह एक सरोवरमें नहानेसे अच्छा हो गया। राजाको स्वप्न आया कि प्रतिमा है। वह प्रतिमा लेकर उसी तरह चला तब प्रतिमा सिरपुरके वहां न चल सकी तब राजाने उसीके ऊपर हेमदपंथी मंदिर बनवाया। पीछे दूसरा मंदिर बनवाया गया। यह मूर्ति एक कुनबी कुटुम्बके अधिकारमें रही आई है जिसको पावलकर कहते हैं। यह बात कही जाती है कि यह मूर्ति इस वर्तमान स्थितिमें वैसाख सुदी ३ वि०

सं० ५५५को स्थापित हुई थी जिसको करीब १५०० वर्ष हुए।

"Descriptions of list of inscriptions in C. P. & Berar by R. B. Hiralal B. A. 1916"—

नामकी पुस्तकमें सफा १३९ में इस भांति लिखा है "यह अंतरीक्ष पार्श्वनाथका मंदिर दिगम्बर जैन समाजका है। संस्कृतमें एक बड़ा शिलालेख सन् १४०६ का है परन्तु मि० कौशिनसाहब (Cousin's progress report 1902 P. 3) कहते हैं कि यह मंदिर कमसे कम १०० वर्ष पहले बना है। लेखमें अन्तरीक्ष पार्श्वनाथका तथा मंदिरके बनानेवाले जगसिंहका नाम आया है।"

सं० नोट—ऊपर तीनों लेख पढ़नेसे विदित होता है कि १५०० वर्ष हुए तब भैंरेमें मूर्ति स्थापित की गई थी तथा ऊपर दूसरा मंदिर सन् १४०६में बना है।

(४) तिलहारा—तालुका अकोला, यहांसे पश्चिम १७ मील। यहां श्वेताम्बर जैन मंदिर है जो हालमें बना है। मूर्ति सुवर्णकी पद्मप्रभुजीकी है।

---

(२५) बुलडाना जिला।

चौहद्दी यह है कि—उत्तरमें पूर्णनदी, पूर्वमें अकोला, दक्षिणमें निजाम, पश्चिममें निजाम और खानदेश।

यहां २८०६ वर्गमील स्थान है।

(१) मेहकर—बुलडानासे दक्षिणपश्चिम ४२ मील। यहां बालाजीका एक नवीन मंदिर है, उसमें एक खंडित जैन मूर्ति है उसपर छोटासा लेख है। संवत १२७२ है। इस मूर्तिको आशाधरकी स्त्री पद्मावतीने प्रतिष्ठित कराया था।

(२) सातगांव-बुलडानासे पश्चिम दक्षिण १० मील। खास सड़कपर एक विष्णु मंदिरके उत्तर एक प्राचीन जैन मंदिरके चार खंभे अवशेष हैं तथा दो जैन मूर्तियें हैं। एक श्री पार्श्वनाथजीकी है उसपर शाका ११७३ या सन् १२९१ है। यह दिगम्बर है। इसके उत्तर पश्चिममें थोड़ी दूर एक पीपलके वृक्षके नीचे बहुतसी प्राचीन जैन मूर्तियोंके खंड हैं। तथा एक चबूतरेपर एक खंडित देवीकी मूर्ति है। मस्तकपर फूलोंकी माला बनी है। उसके ऊपर पद्मासन जैन प्रतिमा है। इसलिये यह जैनियोंकी देवीकी मूर्ति है। ऊपर जिस पार्श्वनाथकी मूर्तिका लेख शाका ११७३का दिया है वहांपर यह भी लेख है कि इस मूर्तिकी प्रतिष्ठा तेलुगू जैन कंथतय्या सेठीके पुत्र जैनतय्याने कराई।

दूसरा भाग—

मध्य भारत-प्राचीन जैन स्मारक ।

Imperial Gazetteer of Central India Cal. 1908.

इम्पीरियल गजेटियर मध्य भारत कलकत्ता सन् १९०८के अनुसार तथा भिन्न२ गजेटियरोंके आधारसे नीचेका वर्णन लिखा जाता है—

इस मध्य भारतकी चौहद्दी इस भांति है—उत्तर-पूर्वमें संयुक्त प्रदेश, पूर्वमें मध्यप्रांत, दक्षिण-पश्चिममें खानदेश, रेवाकांठा, पंचमुहाल ।

यहां ७८७७२ वर्गमील स्थान है ।

इतिहास—गौतमबुद्धके समयमें बौद्धमतकी पुस्तकोंके आधारसे भारतवर्षमें सोलह मुख्य राज्य थे। उनमें अवन्ती—राजधानी उज्जैन व वत्सदेश—राज्यधानी कौसाम्बी भी थे। उस समय उत्तरसे दक्षिणतक अर्थात् कौशल देशके श्रावस्तीसे दक्षिणमें पैथन तक पुरानी सड़क थी। बीचमें उज्जैन और महिस्मती (महेश्वर) में ठहरनेके स्थान थे। इस मध्य भारतपर जैनधर्मधारी महाराज चंद्रगुप्त मौर्य व उसके वंशजोंने सन् ई०से ३२१ वर्ष पूर्वसे २३१ वर्ष पूर्वतक राज्य किया। चंद्रगुप्तके पीछे उसके पुत्र विन्दुसारने (२९७ से २७२ पूर्वतक) फिर महाराज अशोकने राज्य किया। अशोकने भिलसाके पास सांचीमें और नागोदके भीतर भारहुतमें स्तूप स्थापित कराए। मौर्योंके पीछे सुंगवंशने राज्य किया, उसकी राज्यधानी पाटलीपुत्र थी। इसी वंशमें अग्निमित्र राजा हुआ है जो मालविकाग्निमित्र नाटकका वीर योद्धा था। इसकी राज्यधानी विदिशा (भिलसा) थी।

चंदेलोंने राज्य किया। ये सब प्रसिद्ध ऐतिहासिक वंश हैं।

गुर्जर—ये लोग राजपूताना और पश्चिम तटकी भूमि गुजरात पर बसते थे। इन्होंने मध्य भारतको ८ वीं शताब्दीमें ले लिया। इनकी दो शाखाएं थीं उनमेंसे परिहार राजपूतोंने बुन्देलखण्ड पर और परमार राजपूतोंने मालवा पर अधिकार किया।

सन् ८८९ में भोज प्रथमकी मृत्युके पीछे गुर्जरोंकी शक्ति क्षीण हो गई क्योंकि बुन्देलखण्डमें चन्देलवंशी नर्वदाके पास कल-चूरी वंशी तथा राष्ट्रकूटोंका प्रभाव बढ़ गया। सन् ९१९ में मालवाके परमार वंशने इन लोगोंकी सत्ता हटा दी। तब मध्यभार-तका शासन इस तरह बढ़ गया कि परमार लोग मालवामें जमे। उनकी राज्यधानी उज्जैन और धार हुई; परिहार लोग ग्वालियरमें डट गए; चंदेले बुन्देलखण्डमें जमे—इन्होंने अपनी राज्यधानी महोबा और कालिंजरको बनाया। चेदी या कलचूरी वंशज रीवा राज्यमें राज्य करते रहे। जब महमूद गजनीने भारत पर हमला किया तब बुन्देलखंडका चन्देलराजा धंगा और लाहौरके जयपालने मिलकर लम्घानपर सन् ९८८में सुबुक्तगीनके साथ युद्ध किया था। चौथे हमलेमें महमूदका सामना पेशावरमें लाहोरके आनन्दपालने, ग्वालियरके तोंवरराजाने, चन्देलमहाराज गंदा (सन् ९९९-१०२९) ने मालवाके परमार राजा (यातो भोज हो या उसका पिता सिंधु-राज हो) ने युद्ध किया था।

महमूदके १०३०में मरणके पीछे मुसल्मानोंने १२वीं शता-ब्दीतक मध्य भारतकी तरफ मुख नहीं किया। सन् १२०६ से १५२६ तक पठान फिर मुगल बादशाहोंने अधिकार रक्खा। सन्

१७४३ से मरहटोंने अपना अधिकार जमाया। अहल्याबाईने हुल्कर राज्यपर सन् १७६७से १७९५ तक राज्य किया। इसकी न्यायप्रियता व योग्यता भारतमें उदाहरणरूप है।

पुरातत्त्व—प्राचीन स्मारकके प्रसिद्ध स्थान नीचे लिखे स्थानोंपर हैं—(१) प्राचीन उज्जैन, (२) वेशनगर, (३) धार, (४) मन्दसोर, (५) नर्वर, (६) सारंगपुर, (७) अजयगढ़, (८) अमरकंटक, (९) वाघ, (१०) वरो, (११) वड़वानी, (१२) भोजपुर, (१३) चन्देरी, (१४) दतिया, (१५) धमनार, (१६) ग्वालियर, (१७) ग्यासपुर, (१८) खजराहा, (१९) मांडू, (२०) नागोद, (२१) नरोद, (२२) ओर्छा, (२३) पथारी, (२४) रीवा, (२५) सांची, (२६) सोनागिरि, (२७) उदयगिरि, (२८) उदयपुर।

प्राचीन सिक्के पहली शताब्दीके सांची और भरहुतके स्तूपोंके समयके मिलते हैं। गुप्त समयके दो लेख मिलते हैं—एक गुप्त संवत ८२ या सन् ४०१ का; दूसरा सबसे पिछला गुप्त सं० ३०२ या सन् ६४०का रतलाममें। मंदसोरका शिलालेख जो मालवाके वि० सं० ४९३ या सन् ४३६का है बहुत उपयोगी है। यह इस बातको प्रमाणित करता है कि विक्रम संवतके साथ मालवाकी शक्तिका क्या प्रभुत्व है? मध्यप्रांतमें चारों तरफ सन् ई०से ३०० वर्ष पहलेसे आजतकके अनेक शिल्प पाए जाते हैं। सन् ई०से ३०० वर्ष पहले बौद्धोंके स्मारक भिलसाके चारों तरफ तथा सबसे बढ़िया सांची स्तूपमें पाए जाते हैं। नागोदमें भरहुतपर जो स्तूप है वह तीसरी शताब्दी पूर्वका है।

जैनियोंके ढंगके बहुतसे मकान व मंदिर थे जो अब लुप्त

हो गए हैं। उनमें प्रसिद्ध ग्यासपुरके मंदिर हैं, प्राचीन मंदिर खजराहाके हैं तथा उदयपुरके मंदिर हैं। जैनियोंके सोलहवीं शताब्दीके मंदिर ओर्छा, सोनागिरि (दतिया) में हैं।

पूर्वी हिन्दी भाषा—इस मध्यप्रांतमें यह भाषा अधिक बोली जाती है। यह उसी प्राचीन भाषाका अपभ्रंश है जिस भाषामें सन् ई०से ५०० वर्ष पूर्व श्री महावीर भगवानके तत्व वर्णन किये जाते थे। यही भाषा बादमें दिगम्बर जैनियोंके मुख्य शास्त्रोंकी भाषा होगई।

इस हिन्दीका अवधी भाग मध्यभारतमें व बघेली भाग बघेलखंडमें पाया जाता है। बघेलीमें बहुत बड़ा साहित्य है जिसकी रक्षा रीवांके राजालोग सदा करते आए हैं। बघेली हिन्दी बोलनेवाले १४०१०१३ हैं।

जैन धर्म—ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दीमें मध्यभारतके उच्च वर्णोंमें जैनधर्म मुख्यतासे फैला हुआ था। उनके मंदिर व मूर्तियोंके शेष ध्वंश इस प्रांतमें सब तरफ पाए जाते हैं। अभी भी प्राचीन मंदिर खजराहामें, सोनागिरिमें है तथा कई यात्राके स्थान हैं जैसे बावनगजाकी मूर्ति बड़वानीमें। सन् १९०१में यहां दिगम्बर जैनी ९४६०९ व श्वे० जैनी ३९६७९ थे।

मध्यमें भारतके विभाग।

(१) बघेलखंड—इस बघेलखंडमें रीवा, बन्दैर, कैमूर, खुंजना व सिरवू चट्टानें शामिल हैं। प्राचीन बौद्ध पुस्तकोंमें व महाभारत तथा पुराणोंमें इस बघेलखंडका सम्बन्ध हैहय या कलचूरी या चेदी

जातिसे बताते हैं। इनका संवत् सन् २४९ ई०से शुरू होता है। उनका मुख्य स्थान नर्वदा नदीपर महिस्मती या महेश्वरपर था। यही उनकी राज्यधानी थी।

छट्ठी शताब्दीमें ये कलचूरी लोग प्रसिद्ध शासक हो गए, क्योंकि बादामी (बीजापुर) का राजा मंगलिसी लिखता है कि उसने चेदीके कलचूरी राजा बुद्धवर्मनपर विजय प्राप्त की थी। वृहत् संहिता नामा ग्रंथमें चेदी लोगोंको प्रसिद्ध मध्यप्रांतकी जाति बताया है। सातवीं शताब्दीके अंतमें कलचूरी लोगोंने बघेलखंडका सर्व प्रदेश लेलिया था तब उनका मुख्य स्थान कालिंजर पर था। इस समय बुन्देलखंडमें चंदेला, मालवामें परमार, कन्नोजमें राष्ट्रकूट व गुजरात और दक्षिण भारतपर चालुक्य राज्य करते थे। कलचूरी लेख है कि उन राजाओंने चंदेलराजा यशोवर्मा (सन् ९२५–'५५) से युद्ध किया था। इस यशोवर्माने कालिंजर लेलिया। अब भी कलचूरी लोग १२वीं शताब्दीतक राज्य करते रहे।

यहां नागोदपर भरहुत स्तूप सन् ई०से तीसरी शताब्दी पूर्वका है।

(२) बुन्देलखंड—इसमें जिला जालोन, झांसी, हमीरपुर और बांदा गर्भित हैं। ११६०० वर्गमील स्थान है।

इसका इतिहास यह है—पहले गोहरवारोंने, फिर परिहारोंने, फिर चंदेलोंने राज्य किया। जिस चंदेलवंशका स्थापक नानक शायद नौमी शताब्दीके प्रथम अर्धभागमें हुआ है। चंदेलोंका चौथा राजा राहिल (सन् ८९०–९१०) था। इसने महोवामें रोहिल्यसागर नामका सरोवर तथा एक मंदिर बनवाया जो अब नष्ट होगया है।

इनका सबसे पहला लेख राजा धांगा (९५०–९९) का है जो बहुत बलवान राजा था। इसने महमूदके विरुद्ध सन् ९७८में लाहोरके जयपालको मदद दी थी।

फिर राजा गांदा या नंदराय (सन् ९९९–१०२५) ने भी जयपालको महमूदके विरुद्ध मदद दी थी ऐसा मुसल्मान इतिहासकार कहते हैं।

चन्देलोंका ग्यारहवां राजा कीर्तिवर्मा प्रथम था उसका पुत्र सल्लक्षण था, जिसने चन्दी व दक्षिण कौशलके राजा कर्णको जीत लिया था। इसने महोबामें कीरतिसागर नामका सरोवर तथा अजयगढ़में कुछ मकान बनवाए। पंद्रहवां राजा मदनवर्मा (११३०–११६५) बड़ा कठोर राजा था। इसने चेदी राज्यको जीता तथा यह कहा जाता है कि इसने गुजरातको भी विजय किया था।

इसके पीछे परमार्दी देव या परमाल (११६५-१२०३) हुआ। इसके राज्यमें दिहलीके पृथ्वीराजने सन् ११८२ में बुन्देलखण्डको जीत लिया। कुतबुद्दीनने सन् १२०३ में देशको ध्वंश किया।

चन्देलोंका राज्य इस हदमें था कि पश्चिममें धसान, उत्तरमें जमना नदी, पूर्वमें विन्ध्यापहाड़ी, पश्चिममें वेतवा, कालिंजर, खजराहा, महोबा और अजयगढ़ तक। शिलालेखोंमें इनके देशको जेजक भुक्ति या जिझोती कहते हैं इसीसे जिझोती ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति है।

बुन्देला लोग—यह कहा जाता है कि इनकी उत्पत्ति पंचम या गहर्वासे है। चौदहवीं शताब्दीमें इनका अधिकार जमा हुआ था। ये मऊ, कालिंजर व काल्पीमें बसे। १५०७ ई० में बाबर बाद-

मालवाके विक्रम संवत सन् ५७ पूर्वके लेख राजपूतानासे प्राप्त हुए हैं। केवल एक लेख मंदसोरमें संवत ४९३ या सन् ४३६ का प्राप्त हुआ है।

बौद्धके समयमें जो भारतमें १६ प्रसिद्ध शक्तियें थीं उनमें अवंति देश भी एक था। उज्जैन बड़ी प्रसिद्ध जगह थी। दक्षिणसे नैपालके मार्गमें उज्जैन पड़ता था। वीचमें महिप्मती तथा विदिशा या भिलसा भी पड़ता था।

पश्चिमी क्षत्रप–सन् ई० के प्रारम्भमें इन लोगोंने मालवा पर राज्य किया था। मुख्य राजा चास्थाना और रुद्रदमन (सन् १५०) थे। फिर गुप्तों तथा सर्कदहूनोंने राज्य किया। चंद्रगुप्त द्वि०ने सन् ३९०में मालवा लिया। हूनोंमें तुरामन और मिहिर कुल प्रसिद्ध थे, करीब ५०० ई० तक राज्य किया। करीब ६०० सन् ई० के नरसिंह गुप्त बालादित्त्य मगधवासी और मंदसोरके राजा यशोधर्मनने राज्य किया। सन् ६०६से ६४८ तक प्रसिद्ध कन्नौज राजा हर्षवर्धनने मालवा पर शासन किया। ८०० से १२०० ई० तक मालवा पर परमार राजपूतोंने राज्य किया जिनकी राज्यधानी पहले उज्जैन फिर धारपर रही। १० वीं से १३ वीं शदीतक १९ राजा हुए हैं उनमें बहुत प्रसिद्ध राजा भोज (सन् १०१०से १०५३) हुए हैं। यह बड़ा विद्वान और वीर था। अन्तमें इस राजाको अहिलवाड़ाके चालुक्योंने और त्रिपुरीके कलचूरियोंने राज्यसे भगा दिया। १२३८के अनुमान मुसल्मानोंका राज्य होगया।

(१) ग्वालियर रेजिडेन्सी।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें चम्बल नदी, दक्षिणमें भिलसा, पूर्वमें बुन्देलखण्ड और झांसी, पश्चिममें राजपूताना। इसमें ग्वालियर राज्य, राघोगढ़, खरुआ, धानी, पारोन, गढ़ उमरी, भदौरा छोटे राज्य शामिल हैं।

ग्वालियर राज्यमें १७२० वर्गमील उत्तर व ८०२१ वर्ग मील दक्षिणमें कुल २५०४१ वर्गमील स्थान है।

पुरातत्त्व—प्राचीन उज्जैनको खुदवानेकी जरूरत है।

सं० नोट—वास्तवमें इस पुराने उज्जैनमें जैन प्राचीनताके बहुत चिह्न मिलेंगे।

पुराने स्मारक भिलसा, वीसनगर व उदयगिरिमें जहां प्रथम शताब्दीके बौद्ध व ४ या ५ शता०के हिन्दू स्मारक देखे जाते हैं। मधकालीन हिन्दू और जैनकी शिल्पकला वरो, ग्वालियर, ग्यारसपुर नरोद व उदयपुरमें है। यह शिल्प १० से १३ शताब्दी तकका है, परन्तु कुटवार या कामंतलपुरमें (नूरावादसे उत्तरपूर्व १० मील) तथा पारोली और परावली (ग्वालियरसे उत्तर ९ मील) में ५ वीं या छठी शताब्दी व उसके पहलेके भी स्मारक हैं। तेराहीके पास राजापुरमें एक स्तूप है।

तेराही, कदवाहा, शिवपुरके पास दूवकुन्डमें प्राचीन स्थान हैं। ग्वालियरसे उत्तर २५ मील सुहानियोंमें हैं तथा उज्जैन नगरसे उत्तर ५ मील कालियादेहमें प्राचीन स्थान हैं। यह सप्रा नदीकी घाटी है। यहां बहुत प्राचीन स्थान हैं।

मुख्य २ स्थान।

(१) वाघ–जि० अमझेरा। मनावरके पास ग्रामके पश्चिम ४ मील बौद्ध गुफाएं हैं जिनको पांच पांडव कहते हैं। यह अजंटाकी गुफाओंके समान ६ तथा ७ शताब्दीकी हैं।

(२) वरो–(बड़नगर) जि० अमझेरा। यह ग्वालियर राज्यमें बहुत प्राचीन स्थान है। अब छोटा नगर है, परन्तु इसके पास प्राचीन नगरके ध्वंश शेष हैं जो पथारी नगर तक चले गए हैं। यह ग्राम गयानाथ पहाड़ीकी तलहटीमें है। यह पहाड़ी विंध्यका भाग है जो भिलसाके उत्तर तक आती है। सरोवरोंके निकट हिंदू तथा जैनोंके मंदिर हैं। एक विशाल जैन मंदिर है जिसको जैन मंदिर कहते हैं इसमें सोलह वेदियां हैं जिसमें जैन मूर्तियां हैं। मध्यमें किसी मुनिका समाधि स्थान है। पन्नाके राजा छत्रसालने १७ वीं शताब्दीमें इस मंदिरको नष्ट किया।

(३) भिलसा नगर–इसके निकट बौद्धोंके ६० स्तूप सन् ई० से तीसरी शताब्दी पूर्वसे १०० सन् ई० तक हैं। प्रसिद्ध स्तूप-सांची, अन्धेरी, भोजपुर, सातधारा व सोनारी (भोपाल)में हैं।

(४) वीशनगर–भिलसाके उत्तर पश्चिम प्राचीन नगर है। उसको पालीमें चैत्यगिरि लिखा है। यहां बौद्धोंके स्मारक हैं। यहां उज्जैनके क्षत्रपोंके, नरवरके, नागोंके व गुप्तोंके सिक्के पाए गए हैं।

जैन शिला लेखोंमें इसको भद्दलपुर कहा है व १०वें तीर्थंकर सीतलनाथका जन्म स्थान माना गया है। वार्षिक मेला होता है। यह नगर सुंग राजा अग्निमित्रका राज्य स्थान था।

(५) चंदेरी–जिला नरवर–नगर व प्राचीन किला। यहांसे ९ मील दूर पुरानी चन्देरी है जो अब ध्वंश स्थानोंका ढेर है। चन्देलोंने इसे बसाया था। इसका सबसे पहला कथन अलबेरूनी (सन् १०३०) ने किया है। यह सुन्दर तनजेबोंके बनानेमें प्रसिद्ध था (कनिंघम रिपोर्ट नं० २ पत्र ४०२)। चन्देरीके किलेके पास पहाडीपर पुरानी कुछ जैन मूर्तियां अंकित हैं। पुराना किला नगरसे २३० फुट ऊंचा है।

कनिंघम रिपोर्ट नं० २में है कि पुरानी चंदेरीको बूढ़ी चंदेरी कहते हैं। यहां चन्देल राजाओंने सन् ७००से ११८४ तक राज्य किया था। यह ३०० फुट ऊंची पहाड़ीपर बसा है। यहां महल है उसके दक्षिण दो ध्वंश मंदिरोंके शेष हैं। इनमेंसे एकमें एक पाषाण है जिसमें १०वीं या ११वीं शताब्दीके अक्षर हैं। इसकी थोड़ी दूरपर छोटा कमरा है जिसमें २१ जैन मूर्तियें हैं उनमें १९ कायोत्सर्ग व दो पद्मासन हैं। ये दोनों सुपार्श्व तथा चन्द्रप्रभुकी हैं। नई चन्देरीकी पहाड़ीके नीचे एक सरोवर है जिसका नाम कीरतसागर है।

(६) ग्वालियरका क़िला—प्राचीन नगरके ऊपर ३०० फुट ऊँची पहाड़ी है उसपर क़िला है। यह किला छठी शताब्दीसे भारतके इतिहासमें प्रसिद्ध है। कहते हैं कि इस किलेको सूरजसेनने स्थापित किया था। यहां एक साधु ग्वालिय रहता था उसने सूरजसेनका कष्ट दूर किया था। यह ग्वालियर उसी साधुके नामसे प्रसिद्ध है। शिलालेखमें इसको गोपगिरि या गोपाचल लिखा है। क़िलेमें राजा तोरामन और मिहिरकुलका शिलालेख

पाया गया है जिन्होंने गुप्तोंके राज्यको छठी शताब्दीमें नष्ट किया था।

नौमी शताब्दीमें यह किला कन्नौजके राजा भोजके आधीन था। इस राजाका लेख सन ८७६ का चतुर्भुज नामके पाषाण मंदिरमें मिला है। कछवाहा राजपूतोंने १० वीं शताब्दीके मध्यसे सन ११२८ तक राज्य किया। फिर परिहारोंने इसपर अधिकार किया। सन ११९६में मुहम्मद गोरीने हमला किया और किलेको ले लिया। सन १२११ में परिहारोंने फिर ले लिया और उसे सन १२३२ तक अपने आधीन रक्खा। फिर मुसल्मानोंने सन १३९८ तक अधिकारमें रक्खा. पीछे फिर तोम्वर राजपूतोंने सन १५१८ तक अधिकारमें लिया। पीछे इब्राहीम लोधीने कबजा किया। तोम्वर राजा मानसिंह (सन १४८६–१५१७) के राज्यमें यह ग्वालियर बहुत प्रभुत्वपर था। इसने पहाड़ीकी पूर्व ओर एक सुन्दर महल बनवाया है। इसकी प्यारी रानी गूजरी मृगनैना थी। तब यह ग्वालियर गान विद्याका केन्द्र था। आइन अकबरीमें जिन ३६ गवैयों और बाजित्रोंका वर्णन है उनमेंसे १५ ने ग्वालियरमें शिक्षा पाई थी इनहीमें प्रसिद्ध तानसेन गवैया था।

सन १५२६ में किलेको बाबरने ले लिया। लक्ष्मण दरवाजेके पास चतुर्भुजका मंदिर पहाड़में कटा हुआ ९ मी शताब्दीका है इसीमें कन्नौजके राजा भोजका लेख सन ८७६ का है। राजाको गोपगिरि स्वामी कहा है।

जैन मंदिर और मूर्तियें–(कनिंघम रिपोर्ट नं० २) हाथी दरवाजा और सास बहू मंदिरोंके मध्यमें एक जैन मंदिर है जिसको

मसजिदमें वदला गया है। खुदाई करनेपर एक नीचेको कमरा मिला है जिसमें कई नग्न जैन मूर्तियें हैं और एक लेख संवत ११६९ या सन् ११०८ का है। ये मूर्तियें कायोत्सर्ग तथा पद्मासन दोनों प्रकारकी हैं। उत्तरकी वेदीमें सात फण सहित श्री पार्श्वनाथजीकी पद्मासन मूर्ति है। दक्षिणी भीतपर पांच वेदियां हैं जिनमें दो खाली हैं। उत्तरकी वेदीमें दो नग्न कायोत्सर्ग मूर्तियां हैं। मध्यमें ६ फुट ८ इंच लम्बा आसन एक मूर्तिका है। दक्षिण वेदीमें दो नग्न पद्मासन मूर्तियां हैं।

उरवाही द्वारपर जैन मूर्तियें—उरवाही घाटीकी दक्षिण ओर २२ नग्न मूर्तियां हैं उनमें ६ लेख संवत १४९७से १५१० अर्थात सन् १४४० और १४५३के मध्यके तोमरवंशी राज्यकालके हैं। इनमें नं० १७–२० व २२ मुख्य हैं। नं० १७में श्री आदिनाथकी मूर्ति है, वृषभ चिह्न है, इसपर वड़ा लेख नं० १८ संवत १४९७ या सन १४४० का है—डुंगरसिंहदेवके राज्यमें स्थापित। सबसे वड़ी मूर्ति नं० २० है जो वावरके कथन अनुसार ४० फुट है, परन्तु वास्तवमें ५७ फुट ऊंची है। पग ९ फुट लम्बा है उससे तीनगुणी लम्बाई है। इस मूर्तिके सामने एक स्तम्भ है जिसके चारों तरफ मूर्तिये हैं। नं० २२ श्री नेमिनाथजीकी मूर्ति ३० फुट ऊंची है।

दक्षिण पश्चिम समूह—उरवाहीकी भीतके वाहर एक थंभा तालके नीचे ५ मूर्तियें हैं। नं० २—एक सोई हुई स्त्रीकी मूर्ति ८ फुट लम्बी है जिसका मस्तक दक्षिणको व मुख पश्चिमको है।

सं० नोट—शायद यह श्री महावीरस्वामीकी माता त्रिशलाकी मूर्ति हो। नं० ३—एक मूर्ति है जिसमें स्त्रीपुरुष बैठे हैं, वच्चा गोदमें है। कनिंघम कहते हैं कि मैं समझता हूं कि यह श्री महा-

वीरस्वामी राजा सिद्धार्थ और त्रिशला सहित हैं।

उत्तर पश्चिमी समूह—दोंधा द्वारके उत्तरमें श्री आदिनाथकी मूर्ति है। लेख सं० १५२७ या सन् १४७० का है।

दक्षिण पूर्वी समूह—गंगोलातलावके नीचे यह सबसे बड़ा और प्रसिद्ध समूह है। यहां १८ मूर्तियें २० फुटसे ३० फुट ऊंची हैं तथा बहुतसी ८ फुटसे १९ फुट उंची हैं। ऊपरसे लेकर आध मीलकी लम्बाईमें कुलपहाड़ीपर ये मूर्तियें हैं। इनका वर्णन नीचे प्रकार है—

गु नं०	नाम तीर्थंकर	आसन	ऊंचाई	चिह्न	सम्वत्
१	अप्रगट	...	३० फुट		
२	...	...	...		
३	आदिनाथ	कायोत्सर्ग	७ फुट	वृषभ	१५३०
	व ४ और	„	७ „		१५३०
	आदिनाथ	„	१४ „		१५२५
४	नेमिनाथ	„	१४ „	शंख	१५२५
	आदिनाथ	„	१४ „	वृषभ	१५२५
५	...	...	...	...	
६	पद्मप्रभु	पद्मासन	१५ „	कमल	
७	...	कायोत्सर्ग	२० „		
८	आदिनाथ	पद्मासन	६ „		
९	...	कायोत्सर्ग	२१ „		
१०	चन्द्रप्रभु	„	१२ „		१५२६
	२ और	„	१२ „		
११	चन्द्रप्रभु	पद्मासन	२१ „	अर्द्ध चंद्र	१५२७
१२	सम्भवनाथ	„	२१ फुट	घोड़ा	१५२५
	व १ और	कायोत्सर्ग			१५२५
१३	नेमनाथ	„		शंख	
	सम्भवनाथ	पद्मासन	२१ फुट	घोड़ा	
	महावीर	कायोत्सर्ग		सिंह	

१४	आदिनाथ	पद्मासन	२६ फुट	वृषभ	१५२५
१५	,,	,,	२८ ,,	,,	
१६	...	,,	३० ,,		
१७	कुन्थुनाथ	कायोत्सर्ग	२६ ,,	बकरा	१५२५
	शांतिनाथ	,,	२६ ,,	हिरण	१५२५
	आदिनाथ	,,	२६ ,,		
	४ और		२६ ,,		
१८	...		२६ ,,		
१९	...		२६ ,,		
२०	आदिनाथ		८ ,,		१५२५
२१	...				

ऊपरके समूहमें २१ गुफाएं हैं।

कचवाहा राजा सूरजसेनने सन २७५में ग्वालियरको बसाया था।

ग्वालियरके कचवाहा वंशके राजा।

संवत्	नाम राजा
९८२	लक्ष्मण
१००७	वज्रदाम
१०३७	मंगल
१०४७	कीर्ति
१०६७	भुवन
१०८७	देवपाल
११०७	पद्मपाल
११२७	सूर्यपाल
११३२	महीपाल
११५२	भुवनपाल
११६१	मधुसूदन

इसी वंशमें राजा मानसिंह सन् १५०६ में हुए।

ग्वालियरके परिहार वंशके राजा।

संवत	नाम राजा
११८६	परमालदेव
१२०३	रामदेव
१२१२	हमीरदेव
१२२५	कुबेरदेव
१२३६	रत्नदेव
१२५१	लोहंगदेव
१२६८	सारंगदेव

१२६९ में गढको अलतमास मुसलमानने लिया।

ग्वालियरके किलेमें जैनियोंके प्रसिद्ध लेख।

नं० ९–संवत ११६९ या सन् ११०८ जैन मंदिरमें
१८– „ १४९७ या सन् १४४० मूर्ति आदिनाथ
डूंगरसिंह राज्य
२१– „ १५२६ या सन् १४६९ मूर्ति चंद्रप्रभु
२७– „ १५३० या सन् १४७३ „ आदिनाथ
कीर्तिसिंहे राज्ये

ग्वालियर गजटियर १९०८में कथन है कि यहां जो तानसेन गवैय्या मानसिंहके स्कूलमें पढ़कर तय्यार हुआ था वह रीवां महाराज राजा रामचंद्रका दर्बार–गवैय्या था और वह सन् १५६२ तक दर्बारमें रहा, तब उसको बादशाह अकबरने बुला भेजा। बादशाहको यह बहुत प्रिय था। आईने अकबरीमें इसको मियां तानसेन व उसके पुत्रको तांतराजखां लिखा है।

ग्वालियर दिगम्बर जैनोंका विद्याका स्थान रहा है। सूरजसेनके वंशमें ८ वां राजा तेजकरण था जिसको परिहारोंने सन् ११२९में हटा दिया।

(७) ग्यारसपुर–भिलसासे उत्तर पूर्व २४ मील। यहां प्राचीन मकान बहुत दूर तक चले गए हैं। सबसे प्रसिद्ध मकान **अठखंभा** कहलाता है। यह ग्रामके दक्षिण बहुत सुन्दर मंदिर है, स्तंभ बहुत उत्तम नक्काशीके हैं। एक खंभे पर एक यात्रीका लेख सन् ९८२का है। सबसे सुन्दर पुराना जैन मंदिर पहाड़ीकी नोक पर **माताका** है जो नौमी या १०वीं शताब्दीका है। इसमें वेदीपर एक बड़ी दिगम्बर जैन मूर्ति है व ३ या ४ और जैन मूर्तियें हैं।

कमरेमें वहुतसी जैन मूर्तियें हैं। वज्रनाथ मंदिर भी जैनियोंका है इसमें तीन मंदिर शामिल हैं।

(८) मंदसोर नगर–एक वहुत प्राचीन नगर है। इसका पुराना नाम दशपुर है। नासिकमें सन् ई०के प्रथम भागका क्षत्रपोंका लेख मिला है उसमें इसका नाम है। एक शिलालेख मंदसोरके पास सूर्य्यके मंदिर वनानेका सन् ४३७में कुमारगुप्त प्रथमके राज्यका है। जैन स्मारक वहुत हैं।

यहांसे दक्षिण पूर्व ३ मील सोंदनी ग्राममें दो सुन्दर स्तम्भ हैं जिनके गुम्वज पर सिंह और वृषभ वने हैं। दोनोंपर जो शिलालेख है उसमें यह कथन है कि मालवाके राजा यशोधर्मन्‌ने शायद सन् ५२८में मिहरकुलको हराया।

(Fleet Indian Antiquary Vol. XV.)

(९) नरोद–जि० नरवर अहिरावती नदीपर। यहां एक पाषाणका वड़ा मठ है इसको कोकई महल कहते हैं, इसकी एक भीतपर एक वड़ा संस्कृतका लेख है जिसमें मठके वनानेका वर्णन है। इसमें राजा अवन्तिवर्मनका वर्णन है, शायद ग्यारहवीं शताब्दीका हो। (कनिंघम रिपो० नं० २ तथा Epigraphica Indica Vol. VII. P. 35)

(१०) नरवर नगर–सिपरी और सोनागिरके मध्यमें–नैषधके नलचरित्रमें इसका वर्णन है। कनिंघम इसको पद्मावती नगर कहते हैं। यहां नागराजा गणपतिके सिक्के पाए गए हैं जिसका नाम अलाहावादके समुद्रगुप्तके लेखमें आया है।

(११) शुजालपुर–जि० सुजालपुर (उज्जैन-भोपाल) रेलवेपर

नसे पश्चिम जैन मंदिर हैं जो अनुमान ६०० वर्ष हुए बने होंगे। भादोंमें दो मेले होते हैं।

(१८) भैरोंगढ–पर्गना व जिला उज्जैन। यहांसे १॥ मील सिप्रा नदीपर एक भैरोंका मन्दिर है। एक पवित्र स्थानपर एक पाषाण है जिसको जैनी पूज्य मानते हैं। यहां आषाढ़ सुदी ११, वैशाख सुदी १४ व कार्तिक सुदी १४ को मेले होते हैं।

(१९) भोंरासा–पर्गना सोनकच्छ जिला शाजापुर। देवास नगरसे पूर्व १० मील एक ग्राम है जिसमें प्राचीन जैन मंदिरोंके ध्वंश–काले सय्यदकी कब्रके पास पड़े हैं। यहां भुवनेश्वर महादेवका जो मंदिर है उसमें खुदे हुए पाषाण लगे हैं जो पुराने जैन मंदिरोंसे लाकर लगाए गए हैं क्योंकि वहुतोंपर जैन मूर्तियां वनी हैं।

(२०) दूवकुंड–पर्गना और जिला शिवपुर। एक उजाड़ ग्राम है। एक पहाड़में खुदे हुए सरोवरके कोनेपर दो प्राचीन मंदिर हैं जिनमें एक मुख्य जैनका है। यह ८१ फुट वर्ग है। इसमें तीन तरफ आठ वेदियां हैं व पूर्व तरफ सात वेदियां हैं, वहीं दरवाजा है। मंदिर व वेदियोंमें बहुत बढ़िया कारीगरीकी खुदाईके दरवाजे हैं। इनमें नग्न मूर्तियां वनी हैं। यह दिगम्बर जैन मंदिर है। इस मंदिरको अमर खंड्ड मराठाने नष्ट किया था। एक खम्भेपर ५९ लाइनका बड़ा लेख है। यह लेख कच्छपघट (कछवाहा) वंशके राजाओंका है। इस लेखको महाराज विक्रमसिंह कच्छपघटने लिखाया था। इस लेखके दो भाग हैं। पहलेमें किसी अर्जुनका व उसकी सन्तानोंका वर्णन है जिसकी प्रशंसा धारके राजा भोजने की थी। दूसरेमें मंदिरके स्थापनका कथन है।

यह वि० सं० ११४५ या सन् १०८८ का है। यह लेख बहुत उपयोगी है, क्योंकि इसका सम्बन्ध दूसरे लेखोंसे है।

(Conningham A. S. R. XX P. 99 & Epigraphica Indica II P. 237).

नकल लेख दूबकुंड।

Ep. I. Vol. II P. 237.

Dubkund (Gwalior) Jain Temples.

(१) ओं नमो वीतरागाय। आ–द्रन्टि–..टना (घत्पा) दपीठं लुठन्मं (दा) रत्न गमं (द) गुंज (द) लि (म) न्निष्ठ्यूत सांराविणम् (त) (२) (त्पा) ंवद्ध (चः) .रसु——. (तां) .ि ट्टे (ग) मिवाकरोत्स ऋषभ स्वामी श्रियेस्तात्सता (म्)। विश्रा–(३) णोगुण संहतिं हततमस्तापो निज ज्योतिषा, युक्तात्मापि जगंति संगत जयश्चक्रे सरागाणि यः उन्माद्यन्म–(४) करध्वजोर्जित-गजग्रासोल्लसत्केसरी संसारोग्रगदच्छिदेस्तु स मम श्रीशान्तिनाथो जिनः॥ जाड्यं सत्वदखंडित–(५) क्षयमपि क्षीणाखिलोपक्ष यं साक्षादीक्षितमक्षिभिर्दधदपि प्रौढं कलंकं तथा। चिन्हत्त्वाद्यदुपांतमाप्य मततं जात (६) स्तथा? नंदकृच्चन्द्रः सर्वजनस्य पातु विपद–श्चन्द्रप्रभोऽर्हन्स नः॥ शोकानोकहसंकुलं रतितृणश्रेणि प्रणश्यद्भ्रम (७) त्माध्वगपूगमुद्गतमहामिथ्यात्त्ववातध्वनि। यो रागादिमृगोपघात-कृतधीर्ध्यानाग्निना भस्मसाद् भावं कर्म्म (८) वनं निनाय जयतात्सोयं जिनः सन्मतिः॥ प्रसाधितार्थगुर्भव्यपंकजाकर (भास्करः)। अंतस्तमोपहो वोस्तु गो–(९) तमो मुनिसत्तमः॥ श्रीमज्जिनाधिपति सद्वदनारविंद मुद्गच्छदच्छतरबोध समृद्धगंधम्। अध्यास्य या जगति

पंकजवासिनी-(१०) ति ख्यातिं जगाम जयतु श्रुतदेवता सा॥ आसीत्कच्छपघातवंशतिलकस्त्रैलोक्यनिर्यद्यशः पांडु श्रीयुवराज-सूनुर-(११) समद्युद्भीमसेनानुगः। श्रीमानर्जुनभूपतिः पतिरपाम-प्यापयत्तुल्यतां नो गांभीर्यगुणेन निर्जित जगद्धन्वीधनु-(१२) र्विद्यया श्रीविद्याधर देव कार्यनिरतः श्रीराज्यपालं हठात्कंठांस्थिच्छिदनेक-वाणनिवहैर्हत्वामहत्त्याहवे। (१३) डिंडीरावलिचंद्रमंडलमिलन्मुक्ता-कलापोज्ज्वलैस्त्रैलोक्यं सकलं यशोभिरचलैर्योजस्रमापूरयत्॥ यस्य (१४) प्रस्थानकालोत्थितजलधिरवाकारवादित्रशब्दावेगान्निर्गच्छद-द्रिप्रतिमगजघटाकोटिघंटारवाश्चा संस-(१५) पंतः समंतादहमहमिकया पूरयंतो विरेमुर्नोरोदोरंध्रभागं गिरिविवरगुरूद्यत्प्रतिध्वानमिश्राः॥ दिकुच-(१६) क्राक्रमयोग्यमार्गणगणाधारानेकान् गुणानच्छिन्ना-ननिशं दधद्विधुकला संस्पर्द्धमानद्युतीन्। सूनु-(१७) च्छिन्नधनुर्गुणं-विजयिनोप्याजौ विजितोर्जितं, जानो स्मादभिमन्युरन्यनृपतीनाम-न्यमानस्तृणम्॥ यस्यात्यद्भुत-(१८) वाहवाहनमहाशस्त्रप्रयोगादिषु, प्रावीण्यं प्रविकत्थितं प्रथुमति श्रीभोजपृथ्वीभुजा च्छत्रालोकनमात्र-जात-(१९) भयतोद्दप्तादि भंगप्रदस्यास्य स्याद्गुणवर्ण्णने त्रिभुवने को लब्धवर्ण्णः प्रभुः॥ तुरगखरखुराग्रोत्खातधात्री-(२०) समुत्थं स्थगयदहिमरश्मेर्मंडलं यत्प्रयाणे। प्रचुरतररजोन्याशेषतेजस्वितेजो-हतिमचिरत-(२१) एवाशंसतीर्वानिवारम्॥ शरदमृतमयूखप्रेंख-दंशुप्रकाशप्रसरदमितकीर्त्तिव्याप्तदिक्चक्रवालः। अजनि विजय-(२२) पालः श्रीमतो स्मान्महीशः शमितसकलधात्री-मंडलक्लेशलेशः॥ भयं यच्छत्रूणां त्रिदशतरुणी वीक्षितरणे। (२३) क्रमेणाशेषाणां व्यतरदसदप्यात्मनि सदा। सतोप्यंशन्नादादवनिवलयस्याधिकमतो बुधा-

सहित दिया हुआ है। यह कुनू नदीके तटपर ग्वालियरसे दक्षिण पश्चिम ७६ मील है। एक कोटके भीतर यह मंदिर है, चारों तरफ घर हैं व छोटे कई मंदिर हैं। यह लेख संस्कृतमें ६१ लाइनका है। श्लोकमें हैं। यह जिनमन्दिर निर्मापणकी प्रशस्ति है। इस प्रशस्तिको श्री विजयकीर्ति महाराजने रचा था। जिसको उदयराजने पाषाणमें लिखा था और तिल्हाणने खोदा था (लाइन ४६, ६०–६१)।

लेखका भाव।

लाइन १ से १० तक मंगलाचरण है। पहले श्रीऋषभदेवकी स्तुति है। फिर शान्तिनाथ भगवानकी स्तुति है कि प्रभुने गुणसमुदायको प्राप्त किया है, अज्ञानका आताप नाश किया है, अपनी ज्ञान ज्योतिसे युक्त होनेपर भी जिन्होंने रागादि भावोंको जीत लिया है तथा जो मदयुक्त कामदेवरूपी हाथीके नाश करनेको सिंहके समान है ऐसे शान्तिनाथ महाराज हमारे संसारका भयानक रोग नष्ट करें। फिर श्री चन्द्रप्रभुकी स्तुति है कि वे चंद्रनाथ भगवान हमको विपत्तियोंसे बचावें जो सर्व जनोंको आनन्द दाता है इत्यादि (शेष भाव नहीं समझमें आया।) पश्चात् श्री सन्मति नामधारी श्री महावीरस्वामीकी स्तुति है। जिसने महामिथ्यात्वके मार्गमें जाते हुए रागादि मृगोंको ध्यानकी अग्निसे भस्म कर दिया है व कर्मोंके वनको जला दिया है व शोकके वृक्षके समूहको व रतिकी तृण श्रेणीको नाश कर दिया है इत्यादि सो जिनेन्द्र जयवंत हों। फिर श्री गौतम गणधरकी स्तुति है कि जो अपने कार्यको सिद्ध करनेवाले भव्य जीव रूपी कमलोंके समूहके लिये

सूर्यके समान हैं वे तुम्हारे अंतरंग अज्ञान अंधकारको दूर करें। फिर श्री जिनवाणीकी स्तुति है कि जो श्री जिनेन्द्रके मुख-कमलसे निकलकर निर्मल ज्ञानके गंधको विस्तारनेवाली है, इसीसे श्रुतदेवती या सरस्वतीको जगतमें कमलवासिनी कहते हैं।

फिर १० से ३१ लाइन तक महाराज विक्रमसिंह और उनके वंशका वर्णन है।

कच्छपघातवंशका तिलक तीन लोकमें जिनका निर्मल यश व्याप्त था, इससे पवित्र श्री युवराजका पुत्र अर्जुन राजा था जो भयानक सेनाका पति था, जिसकी गंभीरताकी तुल्यता समुद्र भी नहीं कर सक्ता था व जिसने अपनी धनुष विद्यासे पृथ्वीको या अर्जुनको जीत लिया था, जो श्री विद्याधर देवके कार्यमें लीन था व जिसने महान् युद्धमें प्रसिद्ध राज्यपाल राजाको उसके कंठकी हड्डीको छेदनेवाले अनेक बाणोंसे जीत लिया था। जिसने अपने अविनाशी यशसे—जो मोतियोंकी माला व समुद्रका फेन या चंद्र मंडलके समान निर्मल था एकदम तीन लोकको पूर्ण कर दिया था। जिस समय वह प्रस्थान करता था उस समयके उसके बाजोंकी ध्वनि समुद्रकी गर्जनाके समान थी व जिसके साथ शीघ्र जाते हुए पर्वत समान हाथीके समूहोंमें जो घंटोंके शब्द होते थे वे चारों तरफ फैलते हुए एक दूसरेको देखते थे तथा वे आकाश और पर्वतकी गुफाको भी अपने शब्दोंसे भरनेमें चूकते न थे, उनके साथ पर्वतकी गुफाओंसे निकली हुई गूंजें भी मिल जाती थीं।

उसका पुत्र राजा अभिमन्यु था जो रात्रि दिन अनेक अखंडित गुणोंका धारी था, जो गुण चहुं ओरसे आनेवाले शरणा-

गतोंके लिये आधार रूप थे व जिसकी प्रभा चंद्रज्योतिको जीतती थी व जो अन्य राजाओंको तृणके समान गिनता था व जिसने बड़े २ विजयी राजाओंको जीत लिया था व जिसका धनुष-बाण कभी खंडित नहीं होता था।

जो सर्वागता वह घोड़े व रथोंके चलानेमें व शस्त्रोंके प्रयोगादिमें दिखाता था, उसकी महिमा प्रसिद्ध भोजराजाने वर्णन की थी. जिसके छत्रको देखने मात्रसे बड़े २ मानी शत्रु भयसे भाग जाते थे. ऐसे राजाके गुणोंको वर्णन करनेमें तीन लोकमें कौन कवि समर्थ हो सक्ता है।

जब वह प्रयाण करता था मोटे २ रजके बादल पृथ्वीसे उठते थे जब भूमिपर घोड़ोंके खुर पड़ते थे। और वे सूर्यमंडलको आच्छादित करते हुए यह संदिग्ध वाणी कहते थे कि वास्तवमें अन्य सर्व तेजस्वियोंका तेज इनके मानसे नष्ट हो जायगा।

इस प्रसिद्ध राजाका पुत्र कुमार विजयपाल था जिसने शरद्-कालके चन्द्रमाकी किरणके समान प्रकाशमान अमर्यादित यशसे चहुंदिशाको व्याप्त कर दिया था और जिसने पृथ्वीमंडलके सर्व क्लेशोंका नाश कर दिया था।

यह राजा विद्वानोंके हृदयमें बहुत आश्चर्य उत्पन्न करता था जब वह देवियोंसे देखने योग्य युद्धमें क्रमसे सर्व शत्रुओंको भय उत्पन्न कर देता था। यद्यपि वह स्वयं उनसे पृथ्वी नहीं लेता था तथापि अपनी पृथ्वीका लेशमात्र भी उनको नहीं लेने देता था। इस राजाका पुत्र प्रसिद्ध विक्रमसिंह हुआ जिसका नाम पराक्रममें सिंहके समान होनेसे सार्थक था, क्योंकि अपने वीर्यके प्रभावसे

इसने अपने सर्व शत्रुओंकी हाथियोंकी सेनाकी कुम्भस्थलीको विदारण कर दिया था व जिसका निर्मल यश सिंहके बालोंके समान चारों तरफ फैला हुआ था।

जब कि वह बालक था तब ही उसकी दाहनी भुजाको वीर लंक्ष्मीने और सबका आश्रय त्यागकर आश्रित कर लिया था। यह देखकर जब वह बड़ा हुआ तब राज्य लक्ष्मीने उसकी उच्चताके प्रकाशमें अहंकार युक्त होकर सर्व अन्य मनुष्योंसे घृणा करके उसके सर्व अंगको स्पर्श करनेका संकल्प कर लिया था। वास्तवमें वह सूर्य वृथा ही है जबतक कि यह महाराजरूपी सूर्य बड़े २ मानी शत्रुओंके घोर अन्धकारको हटा रहा है, अनीतिगामी तारावलीको ढक रहा है व सर्व जगतमें प्रकाश कर रहा है तथा अपने महत्वकी भयानक किरणोंसे दिगन्त व्यापी होकर पर्वत समान राजाओंको स्पर्श कर रहा है। जब यह दिग्विजय करता था इसके चुने हुए घोड़ोंके तेज खुरोंसे खण्डित पृथ्वी मंडलसे जो रज उड़ती थी वह उसके शत्रुओंके मुख्य नगरोंपर फैल जाती थी और सर्व पदार्थोंको ढक देती थी जो बतलाती थी कि मानों यह प्रलयकाल ही आगया है। इस महाराजाका नगर चडोभ है जिसकी शोभा चहुंओर व्याप्त है। इसके सुन्दर बाजार और उन्नत व्यापारकी महिमा लोगोंमें प्रसिद्ध है जो यहां सर्व ओरसे अपने पासकी वस्तुओंको बेचने और खरीदनेकी इच्छासे आते हैं।

नोट—इस ऐतिहासिक वर्णनसे यह पता चला है कि कच्छपघात वंशमें महाराजा भवराज थे। उनका पुत्र विद्याधर देवका मित्र राजा अर्जुन था जिसने राज्यपालको युद्धमें मारा था। उसका

पुत्र अभिमन्यु था जिसकी महिमा महाराज भोजने की थी, उसका पुत्र विजयपाल था, विजयपालका पुत्र विक्रमसिंह था। इसीके राज्यमें यह शिला लेख लिखा गया।

इस कच्छपघात वंशके दो शिलालेख और हैं। एक वि०सं० ११५० का ग्वालियरके सासबहु मंदिरपर है जिसमें लक्ष्मण, वज्रदामन, मंगलराज, कीर्तिराज, मूलदेव, देवपाल, पद्मपाल और महीपाल राजाओंका क्रम है।

दूसरा नरवरका ताम्रपत्र है जो वि० सं० ११७७का वीरसिंह देवका है जो गगणसिंहदेव फिर शारदसिंहदेवके पीछे हुआ था। ये भिन्न२ वंश हैं जो ग्वालियरके आसपास राज्य करते थे। इस लेखमें जो राजा विजयपाल हैं यह वही नृपति विजयाधिराज हैं, जिनका वर्णन बयानाके शिलालेख वि० सं० ११०० में है। यह बयाना दूबकुण्डसे ८० मील उत्तर है। यह बयानाका लेख भी जैन शिलालेख है। यहां जो राजा भोजका कथन है वह मालवाके परमार भोजदेव ही हैं। लेखमें जो विद्याधरदेवका कथन है वह चंदेलके राजा हैं जो गंडदेवके पीछे हुआ व इसके पीछे विजयपालदेवने राज्य किया है।

दूबकुण्डका प्राचीन नाम चडोभ था। लाइन ३२से ३९में जैन व्यापारी रिषि और दाहडकी वंशावली दी है। जायसपुरसे आए हुए वणिक वंशरूपी आकाशमें सूर्यके समान प्रसिद्ध धनवान सेठ जासूक था जो सम्यग्दृष्टी था व श्री जिनेन्द्र चरणकी पूजामें व श्रद्धानपूर्वक पात्रोंको चार प्रकारका दान देनेमें लीन था। इसका पुत्र जयदेव था जो जिनेन्द्रकी भक्तिमें भ्रमर

समान था, निर्मल कीर्तिवान था व सज्जनोंके लिये उत्तम चारित्रवान था। उसकी स्त्री यशोमति थी जो अपने रूपसे, शीलसे, कुलसे सर्व स्त्रीके गुणोंमें शिरमौर थी व पृथ्वीमें प्रसिद्ध थी। उस स्त्रीके दो पुत्र हुए एक ऋषि दूसरे दाहड, जो सुंदर मूर्ति थे तथा पूर्व दिशामें सूर्य चन्द्रके समान शोभनीक थे। ये धनके उपार्जनमें व्यवहारकुशल थे। इन दोनोंमेंसे बड़े भाई ऋषिको अनेक महल व कोटसे शोभित नगरमें राजा विक्रमने श्रेष्ठीपद प्रदान किया था।

फिर लाईन ३९ से ४८ तकमें उस समयके जैन आचार्योंका वर्णन है।

श्रीलाट वागट गणके उन्नत पर्वतके मणि रूप निर्मल दर्शनज्ञान चारित्रके कारण व अनेक आचार्य जिनकी आज्ञाको मस्तक चढ़ाते हैं ऐसे गुरु देवसेन महाराज प्रसिद्ध हुए। जिन्होंने निश्चय व्यवहार रूप दोनों प्रकारके सिद्धांतको निर्बाध बुद्धिसे जानकर प्रमाण मार्गसे ग्रन्थोंमें संकलित किया, जिससे वे परम ऐश्वर्यको प्राप्त हुए व जिनके हाथमें मानो मुक्ति ही आगई। उनके शिष्य कुलभूषण मुनि हुए जो दिगम्बर मुनियोंमें मुख्य थे व सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रके अलंकारसे भूषित थे। उनके शिष्य श्रीदुर्लभसेन आचार्य थे जो रत्नत्रयमई आभरणसे शोभित थे जो सर्व शास्त्रको पढ़कर आत्म स्वरूपमें लीन थे व परम धैर्य्यवान थे। इनके शिष्य श्री शांतिसेन गुरु थे जिन्होंने अस्थानके स्वामी राजा भोजकी सभामें अपनी वादकलासे सैकड़ों मदयुक्त वादियोंको जीत लिया था जिन्होंने पंडित अम्बरसेन

आदि विद्वानोंपर आक्रमण किया था। यह शास्त्र समुद्रके पारगामी थे। उनके शिष्य श्री विजयकीर्ति थे जो अपने गुरुके चरणकमलकी आराधनाके पुण्यसे निर्मल बुद्धिके धारी थे व शुद्ध रत्नत्रयके पालक थे इन्होंने ही रत्नोंकी मालाके समान इस प्रशस्तिको लिखा है। लाइन ४८ से ९२ तक श्री जिन मंदिरके निर्माताओंका वर्णन है।

श्री विजयकीर्ति महाराजसे परमागमका सारभूत उपदेश पाकर कि यह लक्ष्मी, बंधु सुहृद्का समागम व यह आयु या शरीर नाशवंत हैं। इस धर्मस्थानके रचनेका प्रारंभ सज्जन दाहडने और उनके साथी विवेकवान कूकेक, पुण्यात्मा सूर्पट, शुद्ध व धर्म कर्ममें निपुण देवधर व महिचन्द्र व अन्य चतुर श्रावकोंने किया। लक्ष्मण व जिनभक्त गोष्ठिकने भी मदद दी। इन्होंने अमृतके समान श्वेत जिन मंदिर उच्च शिखर सहित तीन जगतको आनंद देनेवाला सुन्दर बनवाया। लाइन ९४ से ६० तक गद्यमें महाराज विक्रमसिंहने जो जिनमंदिरको दान किया उसका कथन है। इन जिन मंदिरके रक्षण, पूजन, सुधार व जीर्णोद्धारके लिये महाराजाधिराज श्री विक्रमसिंहने अपने दिलमें पुण्य राशिके अमर्याद प्रसारको धारणकर हरएक अन्नकी गोणीपर एक विंशोपक नामका कर बिठाया व महाचक्र ग्राममें चारगोणी गेहूं बोने योग्य खेत तथा रजकद्रहके पूर्व एक बाग कूपसहित प्रदान किया तथा दीपकादिके लिये कुछ बड़े तेलके प्रदान किये और आज्ञा की कि आगेके राजा बराबर इस आज्ञाको मानें कि जिसकी भूमि है उसीको उसको फल मिलना चाहिये। लाइन ६१में प्रशस्ति लिखनेवाले

उदयराज व खोदनेवाले तील्हणका वर्णन है। संवत ११४९ भादों सुदी ३ सोमवार।

नोट—इससे विदित होता है कि दूबकुंडमें देवसेन दिगंबराचार्य बहुत प्रसिद्ध होगए हैं तथा राजा भोज मालवाधीशके समयमें शांतिसेन मुनिने वाद करके विजय प्राप्त की थी। जायसपुर निवासी ही जायसवाल जातिके लोग हैं। यह जायसपुर अवधका जायस है या दूसरा है सो पता लगाना योग्य है।

जैसवाल जातिके लिये यह लेख बड़े महत्त्वका है। राजा विक्रमसिंह भी जैन भक्त प्रतीत होता है।

(२१) गंढवल—परगना सोनगच्छ जिला शोजापुर। सोनकच्छसे उत्तर ६ मील प्राचीन ग्राम है। यह बहुत प्राचीन स्थान है। बहुतसे पुराने सिक्के मिलते हैं। बहुतसे मंदिर ध्वंश पड़े हैं। जैन मूर्तियें बहुतसी हैं जिनमें एक ९ फुट लम्बी है व दूसरी १४ फुट लम्बी है, परन्तु इसके पग खंडित हैं।

(२२) खिलचीपुर—जि० मंदसोर ग्रामके उत्तर एक कूएंपर सूवतेहून मिहिरकूलके विजयिता राजा यशोधर्मनका कथन है। सन् ९३३–९३४। इस कुएको किसी दक्षने संवत ९८० में बनवाया था।

(२३) कोटवल या कुटवार—पर्गना नूराबाद जिला तोबंरगढ़। नूराबादके उत्तर–पूर्व १० मील एक पहाड़ीपर बसा है। प्राचीन नाम कमंती भोजपुर या कमंतलपुर है। बहुत प्राचीन स्थान है। पुराने सिक्के मिलते हैं। एक वर्ग मील तक ध्वंश स्थान हैं। एक महावीरजीके मंदिरके बाहर कुआं १२० फुट गहरा है।

(२४) मउ–परगना महगांव जि० भिंड–महगांवसे १६ मील। यहां श्री पार्श्वनाथजीके नामसे कुंआरमासमें एक बड़ा जैन धार्मिक मेला हुआ करता है।

(२५) पानविहार–पर्गना उज्जैन–यहांसे उत्तर ८ मील। यहां ग्राममें पुराने जैनमंदिरोंके ध्वंश हैं। बहुतसे खुदे हुए पत्थर जो पहले जैन मंदिरोंमें लगे थे बहुतसे मकानोंकी भीतोंपर लगे देखे जाते हैं।

(२६) राजापुर या मायापुर–पर्गना पिछार जि० नरवर। महुअर नदी पर ग्रामके उत्तरपूर्व करीब १ मीलपर एक पाषाणका बौद्धस्तूप है जो ४९॥ फुट लम्बा है। इसको कोठिलामठ कहते हैं। यह दर्शनीय है।

(२७) सुहानियां (सोंनियां या सिहोनिया) पर्गना गोहड़ जिला तोंवरघार। यह बहुत ही प्राचीन ऐतिहासिक ग्राम है।

लश्करसे पूर्व ३८ मील कटवरसे उत्तर पूर्व १४ मील है। असनी नदीके वाएं तटपर है। इसको ग्वालियरके संस्थापक सूरज-सेनके बुजुर्गोंने स्थापित किया था। कनिंघम साहबने यहां शिलालेख वि. सं. १०१३, १०३४ व १४६७के पाए हैं। ग्रामके पश्चिम एक स्तम्भ हैं जिसको भीमकीलाट कहते हैं दक्षिणकी ओर कई दिगम्बर जैन मूर्तियां हैं। इस नगरको कन्नौजके विजयचंदने सन् ११७०में ले लिया था। यहां किलेके दक्षिण आध मील पर एक बडी जैन मूर्ति १५ फुट ऊंची है। जिसपर सं० १४६७ है। इसके पास दो जैन मूर्तियें छः छः फुट ऊंची हैं। सर्व ही नग्न कायोत्सर्ग हैं। श्रावक लोग पूजते हैं।

(२८) सुन्दरसी--पर्गना सोनकच्छ जि० शोजापुर। शोजापुरसे पश्चिम १९ मील। यहां सन् १०३२ में राजा सुदर्शन राज्य करते थे। एक जैन मंदिर है जिसमें लेख सं० १२२१का है।

(२९) सुसनेर–पर्गना सुसनेर जि० शोजापुर--शोजापुरसे उत्तर ३६ मील। यहां प्राचीन जैन मंदिर है।

(३०) तेरही–पर्गना व जि० ईसागढ़। नरोदसे दक्षिण पूर्व ८ मील। यहां बढ़िया पुरातत्व है। दो प्राचीन मंदिर हैं। एकमें बढ़िया खुदाई है। यहां दो खम्भे पड़े हैं उनपर भी लेख हैं। एकमें यह कथन है कि यहां मधुवेनी नदी (जो अब महुअर कहलाती है) हैं। एक युद्ध महा सामंताधिपति उंदभट्ट और गुणराजके मध्यमें हुआ था जिसमें प्रसिद्ध वीर चांडियाना भाद्र वदी ४ सं० ९६० शनिश्चारको मारा गया था। यह लेख बहुत उपयोगी है क्योंकि उदंभट्टका नाम ९६४ संवतके सय्यादरीके लेखमें आता है। यह कन्नोजके राजाके आधीन था।

(३१) उनचोड–पर्गना सोनकच्छ–यहांसे दक्षिण पूर्व २८ मील एक पाषाण भीत है। एक द्वार जैन मंदिरोंके ध्वंशोंसे बनाया गया है।

(३२) उन्द्रास–पर्गना उज्जैन–इसको जबराबाद, कहते हैं। यह उज्जैनसे पूर्व ४ मील है। यहां एक बड़ा सरोवर है जिसको रत्नागरसागर कहते हैं। उसका तट जैन मंदिरोंके अंशोंसे बनाया गया है।

(३३) सारंगपुर–भिलसासे पश्चिम ८० मील व आगरसे पूर्व दक्षिण ३४ मील। यहां सन् ई० से १०० से ५०० वर्ष पूर्वके पुराने सिक्के पाए जाते हैं।

रामपुर–भानपुर जिला–यहां २१२३ वर्गमील स्थान है। बहुतसे प्राचीन स्थान यहांपर हैं जो इसे महत्वका स्थान प्रगट करते हैं। सातवींसे ९ मी शताब्दी तक यह बौद्धोंका स्थान रहा है। धमनेर, पोलादनगर और खोलवींमें बौद्ध गुफाएं हैं। नौमीसे १४ वीं शताब्दी तक यह परमार राजपूतोंका एक भाग था जिनके राज्यके बहुतसे जैन मंदिर अवशेष हैं। इस वंशका एक शिलालेख हालमें मोरी ग्राममें मिला है जो गरोट पर्गनामें है। शामगढ़ स्टेशनसे ६ मील है।

निमाड़ जिला–यहां ३८७१ वर्गमील स्थान है। प्राचीन बौद्धकालमें यह उपयोगी ऐतिहासिक जगह थी। यहां दक्षिणसे उज्जैन तक मार्ग एक तो महिष्मती या महेश्वर होकर जाता था दूसरा पश्चिममें ८ चीकलदा और ग्वालियर राज्यमें बाघ होकर जाता था। सराऐं पाई जाती हैं। तीसरी शताब्दीमें इसके उत्तरीय भागपर हैहय वंशवालोंका राज्य था जिन्होंने महिष्मतीको राज्यधानी बनाया था। नौमी शताब्दीमें मालवाके परमारोंने राज्य किया था। उनके राज्यके चिह्न जैन व अन्य मंदिरोंमें मिलते हैं जैसे ऊन, हरसुद, सिंधाना और देवलापर।

इन्दौरके प्रसिद्ध स्थान।

(१) धमनेर–गुफाऐं–झालरापाटनसे दक्षिण पश्चिम ५० मील। चन्दवाससे पूर्व २ मील, शामगढ़ स्टेशनसे १३ मील है। यहां बौद्ध और ब्राह्मणकी गुफाएं हैं। १४ वीं बौद्ध गुफा प्रसिद्ध है। इसको बड़ी कचहरी कहते हैं। भीमका बाजार नामकी गुफा

बहुत ही सुन्दर है जिसमें ५वीं, छठी शताब्दीके मध्यकी बौद्ध मूर्तियां हैं। ब्राह्मण गुफाएं ८ वीं और ९ शताब्दीके मध्यकी हैं। नं० १३की गुफाको छोटाबाजार कहते हैं। यहां १९ मूर्तियां हैं जो जैन या बौद्धकी होंगीं। ऐसी गुफाएं पोलाद नगर (गरोटके पास), खोलवी, आवर, बेनैगा (झालावार), हातीगांव, रैणगांव (टोंक) में हैं। ये सब २० मीलकी चोड़ाईमें हैं। धमनेरकी पहाड़ी १४० फुट ऊंची है। घेरा २ या ३ मीलकी है। सबसे बड़ा दर्शनीय एक पाषाणका मंदिर धर्मनाथजी पहाड़ीपर है। यह एल्लूरांके कैलास मंदिरके समान है। यह जैनका होना चाहिये, जांचकी जरूरत है।

(२) महेश्वर—नीमाड़ जिला, नर्मदानदीके उत्तर तटपर प्राचीन नगर है। इसको चोली महेश्वर कहते हैं। चोली इसके उत्तर ७ मील पर है। इसका नाम रामायण, महाभारत व बौद्ध साहित्यमें आया है। यह दक्षिण पैथनसे श्रावस्ती जाते हुए मार्गमें पड़ता है। उस मार्गमें मुख्य ठहरनेके स्थान हैं। महिष्मती, उज्जैन, गोणद्ध, भिलसा, कौसम्बी व साकेत इस नगरीका हैहयवंशी राजाओंसे जो चेदीके कलचूरी राजाओंके बुजुर्ग थे प्राचीन सम्बन्ध रहा है। कलचूरियोंके अधिकारमें मध्य भारतका पूर्व भाग नौमीसे बारहवीं शताब्दी तक था। इस वंशका प्रसिद्ध राजा कार्तवीर्यार्जुन इस नगरीमें रहता था ऐसा माना जाता है। पश्चिमी चालुक्य राजा विनयदित्यने सातवीं शताब्दीमें यहांके हैहय वंशियोंको पराजित किया तब महिष्मती उसके अधिकारमें आगया। इसके नीचे हैहय राजाओंने गवर्नरके रूपमें कार्य किया। कात्यायनने पाणिनी व्याकरणकी टीकामें इस नगरीका नाम लिखा है। यह नगरी रंगीन

सारी व रेशमी पाड़की धोतीके बनानेके लिये प्रसिद्ध था।

सं० नोट—यहां पोरवाड़ दि० जैनियोंका मुख्य स्थान रहा है।

(३) ऊन—परगना खड़गांव—यहांसे ११ मील। नीमाड़ जि० बहुत प्राचीन स्थान है। यहां १२ वीं शताब्दीके जैन मंदिर हैं। एक मंदिरमें धारके परमार राजाओंका लेख है। यह नरमदाके दक्षिण सनावद स्टेशनसे ६० मील है। खजराहाके मंदिरोंके समान यहां भी विशाल मंदिर जैन और हिन्दू दोनोंके हैं। जैन मंदिरोंको विना सम्हालके छोड़ दिया गया है। ये मंदिर दिगम्बर जैनियोंके हैं जिनके माननेवाले इस प्रदेशमें बहुत कम रह गए हैं परन्तु हिन्दू मंदिरोंमें अब भी पूजा पाठ जारी है। ग्रामकी उत्तरी हद्दकी ओर जैन मंदिर हैं जिनमेंसे दो मंदिरोंको चौवारादेरा कहते हैं। चौवारा देहरा नं० २ का शिखर कुछ गिर गया था। यह बहुत ही उपयोगी मंदिर सर्व समूहके मध्यमें है क्योंकि इसमें मंदिरोंके बननेकी मितीका पता लगता है। इस मंदिरके अन्तरालमें तीन शिलालेख हैं, जिनसे प्रगट होता है कि मुसलमानोंके अधिकारके पहले यह मंदिर बच्चोंके लिये विद्यालयके काममें आता था। एक छोटे वाक्यमें मालवाके उदयदित्य राजाका नाम है जिससे प्रमाणित होता है कि ये मंदिर उसके समयसे पहले बने थे। दूसरे लेखमें मात्र संस्कृत व्याकरणके कुछ सूत्र हैं, तीसरा लेख एक सर्पके ऊपर सर्पबन्ध रचनामें अंकित है, इसमें स्वर और व्यंजन अक्षर दिये हैं। चौवारा देहरा नं० १ में जैन मूर्तियां नहीं रही हैं किन्तु चौवारा देहरा नं० २ और ग्वालेश्वरके जैन मंदिरमें दिगम्बर जैनोंकी बड़ी २ मूर्तियां हैं। दोनों ही मंदिर मध्यका-

लीन भारतीय शिल्पकलाके सुन्दर नमूने हैं, यद्यपि ग्वालेश्वरके मंदिरका नकशा चौवारा देहरा नं० २ से बहुत बढ़िया है। ये दोनों ही मंदिर खड़गांवसे ऊन जानेवाली सड़कपर हैं। इस चौवारा देरा नं० २ के गर्भग्रहमें तीन दिगम्बर जैन मूर्नियां एक आसनपर खड़ी हैं। इनमेंसे एक पर विक्रम सं० १३ मालूम होता है। ग्वालेश्वर मंदिरके गर्भग्रहमें एक पहाड़ीपर तीन बड़ी दिगम्बर जैन मूर्तियां एक आसनपर हैं। प्रछाल करनेको मस्तक तक पहुंचनेके लिये सीढ़ी बनी हैं जैसे खजराहामें श्री ऋषभदेवके मंदिरमें हैं। चौवारा देरा नं० १ और खड़गांव ऊन सड़कके मध्यमें और भी मंदिर हैं (A. S. R. 1918-19 P. 17), चौवारा देहरामें एक बड़ी मूर्तिपर वि० सं० १९८२ है। जैनाचार्य रत्नकीर्ति हैं। ग्वालेश्वर मंदिरमें एक दि० जैन मूर्ति १२॥ फुट ऊंची है। कुछ मूर्तियोंपर सं० १२६३ है।

(४) विजवार या विजावड–पर्गना कटाफोर जिला नीमाड। इंदौरसे पूर्व ४९ मील व नीमावरसे पश्चिम ३३ मील। यहां कई जैन मंदिरोंके खण्डहर हैं। बंदेर पेखान नामकी पहाड़ीपर बहुतसी जैन मूर्तियां स्थापित हैं। इन मंदिरोंके सुन्दर खुदाईके पाषाणोंको महादेवके मंदिरके बनानेमें काममें लाया जारहा है। ग्रामके उत्तर १०वीं या ११वीं शताब्दीके बहुत बड़े जैन मंदिरके शेष हैं। इन ध्वंशोंमें तीन बड़ी दिगम्बर जैन मूर्तियां हैं (१) ९ फुट ३ इंच ऊँची (२) ६ फुट ३ इंच ऊंची, नासिका और भुजा नहीं है (३) ८ फुट ३ इंच ऊंची २ फुट १० इंच आसनपर चौड़ी, हाथ नहीं हैं। यह शांतिनाथजीकी मूर्ति है। आसनके लेखमें

सं० १२३४ फागुन वदी ६ है। एक त्रिकोण पाषाण पड़ा है जो ४ फुट ३॥ इंच लम्बा २ फुट ४ इंच ऊंचा है। ऊपर १ मूर्ति हैं। ऊपर छत्र दूंदुभीवाजे व गंधर्वदेव हैं। यहां दतोनी नामकी धारा है जिसके घाट और सीढ़ियोंपर जैन मंदिरके पाषाण लगे हैं। जो पहाड़के नीचे बीजेश्वर महादेवका मंदिर है उसकी भीतोंमें पद्मासन और खड्गासन जैन मूर्तियां लगी हैं तथा जैन मंदिरके शिखरको तोड़कर इस मंदिरका शिखर बनाया गया है।

(५) चोली–पर्गना महेश्वर जि० नीमाड़–महेश्वरसे उत्तर पूर्व ८ मील–यहां कुछ प्राचीन जैन मंदिरोंके ध्वंश हैं।

(६) देहरी–पर्गं० चिकल्दा जि० नीमाड़–चिकल्दासे उत्तर १४ मील। यहां श्री पार्श्वनाथका एक जैन मंदिर है।

(७) देपालपुर–इन्दौरसे उत्तर पश्चिम ३० मील। इस नगरको धार वंशके देवपाल परमार (सन् १२१८–१२३०) ने बसाया था। कई जैन मंदिर हैं जिनमेंसे दोमें वि० सं० १५४८ और १६२९ है।

देपाल और बनदियाके मध्यमें एक कई मीलका बड़ा सरोवर है। इसको राजा देवपालने बनवाया था जिसके तटपर एक प्राचीन बड़ा जैन मंदिर है जो बनदिया ग्राममें है। जिसमें लेख है कि श्री आदिनाथकी मूर्ति वैसाख सुदी ३ मंगलवार सं० १५४८ को स्थापित की गई थी।

(८) ग्वालनघाट–जि० नीमाड़, मंदवा किलासे १० मील। यहां आधमील जाकर बीजासन देवीका मंदिर है। चैतमें मेला भरता है।

ब्राह्मणोंमें द्वेष था। एक जैन मंदिरको अब रामका मंदिर ब्राह्मणोंने मान लिया है और रामको "जैन भंजन जवरेश्वर राम" कहते हैं। यह स्थानीय कहावत है कि १४वीं शताब्दीमें कोथड़ीमें बहुत जैनलोग रहते थे उनके बनाए हुए मंदिर थे। जैनियोंमें और सर्कारी अफसरोंमें कुछ गैर समझ होगई तब उन्होंने नगरको छोड़ दिया और थोड़ी दूर जाकर बसगए, उसको भी कठोदिया नाम दिया। हिन्दुओंने जैन मूर्तियें मंदिरसे हटा दीं और उनके स्थानपर राम लक्ष्मण सीताकी मूर्तियें रख दीं।

अभी भी जैन लोग कोठड़ीमें पूजाके लिये आते हैं, परन्तु जबतक कोठड़ी परगनेमें रहते हैं वे कुछ खाते पीते नहीं हैं, पूजाके पीछे वे पिरावा ग्राममें जाकर भोजन करते हैं।

(१३) माचलपुर—पर्गना जीरापुर जि० रामपुर—भानपुरा काली संघसे पूर्व ६ मील। सरोवरपर दो जैन मंदिर हैं जिनमें अच्छी कारीगरी है।

(१४) मोरी—पर्ग० भानपुर जिला रा० भा०। यहां कई बहुत सुन्दर जैन मंदिरोंके अवशेष हैं। एकमें लेख १२ वीं शताब्दीका है। इन मंदिरोंको मांडूके घोरी बादशाहोंने नष्ट किया था।

(१५) नीमावर—पर्ग० नीमावर—नर्मदा नदीपर, अलेबरूनीने ११ वीं शताब्दीमें इसका नाम लिया है। यहां परमारोंके समयका लाल पाषाणका एक सुन्दर जैन मंदिर है।

(१६) रायपुर—पर्ग० सुनेल जि० रा० भा०—झालरापाटनसे दक्षिण १२ मील। यहां ग्राममें प्राचीन जैन मंदिर हैं।

(१७) संदलपुर–डि० नीमावर–यहांसे उत्तर १९ मील। ग्राममें मंदिर मूलमें जैनका था उसको हिन्दुओंने सन् १८४१ में महादेवका मंदिर वनां लिया।

(१८) सुन्दरसी–जि० महीदपुर–यहां कई प्राचीन जैन मंदिर हैं।

(१९) पुरा गिलन–वलियासे कोठड़ी जाते हुए सड़कपर एक ग्राम। यहां १ सरोवरपर ११ वीं या १२ वीं शताब्दीका एक प्राचीन जैन मंदिर है। द्वारके ऊपर तथा मंदिरकी वांई ओर कुछ जैन मूर्तियें हैं। पहली मूर्तिमें श्री महावीर स्वामीके माता पिता हैं जो वृक्षके नीचे वेंठे हैं उनके हरएक दासी हैं। आसनपर घुड़सवारोंकी पंक्ति है। वृक्षके ऊपर तीन जैन मूर्तियें हैं। दूसरी मूर्ति खड़े आसन श्री पार्श्वनाथजीकी है। दो मूर्तियें शासनदेवीकी हैं जिनमें लेख है। उसमें महन्तारिकादेवी लिखा है। प्रतिष्ठाकारिका रूपिणी दोनोंमें मस्तक नहीं है। देवी सिंहासनपर वेठी है, एक पग फैला हुआ है। चार हाथ हैं, दाहने हाथमें वच्चा है। नीचे सिंह हैं। सरोवरके पास वहुत जैन मूर्तियें हैं।

(२०) चैनपुर–भानपुराका चंद्रावत किला जो एक वड़े टीलेके नीचे है। ग्रामसे दूर व भानपुरसे नवली जाते हुए गाड़ीके मार्गके पास एक वड़ी दि० जैन मूर्ति भूमिपर विराजित है। यह १३ फुट ३ इंच ऊँची व ३ फुट ८ इंच चौड़ी है।

(२१) संधारा–नीमचसे झालरापाटन जाते हुए पुरानी फौजी सड़कसे ३ मील। यहां वहुत प्राचीनता है। यहां दो जैन मंदिर

हैं उनको तम्बोलीके मंदिर कहते हैं। खुदे हुए खम्भे हैं। वड़ा मँडप है। वेदीघरका पाषाण द्वार स्वच्छ है। वेदीमें एक पद्मासन जैन मूर्ति है। वेदीकी कोठरीकी छतमें तीन छोटे खुदे हुए आले हैं, मध्यका सबसे वड़ा है वे आदिनाथजी भक्तिमें हैं। दोनों मंदिर दि० जैनोंके हैं। अब भी पूजा होती है, दोनोंमें वड़ा श्री आदिनाथका प्राचीन है। दूसरा भी आदिनाथका है। इसका जीर्णोद्धार हुआ है। अब मूर्तियें नवीन स्थापित हैं।

(२२) किथुली—जिस टीलेपर नवली और तक्षकेश्वर ग्राम हैं उसके नीचे एक प्राचीन जैन मंदिर है। इस मंदिरका मण्डप जैन चित्रकारीका दर्शनग्रह है। मंडपमें जिनकी मूर्तियें धातुकी व सफेद, काले व पीले पाषाणकी हैं। गर्भ गृहमें वड़ा कमरा है जिसमें तीन आले हैं, मध्यमें पद्मासन श्रीमहावीरस्वामी हैं व अगल बगल खड़गासन दि० जैन मूर्तियें हैं। वेदीमें बहुतसी दि० जैन मूर्तियें हैं। मूलनायक एक वड़ी मूर्ति श्री पार्श्वनाथ भगवानकी है।

(२३) कुकदेश्वर—रामपुरासे पश्चिम १० मील। नीमचसे झालरापाटन जाते हुए सड़कपर। ग्रामके मध्यमें एक जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथजीका है कृष्ण पाषाणकी मूर्ति है और भी नवीन जैन मूर्तियें हैं।

(२४) राजोर—नर्मदा नदीपर—नीमावरसे ९ मील। यहां पुरातत्वके स्मारक हैं। एक प्राचीन जैन मंदिर है, एक खण्डित जैन मूर्ति अवशेष है।

(३) भोपाल एजन्सी–भोपाल राज्य।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है–दक्षिण पूर्व मध्य प्रांत, उत्तरमें राजपूताना और ग्वालियर, पश्चिममें कालीसिंध। यहां ११६५३ वर्ग मील स्थान है।

भोपाल राज्य–में ६९०२ वर्ग मील है।

पुरातत्व–यहां सांचीमें स्तूप सुन्दर है। यहां भोजपुरमें एक सुन्दर जैन मंदिर है। एक बड़ी मूर्ति महिलपुरमें है, चारों तरफ मंदिर है। इसमें खुदाई सुन्दर है। समसगढ़में–जो भोपालसे १० मील है–खंडित मंदिर हैं वहां तीन बड़ी मूर्तियें अभी भी खड़ी हुई हैं। नरवर ग्राम सांचरके मंदिरोंके मसालेसे बना है। जामगढ़में एक १२वीं शताब्दीका मंदिर है। यहांके मुख्यस्थान नीचे प्रकार हैं–

मुख्य स्थान।

(१) भोजपुर–तहसील ताल–यहां एक बड़ा शिव मंदिर है उसमें ४० फुट ऊंचे चार खंभे हैं। इसके पास एक जैन मंदिर १४ से ११ फुट है जिसमें तीन जैन तीर्थंकरकी मूर्तियां हैं उनमेंसे एक बहुत बड़ी मूर्ति श्री महावीरस्वामीकी २० फुट ऊंची है दूसरी दो श्री पार्श्वनाथजीकी हैं। यह मंदिर १२वीं या १३वीं शताब्दीका होगा। भोजपुरके पश्चिम एक बड़ी झील है जिसको धारके राजा भोजने (१०१०–५३) शायद बनवाया है।

(R. A. S. Vol. VIII. P. 80 and Indian antiquary Vol. XVIII P. 348).

होता था। ऐसी तनजेबको व्यापारी लोग बाहर नहीं भेज सक्के थे किंतु सब तनजेब बादशाह मुगल और उनके दरबारियोंके वास्ते भेजी जाती थी। अब यह सब शिल्प नष्ट होगया है।

(६) देवास राज्य (मालवा एजन्सी)

मालवा एजन्सीमें ८८२८ वर्गमील स्थान है। हद्द है—उत्तर और पश्चिम राजपूताना, दक्षिणमें भोपावर और इंदौर, पूर्वमें भोपाल।

इसमें ४४ राज्य शामिल हैं। देवासका वर्णन यह है—

पुरातत्त्व—सारंगपुरमें है व देवाससे दक्षिण ३ मील नागदा ग्राममें है।यह पहले राज्यधानी रहा है। यहां बहुतसे जैन मूर्तियोंके और हिंदू मंदिरोंके अवशेष हैं।

(१) **सारंगपुर**—कालीसिंध नदीके पूर्वीय तटपर मकसी ष्टेशनसे ३० मील व इन्दौरसे ७४ मील। यह बहुत प्राचीन स्थान है। यहां उज्जैनके घोड़ा चिन्हके पुराने सिक्के सन् ई० से १००० से ९०० वर्ष पूर्वके पानीमें बहते हुए मिले हैं। बहुतसे जैन और हिन्दू मंदिरोंके खण्ड भीतोंमें लगे हैं। यह सुन्दर तनजेबोंके लिये प्रसिद्ध था। यहां पहले एक किला हिन्दू और जैन खण्डहरोंसे बनाया गया था। ये खँडहर इन्दौरके सुन्दर्सी पर्गनेके तुङ्गजपुरसे लाए गए थे। अब दीवाल व द्वार शेष है उसपर एक लेख जीर्णोद्धारका सन् १९७८ का है।

बहुतसे जैन प्राचीन स्मारक हैं जिनमें एक तीर्थंकरकी मूर्तिपर सं० ११७८ है। एक जैन मंदिरके भीतर संवत १३१९ की मूर्ति है।

सुजातखांका पुत्र वाज वहादुर सन् १५६२के करीव स्वतंत्र होगया। इसकी रूपवान स्त्री रूपमती मालवामें अपनी गानविद्या व कविताके लिये प्रसिद्ध होगेई है। वहुतसे उसके बनाए गीत अव भी गाए जाते हैं। वाज़ भी गान विद्यामें चतुर था।

(२) मनासा–पर्गना वगौड़–तोमरगढ़के नीचे वसा है।

(३) नागदा–प० देवास–यहांसे ३ मील। यहां पुराने कोट व पुराने मंदिरोंके शेष हैं। पालनगरमें वहुतसी जैन मूर्तियें देखी जाती हैं। यह पहले वहुत प्रसिद्ध स्थान था।

(७) सीतामउ राज्य।

यह इंदौरसे १३२ मील है। मन्दसोरसे इसका सम्वन्ध है। यहां तींतरोदमें–जो सीतामऊसे ६ मील पूर्व है–एक श्री आदिनाथजीका श्वे० जैन मंदिर है।

[८] पिरावा ष्टेट (टोंक सम्वन्धी)।

उत्तर पश्चिममें इन्दौर, दक्षिणपूर्व ग्वालियर है। यहां सन् १९९१में १९ सैंकड़ा जैनी थे। नगरके मंदिरोंमें जो शिलालेख हैं उनसे प्रगट है कि यह पिरावानगर ११वीं शताब्दीसे प्रसिद्ध है।

(९) नरसिंहगढ़ ष्टेट।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें राजगढ़, इन्दौर; दक्षिणमें ग्वालियर, भोपाल; पूर्वमें भोपाल; पश्चिममें ग्वालियर और देवास। यहां ७४१ वर्गमील स्थान है।

(१) विहार—प्राचीन नाम भद्रावती—पर्ग० नरसिंहगढ़-यहांसे दक्षिण ७ मील।

यह जैनधर्मका एक समय मुख्य केन्द्र था। वर्तमान ग्रामके ऊपर जो पहाड़ी है उसपर बहुतसे जैन स्मारक मिलते हैं, उनहींमें एक विशाल जैन मूर्ति है जो गुफाके पाषाणमें कटी हुई है। यह ८॥ फुट ऊँची है, मस्तक नहीं रहा है। आसनपर वृषभका चिन्ह है इससे यह श्री आदिनाथजीकी है। पर्वतपर गुफाके पास एक शतखम्भा महल है यह १९ खन ऊँचा है। इसको संवत १३०४में करणसेनने बनवाया था।

(४) छपेरा—प० छपेरा—नरसिंह०से पश्चिम ४६ मील। यहां श्री पार्श्वनाथजीका जैन मंदिर है जिसमें चार मूर्तियें हैं। उनमेंसे तीनमें संवत १९४८ व एकमें संवत १७९७ है।

(३) पाचोर—प० पाचोर। नरसिंह०से पश्चिम २४ मील आगरा बम्बई सड़कपर। इसका प्राचीन नाम पारानगर है। यह बहुत प्राचीन जगह है, क्योंकि जब यहां खुदाई की जाती है तब खंडित जैन मूर्तियोंके शेष मिलते हैं।

---

(१०) जावरा राज्य।

यहां मन्दसोरसे थारोद जाते हुए नाईखेड़ा ग्राम है, इसमें एक मध्यकालीन श्री पार्श्वनाथजीका जैन मंदिर है। इसमें १२ स्तम्भ हैं। मध्यमें पद्मासन जैन मूर्ति है। लेख १२वीं शताब्दीका है। द्वारपर श्रीमाल जातिके शामदेव वणिकका नाम है।

(११) राजगढ राज्य ।

विहार ग्रामसे ३ मील कोटरा ग्राम है जहां एक गुफामें मस्तक रहित जैन मूर्ति है ।

---

(१२) सैलाना राज्य ।

सैलाना—नामली ष्टेशन (राजपूताना मालवा रे०) से १० मील उत्तर है । नगरमें ३ जैन मंदिर हैं ।

---

(१३) भोपावर एजन्सी—धार राज्य ।

भोपावर एजन्सीमें ७६८४ वर्ग मील स्थान है । चौहद्दी है—उत्तरमें रतलाम, इन्दौर; दक्षिणमें खानदेश; पूर्वमें नीमाड़, भूपाल; पश्चिममें रेवाकांटा । यहां २६ राज्य शामिल है ।

धार राज्य—यहां ७७९ वर्ग मील स्थान है । यह परमारोंकी प्रसिद्ध राज्यधानी है । परमारोंने यहां नौमीसे तेरहवीं शताब्दी तक राज्य किया था ।

(१) धारानगर—यह प्राचीन नगर है । पहले राज्यधानी उज्जैन थी । पांचवे राजा वैरीसिंह द्वि०ने नौमी शताब्दीके अंतमें धारमें राज्यधानी स्थापित की । महाराज मुंज वाक्पतिके राज्य (९७४–९९९) में सिंधुराजके राज्य (९९९–१०१०) में और राजा भोजके राज्य (१०१०–१०९३) में धार विद्याका केन्द्र था । ये राजा स्वयं साहित्य व काव्यके रचनेवाले थे और साहित्यके

महान रक्षक थे। धारपर सन् १०२०में अनहिलवाड़ाके चालुक्य राजा जयसिंहने तथा सोमेश्वर चालुक्य राजाने १०४०में चढ़ाई की तव राजा भोजको भागना पड़ा।

धारमें वहुतसे प्रसिद्ध मकान हैं। सन् १४०५में जैन मंदिरोंको तोड़कर दिलावरखांने लाट मसजिद बनवाई और उसका नाम लाट इस लिये रक्खा कि एक लोहेका खम्भा या लाट अभी तक वाहर पड़ा हुआ है। यह ४३ फुट ऊंचा था पर अव इसके टुकड़े हो गए हैं। इसकी ठीक उत्पत्तिका पता नहीं है, परन्तु यह ख्याल किया जाता है कि यह अर्जुनवर्मन परमार (सन् १२१०-१८) के समयमें शायद किसी युद्धकी विजयकी स्मृतिमें वना होगा।

यहीं अलाउद्दीनके समयमें (१२९६-१३१६) मुसल्मान साधु निजामुद्दीन औलिया हो गया है। राजा भोजका एक विद्यालय था उसको भी १४ वीं या १५ वीं शताव्दीमें और हिन्दुओंके ध्वंश मकानोंको लेकर मसजिद बना लिया गया है। वहुतसे पाषाण उसमें ऐसे लगे हैं जिनमें संस्कृत व्याकरणके सूत्र लिखे हैं। यह मसजिद पुराने मंदिरोंके स्थानपर है। यहीं एक मंदिर सरस्वतीका था। जिसको धारानगरीका भूषण माना गया था। दो स्तंभोंपर एक सर्पवन्धमें संस्कृत काव्य लिखा है—

(A S. R. 1902-3, A. S. R. W. I. 1904-6 B. R. A. S. Vol. XXI P. 339. 54).

नव सहशांक चरित्र पद्मगुप्त कविने रचा है उसमें भोजके पिता सिंधुराजका जीवनचरित्र है, उसमें धारका वर्णन एक श्लोकमें अच्छा दिया है।

(३) कडोड–पर्ग० धार–यहांसे १४ मील उत्तर पश्चिम जैन मंदिर हैं।

(४) सादलपुर–पर्ग० धार–यहांसे १२ मील प्राचीन जैन मंदिर हैं।

(५) तारापुर–पर्ग धरमपुर–यहां ग्राममें एक जैन मंदिर है जिसको किसी गोपालने सन् १४७४में वनवाया था।

---

[१४] बडवानी राज्य।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें धार, उत्तर पश्चिममें अलीराजपुर, पूर्वमें इन्दौर, दक्षिण पश्चिम खानदेश। यहां ११७८ वर्ग मील स्थान है। यहां सेसोदिया राजाओंका राज्य है जिनका सम्बन्ध उदयपुरके राणाओंसे है।

वडवानी नगर–स्टेशन मऊ छावनीसे ८० मील। नगरसे पांच मील वावनगजा पहाड़ी है। यह जैनियोंका बहुत प्रसिद्ध तीर्थ है। पर्वतकी चोटी पर एक छोटा मंदिर पुराने मंदिरोंके खंडोंसे वनाया गया है। और भी मंदिर हैं। श्री ऋषभदेवकी मूर्ति पहाड़पर कोरी हुई है इसको बावनगजा कहते हैं, यह ८४ फुट ऊंची है। पर्वत पर नीचे और भी मंदिर है। पौष सुदी पूर्णिमाको मेला भरता है। वहुत दि० जैन यात्री आते हैं। यह पर्वत २१११ फुट ऊंचा है। वड़वानीका प्राचीन नाम सिद्धनगर है। यहां एक पुराना मंदिर है जो सिद्धनाथका मंदिर प्रसिद्ध है। यह मूलमें जैन था। अब महादेव पधरा दिये गये हैं।

यह वडवानी तीर्थ दिगम्बर जैनियोंका पूज्यनीय तीर्थ है। उनके शास्त्रोंमें यह प्रमाण है कि रावणके भाई कुंभकरण और रावणके पुत्र इन्द्रजीतने यहां मुक्ति पाई। इनके चरणचिह्न पर्वतकी चोटीके मंदिरमें अंकित हैं।

प्रमाण—

वडवाणी वरणयरे दक्खिण भायम्मि चूलगिरि सिहरे।
इन्दजीद कुम्भयणो णिव्वाण गया णमो तेसिं॥ १२॥
(प्राकृत निर्वाणकांड)

भाषा—

वडवाणी वडनयर सुचंग, दक्षिण दिश गिरिचूल उत्तंग।
इन्द्रजीत अरु कुम्भजुकर्ण, ते वन्दौं भवसायर तर्ण॥१३॥
(भाषा निर्वाण कांड)

पश्चिम विभागकी रिपोर्ट सन् १९१६ में बावनगजाजीकी मूर्तिके सम्बन्धमें इंजीनियर मि० पेजने लिखा है कि बावनगजाकी मूर्ति कहीं कहीं खण्ड होगई है इसलिये इसकी रक्षार्थ यह उचित है कि जो भाग मूर्तिके ठीक हैं उनपर नीचे लिखा मसाला लगा देना चाहिये जिससे पाषाण बना रहे—" Szerebuey's fluid stone preservative " जहां २ मध्यमें खण्ड होकर चट्टान निकल आई है वहां Portland Cement चारकोलके साथ लगाना चाहिये। जिस तरह होसके मूर्तिकी रक्षा करनी चाहिये क्योंकि यह मूर्ति वहुत प्राचीन है।

[१५] झाबुआ राज्य।

थॉंरी—झाबुआसे १६ मील। यहां ग्राममें एक जैन मंदिर है।

[१३] ओरछाराज्य [बुंदेलखंडएजंसी]

बुन्देलखंड एजंसीमें ९८५२ वर्ग मील स्थान है। इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें जालान, हमीरपुर, बांदा; दक्षिणमें सागर, दमोह; पूर्वमें बघेलखंड; पश्चिममें झांसी, ग्वालियर। इसमें २८ राज्य हैं, सन् १९०१में यहां जैनी १२२०७ थे।

ओरछाराज्य—इसमें २०८९ वर्गमील स्थान है। उत्तर पश्चिममें झांसी है, पूर्वमें चरखरी है, दक्षिणमें सागर, बीजावर और पन्ना है।

बनारसके गोहवारोंकी संतान बुन्देला राजपूत हैं। पहला बुन्देला राजा सोहलपाल हुआ जो १३वीं शताब्दीमें था। यह अर्जुनपालका पुत्र था। सन् १२६९से १५०१तक आठ राजाओंने राज्य किया। १५०१में राजा रुद्रप्रताप हुए। १५३१में उसके पुत्र भारतीचंद हुए। फिर इसका भाई मधुकरशाह हुआ, इसका पुत्र रामशाह था (१५९२–१६०४) इसीके भाई बीरसिंहदेवने ग्वालियरमें अनत्रीके पास अबुलफजलको मारडाला था (आईने अकबरी) और १६०५ से १६२७ तक राज्य किया था। यह बहुत ही प्रसिद्ध था। फिर झुझारसिंहने फिर उसके पुत्र पहाड़सिंहने १६४१से १६५३ तक, फिर सुजानसिंहने (१६५३–७२) फिर इन्द्रमणिने (१६७२–५) फिर जसवंतसिंहने (१६७५–८४) फिर भागवतसिंहने (१६८४–८९) फिर उद्योतसिंहने (१६८९–१७३५) फिर पृथ्वीसिंहने (१७३५–५२) फिर सावंतसिंहने (१७५२–६५) इसकी उपाधि महेन्द्र थी फिर हातीसिंहने

(१७६९–६८) फिर मानसिंहने (१७६८–७९) फिर भारतीचंदने (१७७९–७६) फिर विक्रमजीतने (१७७६–१८१७) फिर धरमपालने (१८१७–३४) फिर तेजसिंहने (१८३४–४१) फिर सुजानसिंहने (१८४१–१८५४) फिर हमीरसिंहने (१८५४–१८७४) पीछे उसके भाई प्रतापसिंह राज्य कर रहे हैं। सन् १९०१में यहां जैनी ९८८४ थे।

(१) ओरछानगर–झांसीके पास–वीरसिंहदेवका बड़ा मकान व किला है, तथा जहांगीर महाल है। बहुतसे मंदिर फैले पड़े हैं जिनमें सबसे बढ़िया चतुर्भुज मंदिर है।

(२) अहार ता० बलदेवगढ़–यह किसी समय जैनियोंका प्रसिद्ध स्थान था। बहुतसी खंडित जैन मूर्तियें इसके चारों तरफ छितरी हुई हैं।

(३) जटारिया–ता० जटालिया–वर्तमानमें जो यहां जैन मंदिर है उसमें बहुतसी मूर्तियें १२ वीं शताब्दीकी है। ये सब दिगम्बर जैन हैं। उनमें मुख्य श्री आदिनाथ, पारशनाथ, शांतिनाथ, चन्द्रप्रभु भगवानकी हैं।

(४) पपौनी–ता० टीकमगढ़–यहांसे उत्तरपुर्व ८ मील। इसका प्राचीन नाम पम्पापुर है यह प्राचीन स्थान है। जैनी तीर्थ मानते हैं। बहुतसे मंदिर हैं।

---

(१७) दतिः

इसकी चौहद्दी, है–उत्तरमें ग्वालियर, जालान; दक्षिणमें ग्वालियर झांसी; पूर्वमें संथार, झांसी, पश्चिममें ग्वालियर।

सरोवरोंके शेषांश हैं। यह कहावत है कि इसको परमालदेव या परमार्दीदेव चंदेल राजा (११६५–१२०३) के मंत्री वच्छराजने वसाया था। यहां भितारिया ताल प्रसिद्ध है। सन् १३७६ का शिलालेख मिला है जिसमें नगरको वच्छुम लिखा है। (२) नाचना यह गंजसे २ मील। प्राचीन नाम कुथारा है। यह १३वीं शताब्दीमें सोहालपालके राज्यमें प्रसिद्ध था। यहां गुप्त समयके दो ध्वंश पुराने हिन्दू मंदिर हैं।

(१) अजयगढ—नगर व गढ़—जिस पर्वतपर यह किला है उसको केदार पर्वत कहते हैं। यह १७४४ फुट ऊँचा है। शिलालेखमें नाम जयपुर दुर्ग है। यह किला नौमी शताब्दीके अनुमान वना था। वहुतसे प्राचीन जैन मंदिरोंकी सुन्दर शिल्प कारीगरी मुसल्मानोंके वनाए मकानोंकी भीतोंपर दिखलाई पड़ती है। पर्वतपर वहुतसे सरोवर हैं। तीन जैन मंदिरोंके ध्वंश अभी तक खड़े हैं। इनकी रचना १२ वीं शताब्दीकीसी है और खजराहाके मंदिरोंसे मिलते जुलते हैं। पाषाणोंपर वहुत वढ़िया खुदाई है। ये मंदिर किसी समय वहुत ही सुन्दर होंगे। अनगिनती खँडित मूर्तियें, खम्भे, आसन पड़े हुए हैं। यहांके मकानोंमें सन् ११४१ से १३१५ तकके चंदेल राजाओंके कई लेख मिले हैं।

(Cunnimgham A. S. R Vol. VII P. 46 and XXI P. 46).

(२०) छत्तरपुर राज्य।

इसकी चौहद्दी यह है—उत्तरमें हमीरपुर। पूर्वमें केननदी, पन्नाव; पश्चिममें वीजावर और चखारी। दक्षिणमें विजावर और पन्ना व दमोह। इसमें ११९८ वर्गमील स्थान है। इसको १८वीं शता-

ब्दीके पिछले भागमें कुंवर सोनशाह पोंवार या पमारने वसाया था।

यहां बहुत प्रसिद्ध पुरातत्त्वके स्मारक खजराहामें व राजगढ़के पास केननदीके पश्चिम मनियागढ़में हैं। राजगढ़ पुराना किला है इसको अठकोट कहते हैं। जंगलमें वहुतसे ध्वंश स्थान हैं।

(१) खजराहा—छत्रपुरके पास। यह मंदिरोंके लिये प्रसिद्ध है। शिलालेखोंमें इसका प्राचीन नाम खर्ज्जूरवाहक है। चांद भाटने इसे खजूरपुर या खज्जिनपुर कहा है। नगरके द्वारपर दो सुवर्ण रंगके खजूरके वृक्ष हैं। प्राचीन कालमें यह बहुत प्रसिद्ध जगह थी। यह जिझोती राज्यकी राज्यधानी थी जिसको अव बुन्देल-खण्ड कहते हैं। हुईनसांग चीन यात्रीने भी इसका वर्णन किया है। यहांके मंदिर सन् ९५० से १०५० तकके हैं। यहांके लेख बहुत उपयोगी हैं। इन मंदिरोंके तीन भाग हैं—(१) पश्चिमीय—यहां शिव और विष्णुके मंदिर हैं। (२) उत्तरीय—एक बड़ा और कुछ छोटे मंदिर हैं। सब विष्णुके हैं व कई खंड या ढेर हैं। (३) दक्षिण पूर्वीय भाग विलकुल जैन मन्दिरोंसे पूर्ण है। इनमें चौसठ योगिनी घनटाईका मंदिर सबसे पुराना है। इसमें वड़े सुन्दर खम्भे हैं। इसके शेषांश छठी या ७ वीं शताब्दीके हैं जो ग्यारसपुरके मंदिरोंके समान हैं। एक चंदेललेख सन् ९५४ का है।

(Cunnimgham Vol. II P. 412 & Vol. VII P. 5, Vol. X P. 16, Vol. XX P. 55 and Epigraphica Indica Vol. I P. 121.)

कनिंघम जिल्द दोमें है कि यह खजराहा महोवासे दक्षिण ३४ मील है। घंटाई जैन मंदिर नं० ২१ में बहुतसी खंडित जैन मूर्तियें हैं। एकपर लेख है संवत ११४२ श्री आदिनाथ, प्रतिष्ठाकारक श्रेष्ठी वीवनशाह भार्या सेठानी पद्मावती। नं० २२

का जैन मंदिर प्राचीन छोटा श्री पार्श्वनाथजीका है। तीन लाइन मूर्तियोंकी हैं। ऊपर १ मूर्ति पद्मासन है। नीचे दो लाइनमें खड़े आसन मूर्तियें हैं। नं० २३–२४ श्री आदिनाथ और पार्श्वनाथजीके क्रमसे हैं। मंदिर नं० २५ सबसे बड़ा व सबसे सुन्दर है यह ६० फुटसे ३० फुट है। एक जैन साहूकारने इसका जीर्णोद्धार कराया था। मध्यवेदीके कमरेके द्वारपर नग्न पद्मासन जैन मूर्ति है। इसके बगलमें दो नग्न खड़े आसन हैं। द्वारके बांई तरफ ११ लाइनका लेख है जिसमें है कि धंग राजाके राज्यमें संवत् १०११ या सन् ९५४ में भव्यपाहिलने जिननाथके इस मंदिरको एक बाग दान किया। इस खजराहाका वर्णन संयुक्त प्रांतके प्राचीन जैन स्मारक पृष्ठ ४१ से ४३ तकमें दिया है। घंटाईके मंदिरमें श्री शांतिनाथकी मूर्ति १४ फुट ऊंची है। इसपर "सं० १०८५ श्रीमान् आचार्य पुत्र श्री ठाकुर श्री देवधरसुत सुतश्री, शिविश्री, चंद्रेयदेवाः श्रीशांतिनाथस्य प्रतिमा कारितेति" है। नकल एक लेखकी—

खजराहाका लेख।

(Ep. Indica Vol. I Ins. No. III of a Jain Temple on left door Jumb of temple of Jain Nath at खजराहा of 1011 Samvat.)

(१)–ओं ॥ संवत १०११ समये ॥ निजकुलधवलोयं (२) दिव्यमूर्ति स्वशील, शमदमगुणयुक्त सर्व्व–(३) सत्त्वानुकंपी। स्वजनजनित तोषो धांगराजेन (४) मान्य, प्रणमति जिननाथो यं भव्य पाहिल (५) नामा ॥ १ ॥ पाहिलवाटिका १ चंद्रवाटिका २, (६) लघुचंद्रवाटिका ३, शंकरवाटिका ४, पंचाई (७) तलवाटिका ५, आम्रवाटिका ६, धंगवाड़ी, (८) पाहिलवंशे तु क्षये क्षीणे अपरवंशो

यः कोपि (९) तिष्ठति तस्य दासस्य दासोऽयं मम दतिस्तु पाल (१०) येत् ॥ महाराज गुरु श्रीवासवचंद्रः वैशाख (११) सुदी ७ सोम दिने ॥

उल्था।

संवत १०११ में—पवित्रकुली सुंदरमूर्ति, शील, शम, दम युक्त, दयावान, स्वजन परिजनका उपकारी, भव्य पाहिल जो धांगराजासे मान्य है सो श्री जिननाथको नमस्कार करता है। मैंने पाहिलबाग, चंद्रबाग, लघुचंद्रबाग, शंकरबाग, पंचाइलबाग, आमबाग तथा धांगवाडी दान की है, पाहिलवंशके नाश होनेपर जो कोई वंश रहे उसके दासोंका मैं दास हूं सो मेरे इस दानकी रक्षा करे। महाराज गुरु श्री वासवचंद्रके समयमें वैशाख सुदी ७ सोमवार।

लेख नं० ८ (ए० ई० पृष्ठ १५३)

एक जैन मूर्तिपर—"ओं संवत १२१५ माघ सुदी ५ श्रीमन् मदनवर्म्मदेव प्रवर्द्धमान विजयराज्ये गृहपतिवंशे श्रेष्ठिदेदू तत्पुत्र पाहिल्लः पाहिल्लांगरुह साधुसाल्हे तेनेयं प्रतिमा कारितेति। तत्पुत्राः महागण, महीचंद्र, सिरिचंद्र, जिनचंद्र, उदयचंद्र प्रभृति। संभवनाथं *प्रणमति नित्यं मंगलं महाश्रीः रूपकार रामदेवः।"*

उल्था।

भावार्थ—मदनवर्मदेवके राज्यमें संवत १२१५ में गृहपति कुलधारी देदू उसके पुत्र पाहिल, पाहिलके पुत्र साल्हेने प्रतिमा कराई उसके पुत्र महागण आदि नमस्कार करते हैं।

नोट—गृहपतिकुल शायद परिवार वंश हो।

(२) छत्रपुर नगर—बांदासे ६४मील। यहां बुंदेदलाल और अमरसिंह चौधरीके बनाए जैन मन्दिर हैं।

ख्याल किया जाता है कि प्राचीन कौसाम्बी नगरका यही स्थान है। यहां एक सुन्दर किला है जिसको रेहुत कहते हैं। इसको करणदेव चेदी (१०४०–७०) ने बनवाया था। इसका २॥ मीलका घेरा है। भीतें ११ फुट मोटी हैं व मूलमें २० फुट ऊंचीं थीं। इसके चारों तरफ खाई थी जो ५० फुट चौड़ी व ५ फुट गहरी थी। यहां मंदिर अधिकतर ब्राह्मणोंके हैं, यद्यपि कुछ दिगम्बर जैन मूर्तियां चंद्रेहीके पास मिलती हैं। सोननदीके पूर्व एक बड़ा स्थान है व सुन्दर मंदिर हैं। मोरापर तीन समुदाय गुफाओंके हैं जिनको दुरादन, छेवर व रावण कहते हैं। ये चौथीसे नौमी शताब्दीकी हैं। कुछोंमें मूर्तियें हैं।

यहांके मुख्य स्थानोंका वर्णन—

(१) अमरकंटक—सहडोलसे २९ मील एक ग्राम। यह मैकाल पहाड़ीका (जो ३००० फुट ऊँची है) पूर्वीय कोना है। यहांसे नर्वदानदी निकली है ऐसा प्रसिद्ध है। यहां कपिलधाराका जलपतन है। पांडव भीमके चरणचिह्न हैं। यहां खजराहाके समान बहुत ही बढ़िया मंदिर हैं जिनको करणदेव चेदी (१०४०–७०) ने बनवाया था। १४ दूसरे मंदिर हैं।

(Cunn: A. S. R. Vol. VII. P. 22).

(२) बांधोगढ़—कटनीके पास तालुका रामनगर—यहां पुराना किला है। यह प्राचीन ऐतिहासिक जगह है। जिस पहाड़ी पर यह किला है वह २६६४ फुट ऊंची है। उसीमें बमनिया पहाड़ी शामिल है। १३ वीं शताब्दीमें करणदेव कलचूरी राजकुमारीके साथ बघेलाको मिला (Cunni. Vol. VII P. 22)

(३) सुहागपुर—सहडोलसे २ मील एक ग्राम। यहां एक बड़ा महल है जो पुरानी इमारतोंसे बना है। बहुतसे खम्भे मंदिरोंसे लिये गए हैं। उनमें बहुतसे जैन मुर्ति व पाषाणोंके स्मारक हैं। यह प्राचीन जैनियोंका स्थान था। बहुतसी जैन तीर्थंकरोंकी मूर्तियां चारों तरफ दिखलाई देती हैं। इस ग्रामसे दक्षिण पुर्व १ मील पुरानी वस्तीके खंडहर हैं।

यह विलासपुरके पास घाटीके कौनेमें है। चेदी राजाओंके बिल्हारीके शिलालेखमें इसका नाम सौभाग्यपुर है। स्थानीय ठाकुरके घरमें बहुतसे प्राचीन पाषाण हैं उनमें नीचे प्रकार भी पाषाण हैं।

(१) जैन देवी सिंहासनपर बैठी, भुजाओंमें एक जैन बालक है, एक आम्रवृक्षके नीचे बैठी है। वृक्षके ऊपर एक पद्मासन जैन मूर्ति है। उसके ऊपर सिंहासन पर दूसरी पद्मासन जैन मूर्ति है इसके हरतरफ बगलमें एक खड़े आसन जिन हैं व खड़े इन्द्र हैं। (२) एक बैठे आसन शासनदेवी है जिसकी १२ भुजाएं हैं। ऊपर पद्मासन मूर्ति श्री पार्श्वनाथकी है। (३) एक सुन्दर मूर्ति ऋषभदेवकी है। बैलका चिह्न है।

(४) रीवांनगर—गुर्गीमसौन नामके पुराने नगरसे एक बहुत सुन्दर खुदाईका द्वार यहां लाया गया है। यह नगर यहांसे पूर्व १२ मील है।

(५) अल्हाघाट—ता० हूजूर—यह प्रसिद्ध स्थान है। इसमें नरसिंहदेव कलचूरी राजाका लेख वि० सं० १२१६ का है।

(६) भूमकहर—ता० रघुराजपुर—सतनासे उत्तर पश्चिम ७ मील। यहां एक पुराना किला है जिसको बघेलोंने बनवाया था।

अब ध्वंश है। पानीके झरनेके पास बहुतसे जैन तीर्थङ्करोंकी मूर्तियोंसे अंकित पाषाण हैं। इनको लोग पांच पांडव कहते हैं।

(७) गूर्गीमसौन–ता० हुजूर (गढ़) रीवांसे १२ मील। यहां कुछ दि० जैन मूर्तियां चारों ओर मिलती हैं। प्राचीन कौसाम्बीका स्थान है (ऊपर देखो)

(८) मुकुन्दपुर–ता० हुजूर–रीवांसे दक्षिण १० मील पुराने किलेके ध्वंश हैं। खजराहाके समान यहां बहुतसी जैन मूर्तियां चारों तरफ मिलती हैं।

(९) मार या मूरी–ता० बरडी। यहां ४ थी से नौमी शताब्दीकी कुछ गुफाएं हैं।

(१०) पाली–ता० सुहागपुर–हिन्दुओंके मंदिरोंमें प्राचीन जैन मूर्तियोंके बहुतसे स्मारक देखे जाते हैं।

(११) पियावान–ता० रघुराजनगर–सेमरियासे ७ मील। यहां दाहालुके कलचूरी राजा गांगेयदेवका लेख चेदी सं० ७८९ या सन् १०३८ का मिलता है।

---

(२३) नागोद राज्य या उंछहरा राज्य।

यह राज्य सतनासे पूर्व है। यहां ९०१ वर्गमील स्थान है। यहां परिहार राजपूतोंके वंशज राज्य करते हैं। सन् १३४४में यहां राजा धारासिंह थे व सन् १४७८में यहां राजा भोज थे। यहां प्राचीन स्मारक बहुत हैं परन्तु उनकी अभीतक खोज नहीं की गई है। यहांपर होकर मालवा और दक्षिण भारतसे कौसाम्बी और श्रावस्तीको मार्ग गया था। भरहुतके पास एक सुन्दर बौद्ध स्तूप पहले मौजूद था

जिसके अंश कलकत्ता म्यूजियममें गए हैं। यहां सांची स्तूपके समान था। इसके एकद्वारपर सन् ई०से पहली या दूसरी शताब्दी पहलेका लेख संग वंशका था। दूसरे मुख्य स्थान लालपहाड़ पर हैं जो इस स्तूपके पास एक पहाड़ी है। यहां बड़ी गुफा है व सन् ११५८ का कलचूरी वंशका शिला लेख है। संकरगढ़ और खोली पर भी कई उपयोगी लेख सन् ४७५ से ५५४ तकके पाए गए हैं। भूमारा, मझगावां, करीतलाई व पटैनी देवी पर भी स्मारक हैं। पटैनीदेवी पर चौथी या पांचमी शताब्दीका गुप्त वंशीय समयका एक छोटा सुरक्षित मंदिर है इसमें १०वीं या ११ वीं शताब्दीके कुछ जैन स्मारक हैं। (देखो वर्णन जिला जबलपुर)

पश्चिम भाग अर्कीलाजिकल सरवे रिपोर्ट सन् १९२०में विशेष कथन यह है कि पटैनीदेवीके मंदिरके ऊपर तीन आले हैं। हरएकमें जैन मूर्तियां हैं। भीतर मंदिरमें देवीकी मूर्ति और पीछे पाषाणमें १२ वीं शताब्दीकी जैन मूर्तियां अंकित हैं। मुख्य मूर्तिके हर तरफ नौ हैं। पहली लाइनमें मध्यमें श्री नेमिनाथ हैं। इसके हरतरफ २ खड़े आसन जिन हैं अन्तमें एक जिन बैठे हुए आलेमें हैं। वाऐंसे दाहनेको जो लाइन है उसमें ये नाम देवियोंके हैं (१) बहुरूपिणी (२) चामुंड (३) सरस्वती (४) पद्मावती (५) विजया (६) अपराजिता (७) महामनुसी (८) अनंतमती (९) गांधारी (१०) मानुसी (११) ज्वालामालिनी (१२) मानुसी (१३) वज्र-संकला (१४) भानुजा (१५) जया (१६) अनन्तमती (१७) वैरोता (१८) गौरी (१९) महाकाली (२०) काली (२१) बुध-दाधी (२२) प्रजापति (२३) वाहिनी।

(२४) जसो या जस्सो राज्य।

यह नागोदके पास है। यहां ७२९ वर्णनीय स्थान है। यह जसेश्वरी नगरका अपभ्रंश है। यहांके महलको महेन्द्रनगर कहते हैं। यहां अष्टपुरी और हर्दीनगरमें बहुतसे जैन और हिन्दुओंके स्मारक फैले पड़े हैं। (C. A. S Vol. XXI P. 99) इस महलके पुराने द्वारपर बहुतसी जैन मूर्तियां लगी हैं।

तीसरा भाग।

प्राचीन जैन स्मारक-राजपूताना-

राजपूतानाकी चौहद्दी इस प्रकार है:—

पश्चिममें सिंध। उत्तर पश्चिममें पंजाब, वहावलपुर। उत्तर और उत्तर पूर्वमें पंजाव। पूर्वमें संयुक्त प्रदेश, ग्वालियर। दक्षिणमें मध्य भारत और बम्बई।

इसमें १३०४६२ वर्गमील स्थान हैं इसीमें अजमेर, मड़वाड़ा भी शामिल हैं जो २७११ वर्गमील है।

इसकी व्यवस्था यह है कि:-राज्य जैसलमेर, जोधपुर और बीकानेर पश्चिम और उत्तरमें हैं। शेखावाटी (जैपुरका भाग) और अलवर उत्तर पूर्वमें हैं। जैपुर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, बूंदी, कोटा, झालावाड़ पूर्व और दक्षिण पूर्वमें हैं। परतापगढ़, वांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर दक्षिणमें और सिरोही दक्षिण पूर्वमें हैं। मध्यमें अजमेर, मडवाड़ा प्रांत, किशनगढ़, शाहपुर, लावा और टोंकका एक भाग है।

यहां आबू पहाड़ ५६५० फुट ऊंचा है।

इतिहास—यहां भी बौद्धोंका राज्य था। महाराज अशोकके शिलालेखके दो पाषण वैराटमें हैं जो राज्य. जैपुरमें है। सन् ई० से दूसरी शताब्दी पहले वैकटीरियाके ग्रीक या यूनान लोग उत्तर और उत्तर पश्चिमसे आए। उनके विजय प्राप्त देशोंमें यहां प्राचीन शहर नगरी (इनको माध्यमिक भी कहा है) था जो

चित्तौड़के निकट है तथा कालीसंध नदीके चारों ओरका देश है। ग्रीक बादशाहोंमेंसे अपोलोदस और मिनैन्दर इन दोके सिके उदयपुर राज्यमें पाए गए हैं। दूसरीसे चौथी शताब्दी तक सीदिया या शक लोग दक्षिण और दक्षिण पश्चिममें बलवान रहे। गिरनार पर्वतके पास जो १५० सन् ई० का शिला लेख है उसमें वर्णित है कि रुद्रदमन मारु (माड़वाड़) और साबरमती नदीके चहुंओर देशका शासक था। मगधके गुप्त वंशने चौथीसे छठीं शताब्दी तक राज्य किया जिसको राजा तोरमानके आधिपत्त्यमें श्वेत हूनोंने नष्ट किया। सातवीं शताब्दीके प्रथम अर्द्धमें थानेश्वरके राजपूत हर्षवर्द्धन और कन्नौनके वैश्य हर्षवर्द्धनने देशमें शासन किया और नर्बदा तक विजय प्राप्त की, उसमें राजपूताना भी शामिल था। हुइनसांग चीन यात्री (६२९–४५) के समयमें राजपूतानाके चार विभाग थे।

(१) गुर्जर–जिसमें बीकानेर, पश्चिम राज्य और शेखावाटीका भाग शामिल था। (२) वैराट–जिसमें जैपुर, अलवर और टोंकका भाग था। (३) मथुरा–जिसमें तीन पूर्वीय राज्य भरतपुर, धौलपुर और करौली थे। (४) बदरी–जिसमें दक्षिण और कुछ मध्यभारतके राज्य शामिल थे।

सातवीं और ग्यारहवीं शताब्दीके प्रारम्भके मध्यमें राजपूतानामें बहुतसे वंश उठ खड़े हुए। गहलोट या सेशाद्री वंशज गुजरातसे आए और मेवाड़के दक्षिण पश्चिम भागको ले लिया। उनका सबसे प्राचीन लेख ता० ६४६ का राजपूतानामें मिला है। पीछे [illegible] राज्य किया जिन्होंने अपना शासन जोधपुरके मांडोरमें

प्रारम्भ किया। फिर आठवीं शताव्दीमें चौहान और भाटियोंने राज्य किया जो क्रमसे सांभर और जैसलमेरमें बसे। दशवीं शताव्दीमें परमार और सोलंकी दक्षिण पश्चिममें वलवान हुए। अब राजपूतानामें तीन वंश प्रसिद्ध हैं—सेसोदिया, भाटिया और चौहान। इनमेंसे पहले दो तो अपने मूलस्थानोंमें जमे रहे जब कि चौहान सिरोही बूंदी, कोटामें फैल गए। जादोवंशजोंने ११वीं शताव्दीमें करोलीमें स्थान जमाया। कछवाहा वंशज ग्वालियरसे जैपुरमें सन् ११२८ में आए। राठौर वंशज कन्नौजसे माड़वाड़में १३ वीं शताव्दीमें आए।

पुरातत्व—जैपुरके वैराटमें दो अशोकके शिलालेख हैं तथा सन् ई० से तीसरी शताब्दी पहलेका लेख चित्तौड़के पास नगरी स्थानपर है। झालावाड़में खोलवीपर पहाड़में कटे मंदिर तथा गुफाएं सन् ७००से ९०० तककी हैं। ये बौद्धोंका पुरातत्व है। जैनियोंके बहुत प्रसिद्ध कारीगरीके मंदिर ११ वीं व १३ वीं शताव्दीके आवू पहाड़में दिलवाड़ेपर हैं तथा इसी कालके अनुमानका एक जैन कीर्तिस्तम्भ चित्तौड़ामें है, तौभी सबसे पुराने जैन मंदिर परतापगढ़में सुहागपुराके पास हैं। बांसवाडामें कालिंजरामें हैं तथा जैसलमेर और सिरोहीके कई स्थानोंपर हैं, और पुराने जैन स्मारकोंके शेष भाग उदयपुरके पास अहारमें तथा राजगढ़में और अलवर राज्यके पारनगरमें हैं।

हिन्दुओंका पुरातत्त्व वयाना (भरतपुर) में एक पाषाणका स्तंभ सन् ३७२ का है। मुकुन्दद्वारामें पांचवी शताव्दीका ध्वंश स्थान है। ११ वीं शताव्दीके ध्वंश मंदिर झालरापाटनके पास

चन्द्रावतीमें हैं खुदे हुए मंदिर उदयपुरमें वरोली पर व नागदा पर क्रमसे नौमी और ग्याहरवीं शताब्दीके हैं तथा चितौड़में एक जय-स्तम्भ १५ वीं शताब्दीका है।

जैनियोंकी संख्या—सन् १९०१ में ३॥ फीसदी थी अर्थात् कुल जैनी ३४२५९९ थे जिनमें ३२ सैकड़ा दिगम्बरी, ४९ सैकड़ा श्वेताम्बरी मूर्तिपूजक तथा शेष स्थानकवासी थे।

[१] उदयपुरराज्य (उदयपुर रेजिडेन्सी)

उदयपुर रेजिडेंसी या मेवाड़में ४ राज्य हैं। उदयपुर, बांसवाडा, डूंगरपुर और परतापगढ़।

इसकी चौहद्दी—उत्तरमें अजमेर, मरवाडा और शाहपुर, उत्तर पूर्वमें जैपुर और बुंदी। पूर्वमें कोटा, और टोंक; दक्षिणमें मध्यभारत पश्चिममें अरावली पहाड़।

सन् १९०१ में यहां जैनी ६ फी सदी थे।

उदयपुर राज्य—इसकी चौहद्दी—उत्तरमें अजमेर मड-वाडा और शाहपुर, पश्चिममें जोधपुर और सिरोही। दक्षिण-पश्चिममें ईडर राज्य; दक्षिणमें डुंगरपुर, बांसवाडा, परतापगढ़। पूर्वमें नीमच। उत्तरपूर्वमें जैपुर। यहां १२६९१ वर्गमील स्थान है।

इतिहास—मेवाडके महाराणा अपने वंशमें बहुत ऊंचे हैं। इनकी उत्पत्ति श्रीरामचन्द्रके पुत्र कुशसे है। इस वंशने अपनी कन्या किसी मुसल्मानको नहीं विवाही, किन्तु उनसे भी सम्बन्ध बन्द किया जिन्होंने कन्या मुसल्मानोंको दी थी। कुशके वंशजोंका अंतिम राजा अवधमें सुमित्र हुआ है। इसकी

कुछ पीढ़ी पीछे कनकसेनसे काठियावाड़में वल्लभीका राज्य स्थापित किया गया। वर्वर आक्रमणकारोंके सामने वल्लभीके राजाओंका पतन हुआ उनका मुखिया शिलादित्य मारा गया। उसकी गर्भवती रानीसे उत्पन्न गुहादित्यने ईडर और मेवाड़में राज्य किया। इससे गोहलट वंश उत्पन्न हुआ। गुहादित्यके पीछे छठा राजा महेन्द्र द्वि० था जिसका नाम वापा प्रसिद्ध था। इसकी राज्यधानी उदयपुरके उत्तर नागदापर थी। इस वापाने चित्तौड़पर चढ़ाई की जहां मोरी जातिके मानसिंह तव राज्य कर रहे थे। वापाने इसको हटा दिया और वहां सन् ७३४ में अपना राज्य स्थापित किया तथा रावलकी उपाधि धारण की।

इनका समाचार १४वीं शताब्दीके प्रारम्भ तक विदित नहीं हुआ। इस १४वीं शताब्दीके प्रारम्भमें रतनसिंह प्रथम महाराणा था तब बादशाह अलाउद्दीनने सन् १३०३में चढ़ाई की। रतनसिंह युद्धमें मारा गया और चित्तौड़का किला ले लिया गया। पीछे राणा हमीरसिंहने चित्तौड़को फिर हस्तगत किया। यह सन् १३६४ में मरा। राणा लक्षसिंह या लाखा (१३८२–९७) के समयमें जावरमें चांदीकी खानें मिलीं। पीछे प्रसिद्ध राणा कुंभ (१४३१–६८) हुआ जिसने गुजरातके मुहम्मद खिलजी कुतुबुद्दीनको हरा दिया और चित्तौड़में अपनी विजयकी स्मृतिमें जयस्तम्भ स्थापित किया। इसने बहुतसे किले बनवाए जिनमें मुख्य कुंभलगढ़ है। राणा रायमलने १४७३ से १५०८ तक राज्य किया फिर राजा संग्रामसिंह या राना सांगा हुए। इनके समयमें मेवाड़ बहुत ऐश्वर्य्ययुक्त था। राणा सांगाने बाबर बादशाहसे सन् १५२७में

गया। ध्वंश स्थानोंको धूलकोट कहते हैं। यहां १०वीं शताब्दीके चार लेख तथा सिक्के मिले हैं। कुछ पुराने जैन मंदिर अभी भी मिलते हैं। पुराने हिन्दू मंदिरोंके अवशेप भी मिलते हैं जिनमें वढ़िया खुदाई है।

(See I. Todd antiquities to Rajputana Vol. II 1832. Fergusson architecture 1848).

(२) विजोलिया—यह बूंदीके कोनेपर है। उदयपुर शहरसे ११२ मील उत्तर पूर्व है व कोटासें पश्चिम ३२ मील है। इसका प्राचीन नाम विन्ध्यावली है। यहां श्री पार्श्वनाथ भगवानके पांच जैन मंदिर हैं, एक मध्यमें व चार चार तरफ हैं। १२ वीं शताब्दीके एक महलके अवशेष हैं। १२ वीं शताब्दीके दो पाषाण लेख भी हैं। एकमें अजमेरके चौहानोंकी वंशावली चाहूमानसे सोमेश्वर तक दी है। श्री पार्श्वनाथ मंदिरके सरोवरके उत्तरओर भीतके पास महुवा वृक्षके नीचे पाषाण पर यह लेख है। इसमें यह लेख है कि पृथ्वीराजके पिता सोमेश्वरदेवने एक ग्राम खेना भेट किया। लेख लिखाया महाजनने संवत १२२६ या सन् ११६९में (I. A. S. Sengul Vol. LV P. I P. 40). तथा दूसरेमें एक जैन काव्य है जिसका नाम उन्नतशिपरपुराण है, यह अभी प्रगट नहीं है।

(Tod. Raj. Vol. II Cunningham A. S. of N. India Vol. VI P. 234-52).

यहां जो जैन मंदिर हैं उनको अजमेरके चौहान राजा सामेश्वरके समयमें सन् ११७० में एक महाजन लोलाने बनवाए थे। इनमेंसे एकके भीतर एक छोटा मंदिर और है। पाषाणलेखका सन् भी ११७० है।

Archeolgy progress report of W. India 1905 में विशेष वर्णन यह है कि मध्य मंदिरके सामने दो चौकोर स्तम्भ हैं जिनमें जैनाचार्योंके नाम हैं। तथा खास मंदिरके सामने एक खंभेवाला कमरा है जिसको नौचौकी कहते हैं। इसीके उत्तर चट्टानोंमें ऊपर कहे दो लेख हैं। पहला लेख ११ फुट छ इंच व ३ फुट ६ इंच है। दूसरा १९ फुट और ९ फुट है। लोला महाजनने या तो पार्श्वनाथका मंदिर वनवाया हो या जीर्णोद्धार किया हो। इसने सात छोटे मंदिर और वनवाए थे। ये मंदिर इनसे भिन्न होंगे। मध्य मंदिरमें एक लेख किसी यात्रीका है जो वि. सं. १२२६ चाहपान राज्यका है। A. P. R. W. India 1906 में यहांके लेखोंकी नकल दी है। नं. २१३७–३८ में जैन दि० आचार्योंके नाम इस तरह हैं– मूलसंघ सरस्वती गच्छ वलात्कारगण कुंदकुंदान्वयी वसंतकीर्तिदेव विशालकीर्तिदेव, दमनकीर्तिदेव, धर्मचंद्रदेव, रत्नकीर्तिदेव, प्रभाचंद्रदेव, पद्मनंदि, शुभचंद्रदेव। इनमेंसे पहले लेख पर सं० १४८३ फागुण सुदी ३ गुरौ निपेधिका जैन आर्य्या वाई आगमश्री।

(सं. नोट–यह आर्यिका आगमश्रीकी स्मृतिमें है।) दूसरेपर फागुण सुदी २ बुधौ सं. १४६९ निपेधिका शुभचन्द्र शिष्य हेमकीर्तिकी। जिनपर ये दो लेख हैं उसी खंभेपर किसी साधुके चरणचिन्ह हैं व एक तरफ भट्टारक पद्मनंदिदेव तथा दूसरी तरफ भट्टारक शुभचन्द्रदेव अंकित है। इस लेखका नं. २१३९ है। नं. २१४१ पार्श्वनाथ मंदिरके द्वारपर लेख है–महीधरका पुत्र मनोरथका नमस्कार हो सं० १२२६ वैसाख वदी ११।

(३) चित्तौड़–यह प्रसिद्ध किला है, एक तंगपहाड़ी पर है

जो ५०० फुट ऊंची है तथा ३। मील लम्बी व आध मील चौड़ी है। चित्तौड़का प्राचीन नाम चित्रकूट है, जो मोरी राजपूतोंके सर्दार चित्रंगके नामसे प्रसिद्ध है। इन मोरी राजपूतोंने सातवीं शताब्दीके अनुमान यहां राज्य किया था जिनका ध्वंश महल अव भी दक्षिण भागमें है। वापा रावलने सन् ७३४में इसे मोरियोंसे लेलिया। यह मेवाड़की राज्यधानी सन् १५६७ तक रहा फिर राज्यधानी उदयपुर नगरमें वदली गई। जर्नलने एसिया सोसायटी बंगाल नं० ५५ पृष्ठ १८में है कि चित्तोरगढ़के महलकी भीतरी सहनमें एक लेख नं० ५ है जो कहता है कि वैशाखसुदी ५ गुरुवार सं० १३३५को रावल तेजसिंहकी धर्मपत्नी जैतल्लदेवीने श्यामपार्श्वनाथजीका मंदिर वनवाया, इसके लिये उसके पुत्र रावल कुमारसिंहने भूमि प्रदान की। कनिंघम रिपोर्ट नं० २३में सफा १०८में है कि गणेशपोलपर एक खंभेके ऊपर एक लेख सं० १५३८का है जिसमें जैन यात्रियोंका लेख है। प्रसिद्ध जैनकीर्तिस्तंभके विषयमें लिखा है कि यह ७५॥। फुट ऊंचा है, ३२ फुटका व्यास नीचे व १५ फुट ऊपर है। यह वहुत प्राचीन है। इसके नीचे एक पाषाणखंड मिला था जिसमें लेख था—श्री आदिनाथ व २४ जिनेश्वर, पुंडरीक, गणेश, सूर्य और नवग्रह तुम्हारी रक्षा करें सं० ९५२ वैसाख सुदी ३० गुरुवार ॥

यहां सवसे प्राचीन मकान जैन कीर्तिस्तम्भ है जो ८० फुट ऊंचा है जिसको वघेरवाल महाजन जीजाने १२वीं या १३वीं शताब्दीमें जैनियोंके प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथकी प्रतिष्ठामें वनवाया। यहां प्रसिद्ध जयस्तम्भ भी है जो १२० फुट ऊंचा है

इसको राणा कुंभने सन् १४४२ और १४४९के मध्यमें अपनी मालवा और गुजरातकी विजयकी स्मृतिमें बनवाया।

रामपाल द्वारके सामने एक जैन मठ है जिसको अब पहरेवालोंका कमरा Guard Room कर लिया गया है। इसमें एक लेख सन् १४८१ का है जो कहता है कि कुछ जैन प्रतिष्ठित पुरुषोंने यहां दर्शन किये थे।

दक्षिणकी तरफ नौलखा भंडार और बड़े२ स्तम्भोंका कमरा है जिसको नौ कोठा कहते हैं। इन इमारतोंके बीचमें बड़े सुन्दर खुदे हुए छोटे जैन मंदिर हैं जिनको सिंगारचौरी कहते हैं। इनमें कई शिलालेख हैं। एक लेख कहता है कि इसको राणा कुंभके खजांचीके पुत्र भंडारी वेलाने श्री शांतिनाथजीकी प्रतिष्ठामें बनवाया था। दरबारके महलके पास एक पुराना जैन मंदिर है जिसको सतबीस देवरी कहते हैं। इसके आंगनमें बहुतसी कोठरियां हैं। Archealogical ourvey of India for 1905-6 में पृष्ठ ४३—४४ पर जो वर्णन दिया है वह यह है कि जैन कीर्तिस्तम्भ बहुत पुरानी इमारत है जो शायद सन् ११०० के करीब बनी थी। यह स्तंभ दिगम्बर जैनियोंका है। बहुतसे दिगंबर जैनी राजा कुमारपालके समयमें (१२वीं शताब्दीका मध्य) पहाड़ीपर रहते होंगे ऐसा मालूम होता है। इंग्रेजी शब्द हैं—

It belongs to the Digambar Jains, many of whan seem to have been upon the hill in Kumarpal's time.

राजा कुम्भके जयस्तम्भके नीचे जो पुराना मंदिर है उसके लेखसे प्रगट है कि गुजरातके सोलंकी राजा कुमारपालने इस पर्वतके दर्शन किये थे। राजा कुंभके राज्यके समयमें यद्यपि श्वेताम्बर जैन

थोड़े होंगे तौभी उस समयके बने जैन मंदिर श्वेताम्बरों द्वारा बनाए गए थे।

कीर्तिस्तम्भ चौमुख मूर्तिको धारताहुआ एक महत्वशाली स्तम्भ है। जो पुराने खुदे हुए पाषाणोंका ढेर इस स्तम्भके नीचे है उसमें ऐसी चौमुख मूर्तिका भाग है कि जो इस स्तम्भके शिखर पर अच्छी तरह विराजित होगी (देखो चित्र १ चौमुख मूर्ति पृष्ठ ४४) इसको समवशरणके ऊपरी भागसे मुकाबला किया गया है। (देखो चित्र १८ B)—ऐसे स्तम्भ जिनको कीर्तिस्तम्भ कहते हैं व जो जैन मंदिरके सामने स्थापित किए जाते हैं उनमें चौमुख मूर्तिके ऊपर १ छतरी होती है। यदि इस कीर्तिस्तम्भका सम्बन्ध मूलमें किसी मंदिरसे होगा तो यह मंदिर शायद उस स्थानपर होगा जहां वर्तमानमें पूर्व ओर अब पाषणका ढेर है।

जो श्वेताम्बर जैन मंदिर अब इस स्तम्भके पास दक्षिण पूर्वमें है उसका सम्बन्ध इस स्तंभसे नहीं है, क्योंकि वह २५० वर्ष पीछे बना था। इस मंदिरके शिखरके भीतर देखनेसे मालूम होता है कि इस शिखरके भीतरी भागमें जो खुदे हुए पाषाण हैं वे प्रगट करते हैं कि यहां पासमें पहले कोई दूसरा मंदिर होगा। इस कीर्तिस्तम्भकी मरम्मत सर्कारने सन् १९०६ में की थी जिसके लिये महाराणा उदयपुरने २२०००) खर्च किया। जीर्णोद्धारके पहले ऊपर तोरण न थे सो फिरसे बनादिये गए हैं। पृष्ठ ४९ पर है कि डा० जी० आर० भंडारकरके कथनानुसार दक्षिण कालेज लाइब्रेरीमें एक प्रशस्ति है जिसको "श्री चित्रकूट दुर्ग महावीरप्रसाद प्रशस्ति" कहते हैं जिसको चारित्रगणिने वि०

सं० १४९९में संकलन किया व जिसकी नकल वि० सं० १५०८ में की गई। यह प्रशस्ति कहती है कि यह कीर्तिस्तम्भ मूलमें सन् ११०० के अनुमान रचा गया था, किन्तु राणा कुंभके समयमें सन् १४५०के अनुमान इसका जीर्णोद्धार हुआ। इस लेखमें किसी शिलालेखकी नकल है जो श्री महावीरस्वामीजीके जैन मंदिरमें मौजूद था तथा कीर्तिस्तम्भ उसके सामने खड़ा था। यह लेख कहता है कि इस मंदिरको उकेशा जातिके नेजाके पुत्र चाचाने वनवाया था। यह लेख यह भी कहता है कि गणराज साधुके पुत्रोंने इस मंदिरका जीर्णोद्धार किया और नवीन प्रतिमाएं स्थापित कीं। इस कामको उनके पिताने वि०सं० १४८९ (सन् १४२८)में मोकलजी राणाकी आज्ञासे शुरु किया था। यह लेख यह भी कहता है कि धर्मात्मा कुमारपालने यह ऊंची इमारत कीर्तिस्तम्भ नामकी वनवाई। मंदिरकी दक्षिण ओर यह कैलाशकी शोभाको छिपाता है।

स० नोट—जो मूर्तियां इस कीर्तिस्तम्भपर बनी हैं वे सव दि० जैन हैं। यदि कुमारपालने वनाया हो तो यह मानना पड़ेगा कि कुमारपाल या तो दिगम्बर जैन होगा या दि० जैन धर्मका प्रेमी होगा।

पृष्ट ४४ में १७ नं.के चित्रमें इस स्तम्भका फोटो है। यह फोटो २ वालिस्तका है। नीचेसे आधवालिस्त जाकर खड़े आसन दि० जैन मूर्ति है दोनों तरफ दो इन्द्र हैं। इसके ऊपर ३ बैठे आसन मूर्ति हैं। उसके ऊपर एक मंदिरके मध्यमें तीन खडे आसन जैन मूर्तियें उनके ऊपर और वगलमें ७ लाइन पद्मासन मूर्तियोंकी हैं वे

सात लाइनकी मूर्तियें क्रमसे २४–२४-२१–१८–१२–१२–१२ हैं। ऊपर दो शिखर हैं। १॥ वालिस्त ऊपर शिखरकी ऊपरी भागके नीचे आठ बैठे आसन मूर्तियें हैं, ये सब मूर्तियें दि०जैन हैं।

हमने इस चित्तौड़गढ़की यात्रा ता० २९ अप्रैल १९२३को डाकटर पदमसिंह जैनीके साथ की थी उससे जो विशेष हाल विदित हुआ वह इस प्रकार है–

ऊपर जाकर सिंगारचवरीके वहां व आसपास जो जैन मंदिर हैं उनका हाल यह है:–१ जैन मंदिर जो पहले ही दिखता है इसके द्वारपर बीचमें पद्मासन पार्श्वनाथजीकी मूर्ति है व यक्षादि हैं, भीतर वेदीमें प्रतिमा नहीं है–शिखर पाषाणका बहुत सुन्दर है। इस मंदिरके स्तम्भमें यह लेख है–" सं० १५०५ वर्षे राणा श्री लाषा पुत्र राणा श्री मोकल नंदण राणा श्री कुंभकर्णकोष व्यापारिणा साहकोला पुत्ररत्न भंडारी श्री वेलाकेन भार्या वील्हण-देवि जयमान भार्या रातनादे पुत्र भं० मूंधण्ड भं० धनराज भं० कुरपालादि पुत्रयुतेन श्री अष्टापदाह्व श्री श्री श्री शांतिनायक मूलनायक प्रासादकारितं श्री जिनसागर सूरि प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे...रं राजंतु श्री जिनराजसूरि श्री जिनवर्द्धनसूरि श्री जिनचंद्र-सूरि श्री जिनसागरसूरि पट्टांभोजाकनंदात् श्री जिनसुंदरसूरि प्रसा-दतः शुभं भवतु। उदयशील गणिनं नमीति। यह लेख श्वेताम्बरी है। इसके थोड़ा पीछे जाकर एक जैन मंदिर है जो पुराना है व पड़ा है तथा दिगम्बरी मालूम होता है। भीतर वेदीके कमरेके द्वार-पर पद्मासन मूर्ति पार्श्वनाथ व यक्षादि, भीतर प्रतिमा नहीं। शिषर बहुत सुन्दर है। इसकी फेरीमें पीछे तीन मूर्ति पद्मासन प्राति-

हार्य सहित अंकित हैं। इसकी एक बगलमें एक खड़गासन दि० जैन मूर्ति है, दूसरी बगलमें १ खडगासन १ हाथ ऊंची है। ऊपर पद्मासन हैं।

आगे जाकर सत्तवीसदेवरीके नामका बड़ा जैन मंदिर है, द्वार पर पद्मासन छोटी मूर्ति है, छतपर कमल आबूजीके मंदिरके अनुसार हैं। भीतर दूसरे द्वारपर पद्मासन मूर्ति फिर वेदीके द्वारपर पद्मासन वेदी खाली है। छतपर कमेल व देवी आदि हैं। यह तीन चौकेका मंदिर है। इसके १ बगलमें दूसरा जैन मंदिर है, द्वार पर पद्मासन भीतर द्वार पर पद्मासन पासमें खड़गासन मूर्ति है। दूसरी बगलमें जैन मंदिर द्वारपर पद्मासन। पीछे १ मंदिर शिखरमें खड़-गासन व पद्मासन व द्वारपर पद्मासन। यह मंदिर श्वेताम्बरी मालूम होता है। पासमें दूसरा श्वे० जैन मंदिर द्वारपर पद्मासन, वेदीके द्वारपर पद्मासन। आगे चलकर श्रीकृष्ण राधिकाका मीराबाईका मंदिर है, जैन मंदिरके पाषाण खंड लगे हैं उनमें पद्मासन जैन मूर्ति है।

आगे जाकर जो जयस्तम्भ राजा कुंभका है उसके भीतर ऊपर जानेको मार्ग है जिसमें ११३ सीढ़ी हैं भीतर सब तरफ अन्य देवोंकी मूर्तियां कोरी हुई हैं। ९ खन हैं, दो शिलालेख हैं। आगे जाकर जो प्रसिद्ध जैन कीर्तिस्तंभ या मानस्तंभ आता है यह सात खनका है, चारों तरफ खड़गासन और पद्मासन दि० जैन मूर्तियां अंकित हैं। भीतर चढ़नेको ६७ सीढ़ी हैं। ऊपर छत तोरण द्वार सहित है। हरएक तोरणमें पांच पांच खड़गासन दोनों तरफ ऐसे चार तरफ चार तोरण हैं। छतके कोनेमें चार मूर्ति हैं। इस मानस्तंभमें पाषाणकी कारीगरी देखने योग्य है। 'यह दि० जैनोंका मुख्य

स्मारक है। इसके नीचे एक तरफ जैन मंदिर है, द्वार व आलेंपर पद्मासन मूर्तियें हैं।

इस प्रसिद्ध कीर्तिस्तम्भमें Imperial Gazetteer of India (Rajputana) 1908 में तो यह लिखा है कि इसको एक वघेरवाल महाजन जीजाने वनवाया जव कि Archeological survey of India 1905-6 पृष्ठ ४९में चित्रकूट दुर्ग महावीरप्रसाद प्रशस्तिके आधारसे यह लिखा है कि राजा कुमारपालने इस कीर्तिस्तंभको वनवाया। दोनोंमें कौनसी वात ठीक है इसकी खोज लगानी चाहिये। परंतु A. P. R. of W. India 1906 में इस जैन कीर्तिस्तंभ सम्बन्धी पांच पाषाणोंके लेखका भाव दिया है नं० २२०९से २३०९ तकके कि इनमें जैन सिद्धांतोंकी प्रशंसा है व एक प्रगटपने कहता है, कि इस स्तम्भको वघेरवाल जातिके किसी जीजा या जीजकने वनवाया। हमारी रायमें यह बात ठीक माल्स होती है।

ऊपरके कथनानुसार श्री महावीर स्वामीके मंदिर पर लिखी हुई प्रशस्तिकी नकल संस्कृतमें पूना भंडारकर ओरियन्टल इंस्टिट्यूटमें देखनेको मिली नं० ११३२। १८९१-९५ है॥ इसमें १०२ श्लोक हैं। मंगलाचरण है-

जिनवदनसरोजे या विलासं विशुद्ध, द्वयनयमयपक्षाराजहंसीव धत्ते।
कुमतसुमतनीरक्षीरयोर्द्व्यक्तिकर्त्री, जनयतु जनतानां भारतीं भारती सा॥ १॥

अंतमें है "इति श्री चित्रकूटदुर्गमहावीरप्रासाद प्रशस्तिः चचारुचक्रचूड़ामणि महोपाध्याय श्री चारित्ररत्नगणिभिर्विरचिताः। संवत १५०८ प्रजापति संवत्सरे देवगिरौ महाराजधान्यां इदं प्रशस्ति

लेखि। यह प्रशस्ति मनोहर काव्योंमें है नकल छपने योग्य है। इसका भाव यह है कि राजा मोकल सुपुत्र कुम्भकरणके राज्यमें गुणराज सेठ थे उनके वड़ोंमें धनपाल सेठ थे जिन्होंने आशापल्लीमें मंदिर वनवाया था। गुणराजने सं० १४५७में संघ सहित यात्रा गिरनार व सेत्रुंजयकी की व १४६८में दुर्भिक्ष पड़ा था तव खूव दान किया। १४७०में सोपारक तीर्थकी यात्रा की। इसके ५ पुत्र थे उनमें तीसरा निलय था। इसको राजा मोकल वहुत मानता था। इसने इस चित्रकूट दुर्गपर जिन मंदिर वनवानेका प्रवन्ध किया। तव वहां चंद्रगुच्छीय देवेन्द्रसुरिके शिष्य सोमप्रभसूरि उनके सोमतिलक उनके देवसुन्दर गुरु उनके सोमसुंदर गुरु थे उनसे उपदेश पाकर गुणराजने मंदिर राजा मोकलकी आज्ञासे वनवाया। गुणराज केशवंश तिलक था। सोमसुंदरके शिष्य चारित्ररत्नगणिने इस प्रशस्तिको १४९५ संवतमें रचा। प्रतिमा स्थापनका श्लोक है "तत्र श्री जिनशासनोन्नतिकरैरत्युद भुतैरुत्सवैर्नद्यां श्रीवरसोमसुंदरगुरु प्रष्टैः प्रतिष्ठापितां। वर्षे श्रीगुणराजसाधुतनयाः पंचाष्ठरत्नप्रभो न्यास्यं तत्प्रतिमामिमामनुपमां श्रीवर्द्धमानप्रभोः ॥ ९० ॥

(४) नगरी—चित्तोड़से उत्तर करीव ७ मील वेराच नदीके दक्षिण तटपर। यहां वेदलाके रविका राज्य है, वहुत ही पुरानी जगह है। यह किसी समयमें वहुत प्रसिद्ध नगर था—प्राचीन नाम माध्यमिक है। यहां सन् ई०से पहलेके सिक्के व खंडित लेख मिले हैं। कुछ लेख विकटोरिया हॉल लाइव्रेरी उदयपुरमें हैं। यहां दो वौद्ध स्तूप हैं व एक पत्थरकी वौद्धोंकी इमारत है जिसको हाथीका पारा कहते हैं।

शताब्दीमें गुजरातसे लाई गई थी। भील लोग इसको कालाजी कहते हैं (Indian Intiquary Vol. I) यह मूर्ति खास दिगम्बरी है। आसपास और वेदियोंमें भी चारों ओर दि० जैन मूर्तियें हैं। जीर्णोद्धारके लेखोंमें भी दि० महाजनोंका वर्णन है।

(१०) उदयपुर शहर—यहां कुल ४९९७६ की वस्तीमें ४९२० जैनी हैं।

(११) नागदा—यहांसे उत्तर १४ मील एकलिंगजीके पास एक जैन मंदिर है जिसको अद्भुतजीका मंदिर कहते हैं। यह इसलिये प्रसिद्ध है कि यहां सबसे वड़ी श्री शांतिनाथजीकी मूर्ति ६॥ फुटसे ४ फुट है। सं० १४९४ है। इस ग्रामका प्राचीन नाम नागह्रिद है।

(H. Cousin A. S. of Western India 1905) में है कि इस शांतिनाथकी मूर्तिको राजा कुम्भकरणके राज्यमें सारंग महाजनने प्रतिष्ठा कराई थी। भीतके सहारे भूमिपर तीन वड़ी मूर्तियां श्री कुंथनाथ, अभिनन्दननाथ व अन्य १ हैं। इस मंदिरके पास दूसरा मंदिर श्री पार्श्वनाथ भगवानका है इसमें मूल मंदिर, गर्भमंडप, सभामंडप, फिर दूसरा वड़ा मंडप, सीढ़ियां व चौथा मंडप है। मंडपके पास कई छोटी मंदिरकी गुमटियां हैं जिनमें जो दाहनी तरफ हैं, उनको राणा मोकलके राज्यमें सं० १४८६में एक पोड़वाड़ महाजनने बनवाया था। इस पार्श्वनाथ मंदिरके उत्तरमें दूसरा एक प्राचीन ध्वंश मंदिर राजा कुमारपालके समयका है। एक लिंगकी पहाड़ीके नीचे एक मंदिर जैनियोंका पद्मावतीके नामसे है, भीतर तीन छोटे मंदिर हैं, दाहनी तरफ

चौमुखी मूर्ति है, शेप खाली हैं। लेख सं. १३९६ और १३९१ के हैं। यहां पार्श्वनाथकी मूर्ति होनी चाहिये। यह दिगम्बर जैनोंका है। मंडपमें एक मुर्ति श्वे० रक्खी है जो कहीं अन्यत्रसे लाई गई है। इसपर राजा कुंभकरण व खरतरगच्छका लेख है। एक वेदीपर एक पापाण है जिसके मध्यमें एक ध्यानाकार जिन मूर्ति है, ऊपर व अगलबगल शेप तीर्थंकरोंकी मूर्तियां हैं।

A. P. R. of W. India 1906 में यहांके कुछ लेखोंकी नकल दी है।

नं. २२४३में–३ लेख हैं (१) ओं संवत् १३९१ वर्पे चैत्र वदी ४ रवौ देवश्री पार्श्वनाथाय श्री मूलसंघ आचार्य शुभचंद्र चोद्यागान्वये गुणधरपुत्र कोल्हा केल्हा प्रभृति आलाकं जीर्णोद्धारकं कारायितम्।

(२) सं १३९६ वर्प आपाढ़ वदी १३ गोरईसा तेड़ालसुत संघपति वासदेवसंघरायेण नागद्हती श्रीपार्श्वनाथ।

(३) १–नागहरादपुरे राणाश्री कुंभकरण राज्ये।

२–आदिनाथ विम्बस्य परिकरः कारितः

३–प्रतिष्ठितः श्री खरतरगच्छेय श्रीमति वर्द्धनसूरि-

४–भिः उत्कीर्णवम् सूत्रधार धरणाकेण श्रीः

न. २२४२ में–सं. १४८६ वर्षे श्रावण सुदी ९ शनौ राणा श्री मोकलराज्ये श्री पार्श्वनाथ मंदिरमें पोड़वाड़ जैन वनियेने देवकुलिका वनवाई।

(११) पुर–उदयपुरसे उत्तर पूर्व ७२ मील, जिला भिङ-वाड़ा। भिलवाड़ा स्टेशनसे पश्चिम ७ मील। यह विक्रमादित्यसे

पहलेका वसा हुआ था। यह कहा जाता है कि पोरवाल महाजनोंका नाम इसी स्थानसे प्रसिद्ध हुआ है।

(१२) दिलवाड़ा—दिलवाड़ा स्टेटमें उदयपुर शहरसे उत्तर १४ मील। इस नगरको मेवाड़के प्राचीन राजाओंमेंसे एक भोगादित्यके पुत्र देवादित्यने वसाया था। यहां तीन जैन मंदिर १६ वीं शताब्दीके हैं जिनको "जैनकी वस्ती" कहते हैं। पहला मंदिर एक वहुत वढ़िया इमारत है यह श्री पार्श्वनाथजीका है। मध्यमें बड़ा मंडप है, एक एक मंडप हर दो तरफ है और एक वेदीका कमरा है जिसमें कुछ दूसरे पुराने मकानोंके पाषाण लगे हैं और कई वहुत प्राचीन मूर्तियें हैं। उसी हातेमें एक छोटा मंदिर है जिसमें १२६ मूर्तियां हैं जो कुछ वर्ष हुए निकटमें खुदाईसे मिली थीं। दूसरा मंदिर श्री ऋषभदेवजीका है जिसमें एक वड़ा मंडप है। इसमें प्राचीन भाग उत्तरमें वेदीका कमरा है जिसकी खुदाई वहुत सुन्दर है। तीसरा मंदिर भी श्री ऋषभदेवका छोटा है।

(१३) मांडलगढ़—जि० उदयपुर पहाड़ीपर एक मंदिर श्री ऋषभदेवजीका है। वालेश्वर मंदिरके द्वारपर व द्वारके पास दो खंभोंकी चौखटपर १० जिन मूर्ति बैठे आसन हैं। मंडपमें दक्षिण तरफ एक जैन मूर्ति चौखटपर खुदी है।

(१४) करेड़—उदयपुरसे पूर्व ४१ मील। यह उदयपुर लाइनमें फलेरा स्टेशन है। ग्रामके वाहर एक वड़ा संगमरमरका जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथ स्वामीका है इसके चारों तरफ वड़ी दीवाल है। मूर्ति श्री पार्श्व० का सं० १६५६ है, यहां सुदी पौषमें मेला होता है। [illegible] अक[illegible]ने इसी मंदिरके पास एक मसजिद बनवा दी है।

(१५) कैलवाडा—जि० कुम्भलगढ़। किलेके नीचे २ जैन मंदिर हैं, उनमें १ वड़ा है जिसमें २४ देहरी हैं जो कुम्भलगढके किलेके समयमें वनी हैं।

(१६) नादलाई—एक पहाड़ी किला जिसको जयकाल कहते हैं। इसको जैन लोग सेत्रुंजय पर्वतके समान पवित्र मानते हैं। यहां सोनिगरोंके पुराने किलेके शेपांश हैं, यहां १६ मंदिर हैं जिसमें वहुतसे जैनोंके हैं। किलेके भीतर एक श्री आदिनाथजीका जैन मंदिर है, इसमें लेख है—सं० १६८८ वैशाख सुदी ८ शनौ महाराज जगतसिंहराज्ये विजयसिंह सूरितपगच्छ—इसमें कथन है कि नदलाईके जैनोंने उस मंदिरका जीर्णोद्धार किया जिसको मूलमें अशोकके पोते राजा सम्प्रतिने वनवाया था। ग्रामके वाहर पर्वतके नीचे वहुतसे जैन मंदिर हैं जिनमें अंतिम मंदिर श्री सुपार्श्वनाथका है। इसके सभामंडपमें श्री मुनिसुव्रतकी मूर्ति है जिसमें लेख है कि नदुलाईके पोड़वाड़ नाथाकने वि० सं० १७२१में जेठ सुदी ३को अभयराजराज्ये विजयसूरि द्वारा प्रतिष्ठा कराई। ग्रामके दक्षिण पूर्व दूसरी पहाड़ी पर श्री नेमिनाथजीका जैन मंदिर है। स्तंभोंपर दो लेख हैं इसमें प्राचीन लेख सं० १२९५ का आसौज वदी १; उस समय नदुलदगिक (नदलई) में रायपालदेव राज्य करते थे तब गोहिलवंशीय उद्धारणके पुत्र राजदेवने जो रायपालदेवके आधीन था—उसकरका वीसवां भाग नदुलईके मंदिरकी पूजाके लिये दिया, जो उन लदे हुए वैलोंसे वसूल होता था जो नदलाई होकर जाते थे। दूसरा लेख सं० १४४३ कार्तिक

मंदनेश्वरका It showd temple is Jain मंदिर सन् १०८० में अपने पिताकी स्मृतिमें बनवाया विजयराज सन् ११०० में जीवित था ऐसा लेख कहता है।

(२) कालिंजर—वांसवाड़ासे दक्षिण पश्चिम १७ मील। यहां सुन्दर जैन मंदिरके ध्वंश हैं जिनमें वहुतसे शिपर हैं व कई कमरे हैं जिनमें जैन मूर्तियां हैं। इसमें खुदाई वढ़िया है। यहां तीन शिलालेख हैं जो पढ़े नहीं गए। यह जैन व्यापारियोंका मुख्य व्यापारका केन्द्र था। मराठा लुटेरोंने इसे नष्ट किया व व्यापारियोंको भगा दिया।

(See Heber Journey uppr provinces of India Vol. II 1828.)

---

(३) परतावगढ़ राज्य।

चौहद्दी—उत्तर पश्चिममें उदयपुर; पश्चिम, दक्षिण—वांसवाड़ा; दक्षिण रतलाम; पूर्व जावरा, मंदसोर, नीमच। यहां ८८६ वर्गमील स्थान है।

वीरपुर—सुहागपुरके पास। यहां एक जैन मंदिर है जो २००० वर्षका पुराना कहा जाता है।

प्राचीन मंदिर परतापगढ़से दक्षिण २ मील वीरडियापर तथा नीनारमें है। जांच नहीं हुई। परतावगढ़से ७॥ मील पश्चिम देवलिया या देवगढ़में २ जैन मंदिर हैं।

परतावगढ़ शहरमें ११ जैन मंदिर हैं व २७ सैकड़ा जैनी हैं। कुल राज्यमें ९ सैकड़ा जैनी हैं जिनमें ३६ सैकड़ा दिगम्बरी ३७ सैकड़ा श्वे० मंदिर मार्गी व ७ सैकड़ा ढूंढिया हैं।

(४) जोधपुर राज्य (पश्चिम राजपूताना राज्य रेजिडेन्सी।)

इस रेजिडेन्सीकी चौहद्दी–उत्तरमें बीकानेर, बहावलपुर पश्चिममें सिरोही। दक्षिणमें गुजरात। पूर्वमें मेवाड़, अजमेर, मरवाड़ा व जेपुर। यहां ७ शदी जेनी हैं। इसमें जोधपुर, जैसलमेर व सिरोही राज्य शामिल है जो पश्चिम व दक्षिण पश्चिममें है।

जोधपुर राज्य–यह राजपूतानामें सबसे बड़ा राज्य है। यहां ३४९६३ वर्गमील स्थान है। चौहद्दी–उत्तरमें बीकानेर, उत्तर पश्चिममें जैसलमेर, पश्चिममें सिंध, दक्षिणपश्चिम–कच्छकी खाड़ी, दक्षिणमें पालनपुर व सिरोही, दक्षिणपूर्वमें उदयपुर, उत्तरपूर्वमें जयपुर।

इतिहास–यहांके राजा राठौरवंशी हैं और अपनी उत्पत्ति श्री रामचंद्रजीसे बताते हैं। राठौर वंशका मूल नाम राष्ट्रकूटवंश है। इस वंशका नाम अशोकके लेखोंमें आया है कि ये लोग दक्षिणके शासक थे। उनका अतिप्रसिद्ध पहला राजा अभिमन्यु ५ वीं या छठी शताब्दीमें हुआ है। राष्ट्रकूट वंशका १९वां राजा जब दक्षिणमें राज्य करता था तब उसको चालुक्योंने भगा दिया। उसने कन्नौड़ामें शरण ली, जहां इस वंशकी शाखा नौमी शताब्दीके अनुमान बस गई–उनके सात राजा हुए, सातवें राजा जयचंदको मुहम्मदगोरीने सन् ११९४में हरा दिया। वह गंगामें डूब गया। इसका पोता स्याहजी सन् १२१२में राजपूतानामें आकर बसा उसीसे यह राठौरवंशी जोधपुरके राजा हैं।

जोधपुर गजेटियर सन् १९०९ से विशेष इतिहास यह

मालूम हुआ कि दक्षिणमें सन् ९७३के पहले १९ राजा हो चुके थे। आठवीं शताब्दीके मध्यमें १६वें राजा दन्तीदुर्गाने चालुक्य राजा कीर्तिवर्मा द्वि०को परास्त किया। उसको हटाकर उसके चाचा कृष्ण प्रथमने राज्य किया जिसके राज्यमें एलोराका कैलाश मंदिर बनाया गया था। कृष्णके पीछे तीसरा राजा गोविन्दराज तृ० हुआ। इसने लाड़ देश (मध्य और दक्षिण गुजरात) को जीता और अपने भाईको सुपुर्द कर दिया। मालवा भी उसे दिया और आप पल्लव और कांची राज्यको जीतने गया। गोविन्दराजके पीछे अमोघवर्ष प्रथमने मान्यखेड़ (जि० हैदराबाद) में ६२ वर्ष राज्य किया। यह दिगंबर जैनधर्मका अनुयायी था He patronised Digamber sect of Jains and was follower of that creed. सन् ९७३में ध्रुवराष्ट्र कन्नोजमें आया। वहां गाहड़वाल या गहरवार नामका नया वंश स्थापित किया। इस वंशके सात राजा हुए-(१) यशोविग्रह, (२) महीचंद्र, (३) चंद्रदेव, (४) मदनपाल, (५) गोविन्दचंद्र, (६) विजयचंद्र, (७) जयचंद्र (पृथ्वीराजके समयमें)।

जोधपुरके महाजन-नौ सैकड़ा महाजन हैं जिनमें पांचमें चार भाग जैनी हैं। महाजनोंमें ओसवाल, पोरवाल, अग्रवाल, सरावगी (अर्थात् खंडेलवाल) तथा महेश्वरी हैं। उनमें सबसे अधिक ओसवाल हैं जिनकी संख्या १०७९२६ है इनमें ९८ सैकड़ा जैनी हैं।

ओसवाल जैन- ये ओसवाल लोग भिन्न२ जातिके राजपूतोंकी संतान हैं जो दूसरी शताब्दीमें जैन धर्मी हुए थे। उनका नाम ओसवाल इसलिये प्रसिद्ध है कि वे ओसा या ओसरांज नग-

रके वासी थे। इस ओसा नगरके ध्वंश अभीतक जोधपुरसे उत्तर ३९ मीलके अनुमान पाए जाते हैं। (जोधपुर गजटियर पृ० ८६) उनके मुख्य विभाग हैं-मोहनोत, भंडारी, सिंधी, लोढ़ा (इसके भी चार विभाग हैं जिनमेंसे एकको बादशाह अक्बरके खजांची टोडरमलके नामसे पुकारा जाता है) और मेहता (जिनमेंसे भंडसाली हैं जो मूलमें भारती राजपूत हैं और ओसवालोंके चौधरी कहलाते हैं)।

यहां महेश्वरी २०२८८ हैं जिनकी उत्पत्ति चौहान, परिहार और सोलंकी राजपूतोंसे है।

पोड़वाल-पाटन (गुजरात)के राजपूत हैं जहां उन्होंने ७०० वर्ष हुए जैनधर्म धारण किया था। कोईका मत है कि इनकी उत्पत्ति पुर नगरसे है जो उदयपुरके भिलवाड़ाके पास एक प्राचीन नगर है।

सरावगी-(८४ भागवाले) इनकी संख्या यहां १३१९९ है, ये ही खंडेलवाल हैं।

अग्रवाल-कुल १०३३ हैं उनकी उत्पत्ति राजा अग्रसे है जिसकी राज्यधानी अग्रोहा (पंजाब)में थी।

कुल जेनी १३७३९३ हैं जिनमें ६० सैकड़ा श्वेताम्बरी २२ सैकड़ा ढूंढ़िया व १८ सैकड़ा दिगम्बरी हैं जो कि प्राचीन हैं (Who are ancient) (सफा ९१ जोधपुर गजेटियर)

पुरातत्त्व-यह जोधपुर पुरातत्त्वमें बहुत बढ़िया है। बहुत ही प्रसिद्ध स्मारक बाली, भिनमाल, डीडवाना, जालोर, मन्दोर नादोल, नागौर, पाली, राणापुर और सादरीमें हैं।

मुख्य स्थान।

(१) बाली-जि० हुकूमत-फालना स्टेशनसे दक्षिणपूर्व ९

मील। यहांसे १० मील दक्षिण वीजापुर ग्रामके बाहर हथुन्डी या हस्तिकुंड़ी नामके एक प्राचीन नगरके अवशेष हैं, यह राठौर राजपूतोंकी सबसे पुरानी जगह थी। एक शिलालेख सन् ९९७का है जिसमें १० वीं शताब्दीके ५ राजाओंके शासनका वर्णन है। वे राजा हैं– हरिवर्मन, विदग्ध (९१६), मन्मथ (९३९) धवल और बालप्रसाद। दांतीवाड़ां, दयालना और खिनवालपर जैन मंदिर हैं।

(२) भिनमाल–जि० जसवन्तपुरा, इसको श्रीमाल या भिल्लमाल भी कहते हैं। यह आबूरोड स्टेशनसे उत्तर पश्चिम ५० मील व जोधपुरसे दक्षिण पश्चिम १०५ मील है, यह छठीसे ९ मी शताब्दीके मध्यमें गूजरोंकी प्राचीन राज्यधानी थी। यहां एक सिंहासनपर एक राजाकी पाषाणकी मूर्ति है। पुराने मंदिर हैं। एक संस्कृत लेख है जिसमें परमार और चौहान राजाओंके नाम हैं। यहांसे दक्षिण पूर्व १४ मील सुन्दर पहाड़ी है इस पर चामुन्डदेवीका पुराना मंदिर है। यहां पुराना लेख है जिसमें सोनिगरा (चौहान) राज्यके १९ राजाओंका व घटनाओंका वर्णन है। A. S. R. W. I. of 1908 से विदित हुआ कि यह श्रीमाल जैनियोंका प्राचीन स्थान है। ऐसा श्रीमाल महात्म्यमें है। यहां जाकब तालावके तटपर उत्तरमें गजनीखांकी कब्र है। इसकी पुरानी इमारतके ध्वंशोंमें एक पड़े हुए स्तम्भपर एक लेख अंकित है जिसमें लेख है वि० सं० १३३३ राज्य चाचिगदेव पारापद गच्छके पूर्ण चन्द्रसूरिके समय श्री महावीरजीकी पूजाको आश्विन वदी १४ को १३ दुम्भा व ८ विसोपाक दिये। एक पुरानी मिहरावमें एक जैन मूर्ति कित है। जाकब तलावकी

पश्चिम ८१ मील। सातलमेर ग्रामके वाहर दो मील तक ध्वंश स्थान है। यहां एक वड़ा जैन मंदिर है और ठाकुरके वंशके मृत मातोंके स्मारक हैं।

(७) रानापुर-(रैनपुर) जि० देसूरी-फालना प्टेशनसे पूर्व १४ मील व जोधपुरसे दक्षिण पूर्व ८८ मील। यहां प्रसिद्ध जैन मंदिर हैं। जो मेवाडके राणा कुम्भके समयमें १५ शताब्दीमें वना था। यह वहुत पूर्ण है। मंदिरका चबूतरा २००×२२५ फुट है। मध्यमें वड़ा मंदिर है जिसमें ४ वेदी हैं। प्रत्येकमें श्री आदिनाथ विराजमान हैं। दूसरे खनपर चार वेदी हैं। आंगनके चार कोनेपर ४ छोटे मंदिर हैं। सव तरफ २० शिखर हैं जिसको ४२० स्तम्भ आश्रय दिये हुए हैं। संगमर्मरका खुदा हुआ मान-स्तंभ द्वारपर है, उसमें लेख हैं जिनमें मेवाड़के राजाओंके नाम वापा रावलसे राणा कुंभा तक हैं।

(See J. Fergusson history of India 1838 P. 240-2).

इस मंदिरके हरएक शिखरके समुदायमें जो मध्य शिखर है वह तीन खनका ऊँचा है। जो खास द्वारके सामने है वह ३६ फुट व्यासका है उसे १६ खम्भे थांभे हुए हैं। १९०८ की पश्चिम भारतकी रिपोर्टमें है कि इस वड़े मंदिरको-जो चौमुखा मंदिर श्री आदिनाथजीका है-पोड़वाड़ महाजन धरणकने सन् १४४० में वनवाया था। दो और जैन मंदिर हैं उनमें एक श्री पार्श्वनाथजीका १४ वीं शताब्दीका है।

(८) सादरी नगर-जि. देसूरी। प्राचीन नगर जोधपुरसे दक्षिण पूर्व ८० मील। यहां वहुतसे जैन मंदिर हैं।

(९) कापरदा–जि. हकूमत। यहां एक जैन मंदिर है जो इतना ऊंचा है कि ९ मीलसे दिखता है। यह १६ वीं शताब्दीके अनुमानका है। यह जोधपुरसे दक्षिण पूर्व २२ मील है। विसालपुरसे ८ मील है।

(१०) पीपर जि. वेलारा–जोधपुरसे पूर्व ३२ मील व रैन स्टेशनसे दक्षिण पूर्व ७ मील। इस ग्रामको एक पल्लीवाल ब्राह्मण पीपाने वसाया था। यह कहावत है कि इसने सर्पको दूध पिलाया, उसने सुवर्णको पाषाण बना दिया, तब उसने सर्पकी स्मृतिमें सम्पू नामकी झील वनवाई व अपने नामसे ग्राम वसाया।

(११) वारलई–देसूरीसे उत्तर पश्चिम ४ मील। यहां सुन्दर दो जैन मंदिर हैं–एक श्री नेमिनाथजीका सन् १३८६का व दूसरा श्री आदिनाथजीका सन् १५४१ का।

(१२) दीदवाना नगर–मकराना स्टेशनसे उत्तर पश्चिम ३० मील व जोधपुर शहरसे १३० मील। यह २००० वर्ष पुराना है। प्राचीन नाम द्रुद्दाणक है। यहां खुदाई करने पर एक पाषाण मूर्ति मिली थी जिस पर सं० २५२ था। वर्तमान सतहसे नीचे २० फुट जाकर मट्टीके वर्तन मिलते हैं। यहांसे दक्षिण पूर्व दौलतपुरामें एक ताम्रपत्र संवत् ९५३का पाया गया है जो कन्नौजके महाराज राजा भोजदेवका है (Epigraphica Indica Vol. V) यहां निमककी झील है ३॥ मील × १॥ मील, जिसमें २ लाख वार्षिक आमदनी है। (सन् १९०९)।

(१३) जसवन्तपुरा–आवूरोड स्टेशनसे उत्तर पश्चिम ३० मील। पर्वतके नीचे एक नगर है इसके पश्चिममें सुन्दर पहाड़ी है। इसपर पर्वतमें कटा हुआ एक चामुंडदेवीका मंदिर है इसमें

कई शिलालेख हैं जिनमें सबसे पुराना सन् १२६२ का है. इसमें सोनिगरा या चौहान वंशके १९ राजाओंके नाम व घटनाएं हैं। यह पहाड़ी ३२८२ फुट ऊंची है। यहीं रतनपुर ग्राममें श्री पार्श्वनाथजीका जैन मंदिर सन् ११७१ का है इसमें दो लेख सन् ११९१ और १२९१ सन्के हैं।

(१४) घटियाला–जि० हुकुमत। जोधपुरसे उत्तर पश्चिम १८ मील। यह पुराना ग्राम है। यहां ध्वंश जैन मंदिर है जिसको माताजीकी साल कहते हैं। एक पाषाण पर प्राकृत भाषाका लेख है उससे विदित है कि मदोदर (मान्दोर) के परिहार या प्रतिहार वंशके राजा कक्कुकने सन् ८६१ में बनवाया था। इस वंशके राजा कन्नौज या मंडोदयके प्रतिहार वंशी राजाओंके आधीन माड़वाड़में राज्य करते थे।

(१५) ओसियान या ओसिया या उकेसा–जोधपुरसे उत्तर ३० मील यह ओसवाल महाजनोंका मूल स्थान है। यहां एक जैन मंदिर है जिसमें एक विशाल मूर्ति श्री महावीर स्वामीकी है। यह मंदिर मूलमें सन् ७८३के करीब परिहार राजा वत्सराजके समयमें बनाया गया था। इसके उत्तर पूर्व मानस्तंभ है जिसमें सन् ८९५ है। सन् १९०७ की पश्चिम भारतकी प्रोग्रेस रिपोर्टसे विदित है कि यह तेवरीसे उत्तर १४ मील है। इसका पूर्वनाम मेलपुर पट्टन था। ऊपर कहे हुए प्राचीन मंदिरको लेकर यहां १२ मंदिर हैं। हेमाचार्यके शिष्य रत्नप्रभाचार्यने यहांके राजा और प्रजा सबको जैनी बना लिया था ऐसा ही ओसवाल लोग व ब्राह्मण कहते हैं।

श्रीजिनसेनकृत हरिवंशपुराणमें प्रतिहारराजा वत्सराजका कथन है (सन् ७८३–८४)।

(१६) वारमेर–जि० मैलानी–जोधपुर शहरसे दक्षिण पश्चिम १३० मील। यहांसे करीव ४ मील उत्तर पश्चिम जूना वगरमेर नगरके ध्वंश हैं। २ मील दक्षिण जाकर तीन पुराने जैन मंदिर हैं। सवसे वड़े मंदिरजीके एक स्तंभपर एक लेख सन् १२९५ का है जो कहता है कि उस समय वाहड़मेरुमें महाराजकुल सामन्तसिंहदेव राज्य करते थे। एक दूसरा लेख संवत् १३५६का है, श्री आदिनाथ भगवानका नाम है। यह जूना वारमेर हतमासे दक्षिण पूर्व १२ मील है।

(१७) मेरत नगर–मेरतरोड स्टेशनके पास जोधपुरसे उत्तर पूर्व ७३ मील। इसको जोधाके चौथे पुत्र दूदाने १४८८ के करीव वसाया था। इसके उत्तर पूर्व फालोदी ग्राममें सुन्दर और ऊंचा जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथका है। वार्षिक मेला होता है।

(१८) पालीनगर–(मारवाड़ पाली) जोधपुर रेलवेपर बांदी नदीके तटपर। जोधपुर नगरसे दक्षिण ४९ मील। यहां एक विशाल जैन मंदिर है जिसको नौलखा कहते हैं। यह अपने वड़े आकार, सुन्दर खुदाई काम व क़िलेके समान दृढ़ताके लिये प्रसिद्ध है। इसमें वहुतसा काम चारों तरफ वना है जिसमें भीतरसे ही जाया जासक्ता है, केवल वाहर एक ही द्वार है जो ३ फुट चौड़ा भी नहीं है। भीतर आंगनमें एक मसजिद भी है जो शायद इस लिये बनाई हो कि यहां मुसलमान लोग ध्वंश न कर सकें। किसी समयमें पाली एक वडा नगर था। यहांके ब्राह्मणोंको पल्लीवाल कहते हैं। यहां

द्वारमें दो तीन लेख हैं इसमें चाहमान राजा सामंतसिंहका नाम है। जोधपुरमें मुंशी देवीप्रसादके घरमें एक पाषाणका पहिया है उसमें एक बड़ा लेख है जिसमें हथुंडीका नाम हस्तीकुंडी आता है। इसमें राष्ट्रकूट वंशजोंके नाम हैं, १० वीं शताब्दीमें यह राष्ट्रकूटोंकी राज्यधानी थी। हस्तिकुंडया गच्छके जैनाचार्योंकी नामावली दी है। (J. B. A. S. Vol. LXII P. I. P. 309) इस लेखका पाषाण वीजापुर (वलीगोदवाड़में) ग्रामसे दक्षिण ३ मील एक जैन मंदिरके द्वारके पास लगा हुआ था। यह पुराने हस्तिकुंडके खंडहरोंमें पाया गया और वीजापुरकी जैनधर्म-शालामें लाया गया। इसमें ६२ लाइन संस्कृतकी हैं। पहले ४१ श्लोककी प्रशस्ति सूर्याचार्यकृत है जो वि० सं० १०५३ (९९७ ई०) माघ सुदी १३ को रची गई थी। इसमें है कि धवलके राज्यमें हस्तिकुंडिकामें शांतिभद्र या शांत्याचार्यने श्री ऋषभदेवकी प्रतिष्ठा की और उस मंदिरमें स्थापित की जिसको धवलराजाके बाबा विदग्धने यहां बनवाया था। लाईन् १से ६ में वंशावली दी है। लाइन २३से ३२ तक दूसरे लेखमें उसी मंदिरके, धवलके पिता और बाबाद्वारा भूमिदानका वर्णन है। इसमें वंशावली दी है--राजा हरिवर्मनके पुत्र विदग्ध राष्ट्रकूटवंशी उनके पुत्र मम्मट बलभद्र मुनिकी कृपासे सं० ९७३में विदग्ध राजाने दान किया। सं० ९९६में मम्मटने उसीको बढ़ादिया। धवल मम्मटका पुत्र था। धवल राज्यका वर्णन पहले लेखमें लाइन १० से १२में है कि सं० १०५३में उसका सम्बन्ध राजा मुंजराज, दुर्लभराज, मूलराज और धरणी वराहसे था। यह मुंजराज मालवाका राजा था, इसको वाक्पति मुंज भी

कहते थे। मुंजराजने मेवाड़ या मेड़ापातापर हमला किया था तव मेवाड़के राजाको छवलने मदद दी थी। इस छवलने महेन्द्रराजको भी मदद दी थी जव उसपर दुर्लभराजने हमला किया था जो शायद हर्षके लेखके अलसार चाहमान विग्रहराजका भाई था। इसने धरणीवराहको भी मदद दी थी जव उसपर मूलराजने हमला किया था। यह चालुक्य मूलराज है जिसका सवसे अन्तका लेख वि० सं० १०३१का है।

माड़वाड़ी राठौड़ोंमें हथुंडी वहुत प्रसिद्ध जगह है। यह राठौड़ हस्तिकुंडके राष्ट्रकूटोंके वंशज हो सक्ते हैं।

(२४) सेवादी—वीजापुरसे उत्तर पूर्व ६ मील-यहां श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर है, कुछ मूर्तियां जैनाचार्योंकी हैं उनके आसनपर वि० सं० १२४९ संदेरक गच्छ है।

मंदिरके द्वारपर कई लेख हैं—(१)वि० सं० ११६७ चाहमान राजा अश्वराज पुत्र कटुक—धर्मनाथ पूजार्थ।

(२) वि० सं० ११७२ शांतिनाथ पूजार्थ कटुकराज द्वारा ८ द्रम्माका दान।

(३) वि० सं० १२१३—नडुलके दंडनायक वेजाद्वारा।

(२५) घनेरवा—सेवादीसे उत्तर पूर्व ६ मील—पहाड़ीके नीचे श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर ११वीं शताव्दीका है।

(२६) वरकाना—जि० देसूरी—यहां श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर १६वीं शताव्दीका है।

(२७) संदेरवा—यह यशोभद्रसूरि द्वारा स्थापित संद्रक जैन गच्छका मूल स्थान है। यहां श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर है

जिसके द्वारपर एक लेख है कि सं० १२२१ माघ वदी २ को केल्हणदेव राजाकी माता आणलदेवीने राजाकी सम्पत्तिमेंसे श्री महावीरस्वामीकी पूजाके लिये दान किया था। यह राष्ट्रकूट वंशी सहुलाकी पुत्री थी। सभामंडपके खंभे पर ४ लेख हैं—१ है सं० १२३६ कार्तिक वदी २ बुधे कल्हणदेवके राज्यमें थंथाके पुत्र रल्हाका और पल्हाने श्री पार्श्वनाथजीके लिये दान किया।

(२८) कोरता—संदेरवासे दक्षिण पश्चिम १६ मील। यहां तीन जैन मंदिर हैं जो १४ वीं शताब्दीके हैं।

(२९) जालोर—नगर जि० जालोर। जोधपुरसे दक्षिण ८० मील। यहां एक किला है उसमें तोपखाना तथा मसजिद है जो जैन और हिन्दू मंदिरोंके ध्वंशोंसे बनाई गई है। यहां बहुतसे लेख हैं व तीन जैन मंदिर श्री आदिनाथ, महावीर व पार्श्वनाथके हैं जो इनके लेखोंसे प्रगट है। वे लेख हैं—

(१) सं० १२३९ चाहमान वंशी कीर्तिपालके पुत्र समरसिंहके राज्यमें आदिनाथका मंदिर श्रीमाल वनिया यशोवीरने बनवाया। (२) सं० १२२१में श्री पार्श्वनाथके मंदिरमें चालुक्य राजा कुमारपालने जवालीपुर (जालोर) के कंचनगिरिके किलेपर श्री हेमसूरिकी आज्ञासे कुवेरविहार बनवाया। (३) सं० १२४२ चाहमान वंशी समरसिंहदेवकी आज्ञासे यशोवीर भंडारीने मंदिरका जीर्णोद्धार किया। (४) सं० १२५६ श्री पार्श्वनाथ मंदिरके तोरण और ध्वजाकी प्रतिष्ठा पूर्णदेवाचार्यने की। (५) एक लेख सं० ११७४ परमार राजा विशालके समयका है। किला ८०० गजसे ४०० गज है। यहां दो जैन मंदिर और हैं एक सं० १६८२

में जयमल्लने बनवाया, इसमें विशाल आकारकी एक कुन्थुनाथजीकी मूर्ति है इसको विजयदेवसूरिकी आज्ञासे सामीदारक ओसवालने सं० १६८४में प्रतिष्ठा कराई। दूसरे जैन मंदिरमें तीन विशाल मूर्तियें श्री महावीर, चंद्रप्रभु और कुंथुनाथजीकी हैं, इनपर लम्बा लेख है--प्रतिष्टाकारक मुहनोत्र गोत्रकी वृहद् शाषाके जयमल्ल ओसवाल सं० १६८१ राठोड़ महाराज गजसिंहके राज्यमें।

(३०) केकिंद--मेरतासे दक्षिण पश्चिम १४ मील शिव मंदिरके पास एक जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथका है। इसके खंभेपर लेख है--सं० १६६९ राठौड़वंशी मल्लदेवके परपोते उदयसिंह। इनके पोते सारसिंहके पुत्र गजसिंहके राज्यमें जोगा ओसवाल और उसके पोते नापीने सकुटुम्ब सं० १६९९में श्री उज्जयंत और सेत्रुञ्जयकी यात्रा की व सं० १६६४में अर्बुदगिरी (आवू), राणापुर (सादोदीसे दक्षिण ६ मील) नारदपुरी (नादोल जि० देसूरी) व शिवपुरी (सिरोही) की यात्रा की व मूर्तियोंकी प्रतिष्ठा विजयदेवसूरिने कराई। मूल मंदिरके सम्बन्धमें एक छोटा लेख एक मूर्तिके आसनपर है सं० १२३० आषाढ़ सुदी ९ किष्किन्धा (केकिंद) में (सु)विधिकी मूर्त्ति स्थापित की।

(३१) वारलू--वागोदियासे उत्तर ४ मील यहां १३ वीं शताब्दीका एक श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर है।

(३२) ऊनोतरा--वारलूसे पश्चिम ४ मील। यहां भी १३ वीं शताब्दीका एक जैन मंदिर है।

(३३) सुरपुरा--वारलूसे उत्तर पूर्व ३ मील। यहां श्री नेमिनाथका जैन मंदिर है। लेख १२३९का है।

१६०६२ वर्गमील जगह है जिसमें एक बड़ा भारतीय रेतीला जंगल है। इसका राजा कृष्णवंशी यदुवंशी है, सालिवाहनका पोता भाटी जादों बहुत वीर था व प्रसिद्ध हुआ है। जैसवाल रावलने जैसलमेर सन् ११५६में बसाया था।

यहां विरसिलपुरका किला दूसरी शताब्दीका व तनातका किला ८वीं शताब्दीका है।

(१) जैसलमेर नगर–बार्मेर स्टेशनसे ९० मील है। यहां २३२ जैनी हैं। पहाड़ीपर किला है, किलेके भीतर ८ जैन मंदिर हैं, जो बहुत सुन्दर हैं व इनमें अच्छी खुदाई है, इनमें कई मंदिर १४०० वर्षके पुराने हैं। श्री पार्श्वनाथजीका मंदिर बहुत ही बढ़िया है जिसको जैसिंह चोलाशाहने सन १३३२में बनवाया था। यहां प्राचीन जैन शास्त्रोंके भंडार हैं जिनकी अच्छी तरह खोज नहीं की गई है।

(२) लोडरवा–जैसलमेरसे १० मील। यहां एक जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथजीका १००० वर्षके करीब प्राचीन है।

---

(६) सिरोही राज्य।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है–उत्तर पश्चिम जोधपुर; दक्षिणमें पालनपुर, दांता, ईडर; पूर्वमें उदयपुर, आबू पहाड़ व चंद्रावतीका प्राचीन नगर। यहां १९६४ वर्गमील स्थान है। पिंडवाराके पास वसन्तगढ नामका पुराना किला है इसमें राजा चर्मलाटका लेख सन् ६२९ का है। इस राज्यमें ११ सैकड़ा जेनी हैं कुल संख्या १७२२६ (१९०१ के अनुसार) है।

(१) नांदिया–पिंडवारासे पश्चिम ९ मील। यहां एक वहुत सुरक्षित जैन मंदिर श्री महावीर स्वामीका ९०० वर्षका पुराना है। वाहरकी भीतमें लेख सन् १०७३का है।

(२) झारोली–ग्राम सिरोहीसे पूर्व १४ मील व पिंडवारासे २ मील। यहां श्री शांतिनाथका जैन मंदिर है जिसके स्तम्भ व मिहराव आवूके विमलशाहके मंदिरसे मुकावला करते हैं। एक श्री रिषभदेवकी मूर्तिपर सन् ११७९का लेख है प्रतिष्ठाकारक देवचन्द्रसूरि हैं। इस मंदिरमें एक शिलालेख है जिसमें परमार राजा धारावर्ष सं० १२५५ है। यह मूलमें श्री महावीर मंदिर था। धारावर्षकी राना श्रृंगार देवीने कुछ भूमि दान की थी। यह श्रृंगारदेवी नाडोलके चौहान राजा केल्हणदेवकी पुत्री थी।

(३) मीरपुर–सिरोहीसे दक्षिण पश्चिम ९ मील। यहां गोडीनाथके नामसे एक जैन मंदिर १४वीं शताब्दीका है। इसके पास तीन नए जैन मंदिर हैं जिनमें कुछ मूर्तियां पुरानी हैं उनमें तीनपर सं० ११९९ व दोपर १२८९ है। ये दूसरे मंदिरसे लाई गई हैं।

(४) मुंगथल–खराड़ीसे दक्षिण पश्चिम ५ मील। यहां १५ वीं शताब्दीका जैन मंदिर है। जो श्री महावीर स्वामीका है, खंभोंपर लेख है। सवसे पुराना है सं० १२१६ वैसाख वदी ९ सोमे, यह कहता है कि वीसलने जासावाहुदेवीकी स्मृतिमें एक स्तंभ वनवाया। दो और लेख हैं–१ सं० १४२६ वैसाख सुदी ८ रवौ श्रीपाल पोड़वाड़ने कुछ जीर्णोद्धार किया। दूसरा कहता है कि नन्नाचार्यकी संतानमें कक्कसूरिके पट्टमें सत्यदेवसूरिने मूर्ति

स्थापित की। आबूके मंदिरके लेख नं० २ में इस स्थानको मंद-स्थल लिखा हैं।

(५) पतनारायण-मुंगथलसे उत्तर पश्चिम ६ मील। यहां पतनारायणका गिरवार मंदिर है जिसमें द्वार पुराना है जो जैन मंदिरसे लाया गया है।

(६) ओर-कीवरली ष्टे० से ४ मील दक्षिण व खराड़ीसे उत्तर पूर्व ३ मील। इसका प्राचीन नाम ओद ग्राम है। यहां श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर है। लेख संवत् १२४२ है उसीमें नाम ओद ग्राम है व महावीर स्वामी मंदिर लिखा है। यहां विड-लाजीके मंदिरके द्वारपर जैन मूर्ति है। यह द्वार जैन मंदिरका है जो चंद्रावतीसे लाया गया।

(७) नीतोरा-राहड़े ष्टे० से उत्तर पश्चिम ४ मील है। यहां श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर है। एक प्रतिमा संगमर्मरकी हैं जिसके आसनपर चक्रका चिह्न है। इस प्रतिमाको बाबाजी कहते हैं। यहां क्षेत्रपालकी मूर्तिके ऊपर एक बैठे आसन मूर्ति है इसपर लेख है सं० १४९१ वैसाख सुदी २ गुरु दिने यक्ष बाबा मूर्ति।

(८) कोजरा-नीतोरासे उत्तरपूर्व १० मील। यहां १२वीं शताब्दीका संभवनाथजीका जैन मंदिर है। खंभेपर लेख है। सं० १२२४ श्रावण वदी ४ सोमे श्री पार्श्वनाथदेव चैत राणाराव। यह मूलमें श्री पार्श्वनाथ मंदिर था।

(९) वामनवारजी-कोजरासे १० मील व पिंडवारा ष्टे०से ४ मील। यहां मुख्य मंदिर श्री महावीरजीका १४वीं या १५वीं शताब्दीका है जिसको वामनवारजी कहते हैं। एक छोटे मंदिरपर

लेख है सं० १५१९ प्राग्वाट (पोडवाड) वनिया वीरवातकका (वीरवाड़ा यहांसे १ मील)।

(१०) वलदा—वामनवारजीसे ६ मील। यहां १४वीं वा १५वीं शताब्दीका जैन मंदिर है। मुख्य वेदीमें श्री महावीरस्वामीकी मूर्ति है सं० १६९७ है। मंदिर मूर्तिसे प्राचीन है। द्वारके आलेपर एक लेख है सं० १४८३ जेठ सुदी ७ गुणभद्रने अपने बुजुर्ग वलदेवने वनाए हुए मंदिरका जीर्णोद्धार किया।

(११) कलार—सिरोहीसे उत्तरपूर्व ९ मील। यहां आदिनाथका मंदिर १५वीं शताब्दीका है १४ स्वप्न वने हैं। महाराणी सोई हुई हैं। लिखा है-महाराणी उसालादेवी चतुर्दशस्वप्नानि पश्यति।'

(१२) पालदी—सिरोहीसे उत्तरपूर्व १० मील। यहां सात स्तम्भोंपर लेख हैं सं० १२४८ आपाढ़ वदी १ शुक्र व दीवालके वाहर एक पापाणपर है सं० १२४९ माघ सुदी १० गुरु महाराज श्री केल्हणदेव और उसके पुत्र जयलसिंहदेव।

(१३) वागिन—पालोदीसे १ मील। २ जैन मंदिर श्री आदिनाथजीके हैं। एक वड़ा १२ या १३ शताब्दीका है। दो खंभोंपर लेख सं० १२६४के हैं। मुख्य मंदिरके द्वारपर है सं० १३५९ सामंतसिंहदेवके राज्यमें वाघसेनका दान हुआ।

(१४) उथमन—पालोदीके उत्तरपूर्व १॥ मील। यहां जैन मंदिर है, जिसमें १ सुन्दर संगमर्मरकी मूर्ति है। यहां आलेमें एक लेख सं० १२५१का है कि धनासवके पुत्र देवधरने अपनी स्त्री धारामतीके द्वारा श्री पार्श्वनाथके मंदिरको दान कराया।

(१५) लास-पालोदीसे उत्तर पश्चिम १० मील यहां २ जैन मंदिर हैं एक श्री आदिनाथजीका है ।

(१६) जावल-यहां १४वीं शताब्दीका श्री महावीरजीका जैन मंदिर है ।

(१७) कातन्द्री-मुख्य मंदिरमें एक लेख है कि वि० सं० १३८९ फागुण सुदी ८ सोमे सर्व संघने समाधिमरण किया । नाम दिये हुए हैं ।

(१८) उद्रत-धन्धापुरसे २ मील । यहां एक जैन मंदिर है ।

(१९) जीरावल-रेवाधरसे उत्तर पश्चिम ९ मील । पर्वतके नीचे जैन मंदिर है जो नेमिनाथका प्रसिद्ध है । यह मूलमें पार्श्वनाथ मंदिर था । पुराना लेख सं० १४२१का व पिछला सं० १४८३ का ओसवाल बनिया विशालनगर व कल्वनगर ।

(२०) वरमन-देवधर और मनधारके मध्य सुकली नदीके पश्चिम एक प्राचीन नगर था । ग्रामके दक्षिण श्रीमहावीरस्वामीका जैन मंदिर सं० १२४२ का है ।

(२१) सिरोही या सिरणवा-पिंडवाड़ा ष्टे० से १६ मील महाराव सैंसमलने सन् १४२५ में वसाया । जैन मंदिर देरासरीके नामसे प्रसिद्ध है । चौमुखजीका मंदिर मुख्य है । जो वि० सं० १६३४में बना था ।

(२२) पिंडवाड़ा-यहां श्री महावीर स्वामीका जैन मंदिर सं० १४६९ का है ।

(२३) अजारी-पिंडवाड़ासे ३ मील दक्षिण । श्री महावीर स्वामीका जैन मंदिर । एक सरस्वतीकी मूर्तिके नीचे सं० १२६९ है ।

(२४) वसंतगढ़—अजारीसे ३ मील दक्षिण। यहां टूटे हुए जैन मंदिर हैं—एक तहखानेमें मूर्तियां मिलीं। एकपर लेख है सं० १५०७ राणा श्री कुंभकरण राज्ये वसंतपुर चैत्ये। यहां कुछ धातुकी मूर्तियां निकली थीं जो पिंडवाड़ाके जैन मंदिरमें हैं, एकपर सं० ७४४ है।

(२५) वासा—रोहड़ा ष्टे०से १॥ मील उत्तरपूर्व। यहां जगदीश नामका शिवालय है इसपर एक जैन मूर्ति है। यह पहले जैन मंदिर था।

(२६) कालागरा—वासासे २ मील। यहां श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर था, अब पता नहीं है। एक लेख सं० १३००का मिला है। उस समय चंद्रावतीका राजा आल्हणदेव था।

(२७) कायद्रा—कीवरली स्टे०से ४ मील उत्तर। आबूके निकट। यहां प्राचीन जैन मंदिर है, चौतरफ जिनालय हैं। एकके ऊपर सं० १०९१ का लेख है। एक और प्राचीन जैन मंदिर था जिसके पत्थर रोहेड़ाके जैन मंदिरमें लगे हैं।

(२८) चंद्रावती-आबूरोड स्टे०से ४ मील दक्षिण। यह प्राचीन नगर था, दूर२ तक खंडहर हैं। यह परमार राजाओंकी राज्यधानी था। आबूके दिलवाड़ेके प्रसिद्ध नेमनाथ मंदिरके बनानेवाले मंत्री वस्तुपालकी स्त्री अनुपम देवी यहांके पोड़वाड़ महाजन गागाके पुत्र धरणिगकी पुत्री थी।

(२९) गिरवर—मधुसूदनसे करीब ४ मील पश्चिम। मूंगथलीसे १ मील मधुसूदन है। यहां टूटा हुआ जैन मंदिर है। विष्णु मंदिरका द्वार चन्द्रावतीसे लाया गया है, ऊपर जैन मूर्ति है।

(३०) दताणी—गिरवरसे ६ मील उत्तरपश्चिम । यहां १ जैन मंदिर है ।

(३१) हणाद्री—आबूके पश्चिम पर्वतसे ११ मील । वस्तुपालके मंदिरके शिलालेखोंमें सं० १२८७में इस गांवका नाम हंडाउद्रा आया है । यहां १ जैन मंदिर है ।

(३२) सणापुर—हणाद्रेसे १२ मील उत्तरपूर्व, यहां जैन मंदिर १२वीं शताब्दीका है ।

(३३) पालड़ीगांव—सिरोहीसे १२ मील उत्तरपूर्व । जैन मंदिर है उसमें चौहान राजा केल्हणदेवके कुंवर जैतसिंहका लेख सं० १२३९का है ।

(३४) वागीण—पालड़ीसे २ मील । जैन मंदिरमें लेख चौहान रा० सामंतसिंह सं० १३५९ ।

(३५) सीवरा—सिरोहीसे १२ मील पूर्व झालोहीसे २मील उत्तर । श्री शांतिनाथका जैन मंदिर, लेख सं० १२८९ देवड़ा विजयसिंह ।

(३६) आबू पर्वत—आरावला (अर्वली) सिरोहीसे दक्षिण पूर्व । ऊंचाई ५६५० फुट व समान भूमिसे ४००० फुट ऊंचा, ऊपर लम्बा १२ मील, चौड़ा करीब ३ मील । आबूरोड़ स्टेशनसे १८ मील सड़क ऊपर है । यहां दिलवाड़ामें श्री जैन प्रसिद्ध मंदिर श्री आदिनाथ और नेमनाथके हैं । इनमें पुराना व सुन्दर विमलशाह पोड़वाड़का बनवाया विमलवसही नामका श्री आदिनाथ मंदिर है जो वि० सं० १०८८में समाप्त हुआ था । उस समय आबूपर परमार वंशका राजा धंधुक राज्य करता था । यह

गुजरातके सोलंकी राजा भीमदेवका सामंत था। कुछ अनवन होनेसे धंधुक रूठकर मालवाके राजा भोजके पास चला गया तब भीमदेवने विमलशाह जैनको दंडनायक (सेनापति) नियत कर आबू भेजा, इसने धंधुकको बुलाकर उसका मेल भीमदेवसे करा दिया। तब धंधुकसे दिलवाड़ाकी भूमि लेकर विमलशाहने यह जिन मंदिर बनवाया। इसमें मुख्य मूर्ति श्री रिषभदेवकी है जिसके दोनों तरफ कार्योत्सर्ग मूर्तियें हैं। सामने हस्तिशाला है, वहीं विमलशाहकी पाषाण मूर्ति अश्वारूढ़ विराजमान है। हस्तिशालामें दस हाथी हैं-जिनमें ६ हाथियोंको सं० १२०५में फागुण वदी १०को नेढ़क, आनंदक, पृथ्वीपाल, धीरक, लहरक, मीनकने बनवाया था जो महामात्य थे। एक हाथीको परमार ठाकुर जगदेवने, १एकको महामात्य धनपालने वि० सं० १२३७ आषाढ़ सुदी ८को बनवाया। १को महमात्त्य धवलकने बनवाया। (नोट--इसमें ९ हाथीके बननेका वर्णन है।) हस्तिशालाके बाहर परमारोंसे आबूका राज्य छीननेवाले चौहान महाराव लुंढा (लुंभा) के दो लेख वि० सं० १३७२ और १३७३के हैं।

इस मंदिरके १ भागको मुसल्मानोंने तोड़ा था तब लल्ल और बीडाड साहुकारोंने सं० १३७८ चौहान महाराणा तेजसिंहके राज्यमें जीर्णोद्धार कराया था और तब एक ऋषभदेवकी मूर्ति स्थापित की। दीवारमें एक लेख सं० १३५० माघ सुदी १ बघेल (सोलंकी) राजा सारंगदेवके समयका है।

(२) लूणवसही--यह नेमनाथका मंदिर है। इसको वस्तुपालका और तेजपाल मंदिर भी कहते हैं। ये दोनों वस्तुपाल

तेजपाल अनहिलवाड़ पाटनके पोड़वाड़ महाजन अश्वराज (आसराज) के पुत्र थे। धोलकाके सोलंकी राणा (विघेलवंशी) वीरधवलके मंत्री थे। तेजपालने अपने पुत्र लूणसिंह व स्त्री अनुपम देवीके हितार्थ करोड़ों रुपये लगाकर वि० सं० १२८७ में यह मंदिर बनवाया। इन मंदिरोंकी छतोंमें जैन कथाओंके भी चित्र हैं। इस नेमनाथ मंदिरोंमें दो बड़े शिलालेख हैं। एक ७४ श्लोकोंका काव्य धोलकाके राणा वीरधवलके पुरोहित तथा कीर्तिकौमदी, सुखोत्सव आदि काव्योंके कर्ता कवि सोमेश्वर रचित है। इसमें वस्तुपाल तेजपालके देशका वर्णन, अर्णो राजासे वीरधवल तक वघेल राजाओंकी नामावली, आबूके परमार राजाओंका हाल व मंदिरकी प्रशंसा है।

दूसरा लेख गद्यमें मंदिरके वार्षिकोत्सव आदिके वर्णनमें है। इसमें अनेक ग्रामोंके महाजनोंके नाम हैं जो प्रतिवर्ष उत्सव करते थे। ५२ जिनालय और हैं। यहां शिल्पके नमूने दो सुन्दर आले हैं इनको देवराणी जिठाणीके आले कहते हैं। उनको तेजपालने अपनी दूसरी स्त्री सुहड़ादेवीके श्रेयके लिये बनवाया था। यह सुहड़ादेवी पाटनके मोड़ महाजन ठाकुर (ठक्कुर) जाल्हणके पुत्र ठाकुर आसाकी पुत्री थी। ऐसा उनपर खुदे हुए लेखोंसे प्रगट है—उस समय गुजरातमें पोड़वाड़ और मोढ़ जातिके महाजनोंमें परस्पर विवाह होता था। दोनों आलोंपर सदृश नकल है। एककी नकल इस भांति है:—

“ॐ संवत १२९७ वर्षे वैशाख सुदी १४ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय चंडप्रचंड प्रसाद महं (महंत) श्री सोमान्वये महं श्री असराज

सुतमहं श्री तेजःपालेन श्रीमत्पत्तन वास्तव्य मोढ़ जातीय ठ० जाल्हण सुत ठ० आससुतायाः ठकुराज्ञी संतोषाकुक्षि संभूताया महं श्री तेजःपाल द्वितीय भार्या मह श्री सुहड़ादेव्याः श्रेयोर्थं.... (आगेका भाग टूट गया है) ।

इस मंदिरकी हस्तिशालामें संगमर्मरकी १० हथनियां हैं जिनपर १० सवारोंकी मूर्तियां थीं, अब नहीं रही हैं। इस संबंधी वंशवृक्ष नीचे प्रकार है—

चंडप
|
चंडीप्रसाद
|
सोमसिंह
|
अश्वराज
|
लूणिक — मल्लदेव — वस्तुपाल — तेजःपाल

वस्तुपाल
|
जैत्रसिंह

तेजःपाल
|
लवणसिंह

इन हथनियोंके पीछेकी पूर्व भीतिमें १० आले हैं उनमें इन १० पुरुषोंकी स्त्रियोंकी मूर्तियें पत्थरकी खड़ी हैं, हाथोंमें पुष्पमाला हैं। वस्तुपालके सिरपर पाषाणका छत्र है। मूर्तिके नीचे प्रत्येक पुरुष व स्त्रीका नाम है। पहले आलेमें चार मूर्तियां खड़ी हैं वे आचार्य उदयसेन, विजयसेन हैं व तीसरी मूर्ति चंडप व चौथी चंडपकी स्त्री चामलदेवीकी है। उदयसेन विजयसेनके शिष्य थे। यह नागेन्द्रगच्छके साधु व वस्तुपालके कुल गुरु थे। मंदिरजीकी

प्रतिष्ठा विजयसेन हीने कराई थी। इस अपूर्व मंदिरको शोभन नाम शिल्पीने बनवाया था। मुसल्मानोंने इसको भी तोड़ा तब पेथड़ संघपतिने जीर्णोद्धार कराया। लेख स्तम्भपर है संवत नहीं है।

वस्तुपालके मंदिरसे थोड़े अंतरपर भीमासाह (या भैंसासाह) का बनवाया हुआ मंदिर है। इसमें १०८ मन तोलकी सर्व धातुकी श्री आदिनाथकी मूर्ति है जो वि०सं० १५२५ फागुण सुदी १को गुर्जेल श्रीमाल जातिके मंत्री मंडनके-पुत्र पुत्री सुन्दर तथा गंदाने स्थापित की। इसके सिवाय दो मंदिर श्वे० व दो मंदिर दिगंबरी हैं। आबूके मंदिर संगमर्मरकी अपूर्व खुदाईके हैं, करोड़ों रुपयोंकी लागतके हैं। जगतभरमें प्रसिद्ध हैं।

(३७) अचलगढ़—दिलवाड़ासे ५ मील उत्तरपूर्व। यहां सोलंकी राजा कुमारपाल कृत शांतिनाथका जैन मंदिर है उसमें तीन मूर्तियां हैं। एक पर वि० सं० १३०२ है। पर्वतपर चढ़के कुंथुनाथका जैन मंदिर है। इसमें पीतलधातुकी मूर्ति सं० १५२७की है और ऊपर जाके पार्श्वनाथ, नेमनाथ व आदिनाथके मंदिर हैं। आदिनाथका मंदिर चौमुखा है व प्रसिद्ध है नीचे व ऊपर चार२ पीतलकी बड़ी मूर्तियां हैं। कुल १४ मूर्तियां हैं तोल १४४४ मन है। इनमें सबसे पुरानी मूर्ति मेवाड़ राजा कुंभकर्ण (कुंभ) के समय वि० सं० १५१८की प्रतिष्ठित है।

(३८) ओरिया—अचलगढ़से २ मील उत्तर। इसे कनखल तीर्थ कहते हैं। यहां श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर है। एक ओर पार्श्वनाथ व दूसरी ओर श्री शांतिनाथ हैं।

---

(७) जैपुर राज्य--(जैपुर रेजिडेन्सी)।

इसमें राज्य जैपुर, किशनगढ़ व लावा शामिल हैं। इसकी चौहद्दी यह है—उत्तरमें बीकानेर, पंजाब; पश्चिममें जोधपुर, अजमेर; दक्षिणमें शाहपुर, उदयपुर, बुन्दी, ग्वालियर; पूर्वमें करौली, भरतपुर, अलवर। यहां १६४५६ वर्गमील स्थान है।

जैपुर राज्य—यहां १५५७९ वर्गमील जगह है। यहां रामचंद्रके वंशज कछवाहा राजपूत राज्य करते हैं। पहला राजा ग्वालियरका वज्रदामन था। इसने जैपुर राज्यको कन्नौज राज्यसे ले लिया, आप स्वतंत्र हो गया। ऐसा ग्वालियरके लेख सन् ९७७से प्रगट है। पहले आंवेरमें राज्यधानी थी, सवाई जैसिंह द्वि० आंवेरमें सन् १६९९में हुआ। इसका मरण सन् १७४३में हुआ। इसने राज्यधानी आंवेरसे जैपुरमें सन् १७२८में बदली। यह राजा वैज्ञानिक ज्ञान और कलाके लिये प्रसिद्ध था। इसने बहुतसे गणितके ग्रंथ संस्कृतमें उल्था कराए और ज्योतिषचक्रके दृश्यके मकान जैपुर, दिहली, बनारस, मथुरा, उज्जैनमें बनवाए जिसमें इसने डी० ला हाइर अंग्रेजके ज्योतिषके हिसाबको शुद्ध कर दिया। यह राजा एक अपूर्व विद्वान् था।

पुरातत्व—आंबेर, वैराट, चाटसू, दौसा, व रणथंभोरके किलेमें हैं।

यहां ७ फीसदी जैनी हैं। १९०१ में ४४६३० थे।

यहांके मुख्य स्थान

(१) आम्बेर—जैपुरसे उत्तरपूर्व ७ मील। यह बहुत प्राचीन जगह है। यहां सन् ९५४का लेख मिला है। कई जैन मंदिर हैं।

(२) वैराट—ता० वैराट—जैपुरसे उत्तरपूर्व ४२ मील। बहुत प्राचीन स्थान है। यहां महाराज अशोक (सन् ई०से २५० वर्ष पूर्व) के दो शिलालेख हैं। नगरके १ मीलकी हद्दमें बहुतसे तांवेके सिक्के मिले हैं। यहां पांच पांडव अपने परदेश भ्रमणके समय ठहरे थे। यह प्राचीन मत्स्य प्रान्तकी राज्यधानी थी। चीनी यात्री हुइनसांग यहां सन् ६१४ में आया था। यहां एक पार्श्वनाथका दि० जैन मंदिर है। यहां एक मूर्तिपर शाका १५०९ हीरविजय लिखा है।

(३) चाटसू या चाकसू—चादसू ष्टे० से २ मील प्राचीन नगर है। सन् ई० से ५७ वर्ष पहले प्रसिद्ध विक्रमादित्त्यका स्थान था। यहां तांवेकी भीत थी। इससे इसको ताम्बा नगरी कहते हैं। यहां सेसोदिया जातिके राजा राज्य करते थे।

(४) झूंझनू—शेखावाटीमें, जैपुरसे उत्तर पश्चिम ९० मील। यहां १०.०० वर्षका प्राचीन जैन मंदिर है।

(५) खंडेला—निजामत तोरावाटीमें जयपुरसे उत्तर पश्चिम ५५ मील। स० नोट—यह खंडेलवाल जातिकी उत्पत्तिका स्थान है।

(६) नरैना—निजामत सांभर। यहां दादूपन्थका स्थापक दादू अकबर बादशाहके समयमें रहता था। यह सन् १६०३में मरा है। इसका मरण स्थान यहां एक झीलके पास है। इसकी पुस्तकका नाम वाणी है।

(१) वयाना—प्राचीन नाम श्रीपथ है। दो पुराने हिन्दू मंदिर हैं जिनको मुसल्मानोंने मसजिद बना लिया है। हरएकमें संस्कृतमें शिलालेख हैं—एकमें है सन् १०४३ जादोवंशी राजा विजयपालने यहां दक्षिण पश्चिम २ मीलपर विजयगढ़का किला बनवाया जिसको विदलगढ़ किला कहते हैं। किलेमें पुराना मंदिर है उसके लाल खंभेपर एक लेख राजा विष्णुवर्द्धनका है जो सन् ३७२में समुद्रगुप्तके आधीन था। राजा विजयपाल जिसकी संतान करौलीमें राज्य करती है ११वीं शताब्दीमें महमूद गजनीके भतीजे मसूद सालारसे मारा गया। यहां जैन मंदिर हैं जिसमें नरोलीसे निकली हुई १० दिगम्बर जैन मूर्तियां विराजित हैं, ये कूप खोदते निकली थीं। वि० सं० ११९३ है। जो चिन्ह स्पष्ट हैं उनसे झलकता है कि वे ऋषभदेव, संभवनाथ, पुष्पदंत, विमलनाथ, कुंथनाथ, अरहनाथ, नेमिनाथकी मूर्तियां हैं।

(२) कामा—भरतपुरसे ३६ मील उत्तर। यहां पुराना किला है। हिंदू मूर्तियोंके बहुतसे खण्ड एक मसजिदमें हैं जिसे चौरासी खंभा कहते हैं। हरएक खंभेपर कारीगरी है। एकपर संस्कृतमें लेख है। इसमें सूरसेनोंका वर्णन है। ता० नहीं है। शायद ८वीं शताब्दीका हो। एक विष्णुके मंदिर बनानेका वर्णन है। सं० नोट—यहां जैन मंदिर है व संस्कृतका प्राचीन शास्त्र भंडार है।

---

(१३) झालावाड़ा राज्य ।

इसकी चौहद्दी यह है—उत्तर पूर्व कोटा, पश्चिम रामपुर । भानपुर, आगरा; दक्षिण पश्चिम सीतामऊ, जावरा; दक्षिण देवास, पूर्वमें धिरावा । यहां ८१० वर्गमील स्थान है ।

चंद्रावती—झालरापाटन नगरके निकट अति प्राचीन नगर चन्द्रावती है। वर्तमान नगरके दक्षिण ओर है । कहते हैं इस नगरको मालवाके राजा चन्द्रसेनने वसाया था जो अवुलफजलके कथनानुसार प्रसिद्ध विक्रमादित्य राजाके पीछे राजा हुआ था। कनिंघम साहव कहते हैं कि यहां सन् ई०से ५००से १००० वर्ष पूर्वके प्राचीन ताम्बेके सिक्के मिले हैं । चन्द्रभागा नदीके तटपर जो ध्वंश हैं उनमें सीतलेश्वर महादेवका वहुत वड़ा मंदिर सन् ६००का है। इन ध्वंसोंके उत्तर सन् १७९६में नया नगर वसाया गया। इसमें एक जैन मंदिर है जो पहले पुराने नगरमें सामिल था। सं० नोट—झालरापाटण नगरमें कई जैन मंदिर हैं व श्रीशांतिनाथ-की दर्शनीय मूर्ति व कई दि० जैन मुनियोंके समाधिस्थान हैं ।

---

[१४] बीकानेर राज्य ।

चौहद्दी है—उत्तर पश्चिम वहावलपुर; दक्षिण पश्चिम जैसलमेर, दक्षिण—माड़वाड़, दक्षिण पूर्व जैपुर शेखावाटी, पूर्वमें लाहोर-हिसार।

यहां २३८११ वर्गमील स्थान है । इसको सन् १४६५में माड़वाड़के राजा बीकाने वसाया था। यहां चार शदी जैनी हैं। कुल संख्या १९०१ में २३,४०३ थी ।

शिलालेख ।

सिहोर राज्य-(१) गटयाली-एक जैन मंदिरके स्तम्भमें-घनियाविहार नामके जैन मंदिरको मामावती नामका खेत नोनाने सं० १०८९में दान किया ।

(२) नांदिया-जैन मंदिरके स्तम्भपर इस स्तम्भको सं० १२९८में भीमने अपने पिता रौरकमणके हितार्थ स्थापित किया जो रौर पुनसिंहके पुत्र थे ।

सन् १९१२-१३ ।

झालरापाटन शहर-सात सलाकी पहाड़ीपर स्तम्भ हैं (१) समाधि स्थान सं० १०६६ नेमिदेवाचार्य और बलदेवाचार्य । (२) सं० ११६६ समाधि श्रेष्ठी पापा। (३) सं० ११७० समाधि श्रेष्ठी सांधला, (४) सं० १२९९ मुलसंघ देवसंघ (लेख अस्पष्ट)।

राज्य गंगधार-जैन मूर्तियोंपर नीचेके लेख हैं ।

(१) सं० १३३० कुम्भके पुत्र सा कादुआ द्वारा ।

(२) सं० १३५२ सा आहदके पुत्र देदा द्वारा ।

(३) सं० १५१२-श्री अभिनंदन मुर्ति भंडारी गजा द्वारा।

(४) सं० १५२४ श्रीश्रेयांसमूर्ति जयताके पुत्र श्रावक मंडन ,,

सन १९१४ भरतपुर बयाना-यादव राजा विजयपाल करौलीका एक स्तंभ मिला है । इसपर काम्पकगच्छके जैन श्वेतांबर आचार्य विष्णुसूरि और माहेश्वरसूरीके नाम हैं । सं० ११०० में माहेश्वरसूरीकी समाधि हुई ।

मेवाड-अहार-जैन मंदिरके आलेमें-जिसको नावन नैवरान कहते हैं-गुहिलराज नरवाहाके समयका अनुमा· · १० और १०३४ का लेख है ।

(६) खेड़ा—जैन मंदिरकी एक पाषाण मूर्तिपर सं० १९३१ मूलसंघ सरस्वतीगच्छ महाराज कीर्तिसिंहदेव।

(७) नौगमा—श्री अनंतनाथके दि०जैन मंदिरमें सं. १९४९ साहिलवाल जातिके साहवलिय, मूलसंघ कुंद० भ० पद्मनंदिदेवके शिष्य भ० शुभचंद्रदेवके शिष्य मंडलाचार्य धर्मकीर्ति द्वारा।

(८) नौगमा—वहीं एक पाषाण मूर्तिपर सं० १९४८ भ० जिनचंद्र मूलसंघ, जीवराज पापड़ीवाल।

(९) लक्ष्मणगढ़—जैन मंदिरमें पीतलकी मूर्ति पार्श्वनाथ सं० १९९९ साहसंग्राम भा० कनकारदे पुत्र साह लहुआ स्त्री पूंगीने, मूलसंघ भ० शुभचंद्रदेव द्वारा।

(१०) अलवर शहर—एक पाषाण जो अब एक ठाकुरके घरमें है पहले जैन मंदिरकी भीतपर था। यह लिखता है कि अलवरमें श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर योगिनीपुर (दिहली)के हीरानंदने जो सं० १६८९में अंगलपुर (आगरा) में रहते थे, ओसवालवंशीय बृहत् खरतरगच्छके जिनचंद्रसूरिके शिष्य वस्वक-रंगकलश द्वारा बनवाया।

(११) मौजीपुर—श्वे० जैन मंदिरमें सीतलनाथकी पाषाण मूर्तिपर—सं० १६९४ हाड़ोयावासी हूमड़ जाति उत्तरेश्वर गोत्र मिहता साधारणके पुत्र लाला और गलाने, मूलसंघ कुंद० सर० गच्छ बलात्कारगण भट्टारक चांदिभूषण गुरुद्वारा।

(१२) लक्ष्मणगढ़—दि० जैन मंदिर—पाषाण मूर्ति सं० १६६० खंडेलवाल साह गोत्र छाजूके पुत्र सारणमलके पुत्र गूजरने मूलसंघ नंद्याम्नाय भ० चंद्रकीर्ति द्वारा।

(६) परतापगढ़ देवलिया-श्वे० जैन मंदिरमें पार्श्वनाथकी पीतलकी मूर्ति सं० १३७३ ढंढलेश्वरावटकू नगरके श्रीमाल ठाकुर खेताकने अजितदेवसूरि द्वारा

(७) वहीं-शांतिनाथकी पीतलकी मूर्ति सं० १३९३ प्राग्वाट (पोडवाड़) ज्ञातिके व्यवहारी आल्हा भा० सुमलदेवीने।

(८) वहीं—शांतिनाथ मूर्ति सं० १३९४ वदालम्बी नगरके श्रीमाल प्रभाकने।

(९) वहीं—मूर्ति पार्श्वनाथ सं० १४९२ श्रेष्ठी करमसिंहे पंचतीर्थके पुत्र जैताकने साधु पूज्य पसचन्द्रसूरि।

(१०) वहीं—पीतलमूर्ति पार्श्व० सं० १४७९ हूमड़ श्रेष्ठी गोइन्दा भा० गौरादेवी तपागच्छ सोमसुन्दर सूरि।

(११) वहीं—पीतल मूर्ति विमलनाथ सं० १४८३ श्रीमाल ठाकुर सादाके पुत्र वेला, वरिया, मेड़ाने नागेंद्रगच्छके पदमसूरिद्वारा।

(१२) वहीं—सीतलनाथकी पीतलमूर्ति सं० १९०९ हूमड़ ठाकुर तेजाने मूलसंघ भ० सकलकीर्तिद्वारा।

(१३) वहीं—पीतल मूर्ति पद्मप्रभु सं० १९१८ श्रेष्ठी साभाके पुत्र गड़कने प्राग्वाद जाति, तपागच्छ पंथौली ग्रामके लक्ष्मीसागर सुरिद्वारा।

(१४) वहीं-पीतल मूर्ति आदिनाथ पंचकल्याणी सं० १९२१ हूमड़ श्रेष्ठी नासल मूलसंघी भ० सकलकीर्ति, भुवनकीर्ति।

(१९) परतापगढ़-साधवारा मंदिर-पीतल मूर्ति २४ जिन सं० १४४६ व्यवहारी गंगाने पीपलगच्छके गुणरत्नसूरि द्वारा।

(१६) परतापढ़-झांसदी-रिषभदेवका दि० जैन मंदिर,